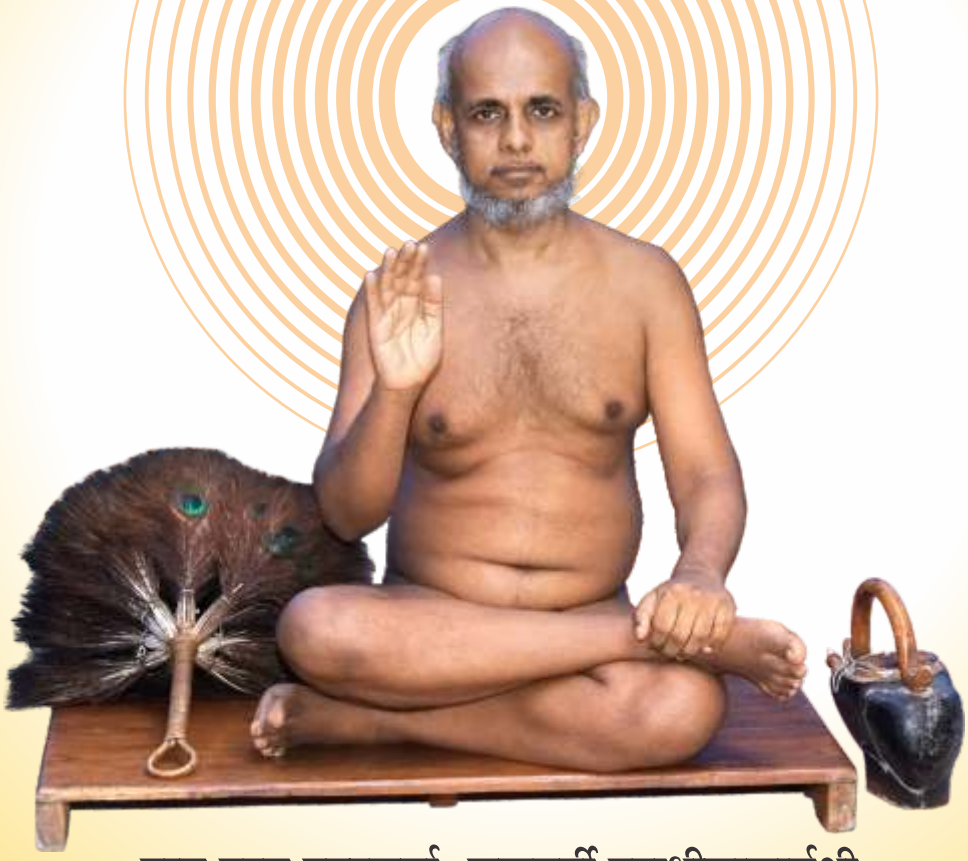

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

जैन व्रतविधान संग्रह

लेखक
प्यारेलाल जी जैन

प्रकाशक
बाबूलाल राजेन्द्रकुमार जैन, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)

(परम्परानायक)

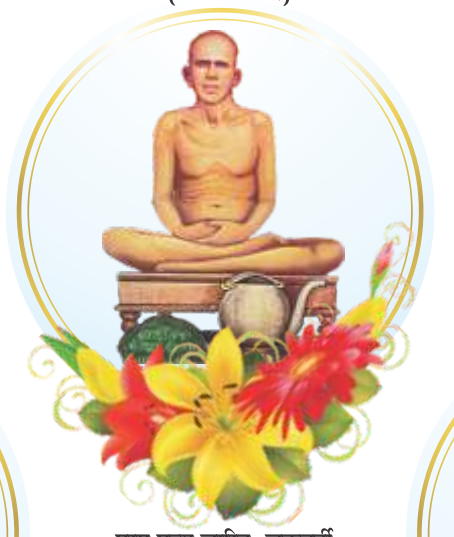

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

जैन-व्रत-विधान संग्रह

[व्रतोपयोगी आवश्यक अनेक विषयों सहित]

लेखक

चिकित्सक चूड़ामणि प० बाबूलाल जैन राजवैद्य

सचालक—श्री स्याद्वाद जैन औषधालय,

मु० पटा पो० टीकमगढ़ (विन्ध्यप्रदेश)

प्रकाशक

श्री वैद्य बाबूलाल राजेन्द्रकुमार जैन

मु० पटा, पो० टीकमगढ़ (विन्ध्यप्रदेश)

श्री वीरनिर्वाण सवत् २४७८

फरवरी १९५२

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य दो रुपये

आपने यह संग्रह महान् परिश्रम से किया। एक ही पुस्तक से व्रत-विधान सरलता से मिल सकता है। आपका परिश्रम प्रशंसनीय है।

पौष वदि नवमी
सं० २००८

आ० शु० चि०
गणेश वर्णी

श्री अभय जैन ग्रन्थालय।
नाहटों की गवाड़
बीकानेर,

समर्पण

प्रातःस्मरणीय, पूज्यपाद, विश्वकी अनुपम विभूति, आदर्श महापुरुष,
सिद्धान्त न्यायसार शास्त्रपारंगत, चारित्रमूर्ति, आर्षमार्गोपदेष्टा,
ज्ञाननिधि न्यायाचार्य पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक गणेश
प्रसादजी वर्णी के करकमलों में उन्हीं के प्रवचनों
द्वारा प्रबोधित होकर यह 'जैन व्रत विधान
संग्रह' लेखक द्वारा श्रद्धा और भक्ति
के साथ सादर समर्पित है

दो शब्द

इस पुस्तक के प्रकाश में आने पर धार्मिक अनुष्ठान सम्बन्धी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक की कमी की पूर्ति होगी, ऐसा मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ। पुस्तक के लेखक ज्योतिषरत्न, प्रतिष्ठाचार्य, राजवैद्य भिषग्वर प० वारेलाल जी समाज के एक सुयोग्य अनुभवी विद्वान् हैं। यदि ये प्रकाशपूर्ण क्षेत्र में होते तो मैं समझता हूँ कि इनके द्वारा इससे भी अधिक समाज, धर्म और साहित्य की सेवा होती। ये एक छिपे हुए प्रतिभाशाली विद्वत्‌रत्न हैं।

भावना है कि समाज इनकी इस पुस्तक से खूब लाभ उठाये।

२३।१२।५१

दरबारीलाल जैन कोठिया
न्यायाचार्य
मुख्याध्यापक—श्री समन्तभद्र विद्यालय, देहली

आद्य वक्तव्य

चतुर्गति रूप संसार में एक मनुष्य पर्याय ही जीव को सुख देनेवाली है। अच्छे से अच्छे जो कुछ भी काम यह जीव करना चाहे इसी पर्याय में कर सकता है। संसार में जितने भी श्रेष्ठ व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने लोकातिशायी कार्य किए हैं, कर रहे हैं और भविष्य में करेंगे वे सब मनुष्य ही हैं। मनुष्यदेह बिना कोई भी जीव अपना भला नहीं कर सकता। ऐसी महान् उत्कृष्ट पर्याय को प्राप्त कर अत सम्यग्दृष्टिपूर्वक यदि धर्मसाधन नहीं किया तो मनुष्य पर्याय का पाना नहीं पाने के बराबर है।

"व्रतेन यो विना प्राणी, पशुरेव न संशय ।"

जीवका अनादिस्थान निगोद राशि है, जहाँ एक श्वास में १८ बार जन्म और मरण करना पड़ता है, एवं अक्षर के अनन्तवें भाग जहाँ ज्ञान शेष रहता है, जहाँ अनन्त काल तक निवास करना पड़ता है। किसी महान् पुण्यकर्म के उदय से यदि काललब्धि प्राप्त हो जाय तो वहाँ से निकलकर पंच स्थावरों में आता है सो वहाँ भी उस अनन्त काल तक निवास करना पड़ता है। कदाचित् और किसी विशेष पुण्योदयवशात् त्रस पर्याय प्राप्त हो जाय और द्वीन्द्रियादि पंचेन्द्रियतिर्यंच तक पहुँच जाय फिर भी उसे आत्मकल्याण करने का कोई योग्य साधन नहीं मिलता। यदि किसी महान् पुण्य से मनुष्य पर्याय प्राप्त हो जाय और हीनकुलादि (जहाँ कि धर्म साधन योग्य सामग्री न हो) में जन्म हुआ तो भी आत्मकल्याण करने से वंचित ही रहता है।

निगोद पर्याय से निकलकर इतर पर्यायों में निवास करने का काल सिर्फ दो हजार सागर और ९६ कोटि पूर्वमात्र का ही है, जिसमें १००० सागर तो देव और नरक पर्याय में व्यतीत करता है तथा १००० सागर विकलत्रयतिर्यंच में। और ४८ कोटि पूर्व पंचेन्द्रियतिर्यंच पर्याय में व्यतीत करता है। शेष ४८ कोटि पूर्व मनुष्य गति का सो उसमें १६ कोटि पूर्व

नपुंसक पर्याय, और १६ बार पृथक्त्व प्रमाण स्त्री पर्याय में भ्रमण करता है। अब रहा सिर्फ १६ बार पृथक्त्व का इतने प्रमाण मनुष्य पर्याय मात्र का है। कदाचित् वर्तमान पर्याय ही अगर अन्तिम मनुष्य पर्याय हुई तो गत्यन्तर कि दर दर में फिर निगोद राशि में जाकर वहाँ अनन्तकाल तक निवास करना पड़ेगा।

"यह मानुष पर्याय सुकुल सुन यो जिणवाणी,
इहि विधि गये न मिलें सुमणि ज्यों उदधि समानी॥"

इसलिए इस मनुष्यभव का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

व्रती संयमी पुरुषों का जीवन सबसे अधिक ऊँचा होता है। एक निरतिचार व्रती संयमी साधु चक्रवर्ती और इन्द्रों के द्वारा वन्दनीय होता है। व्रती संयमी पुरुष के नरक और तिर्यंच गति का अभाव हो जाता है इसलिए वह व्रत संयम के प्रभावकर सर्वोद्धिक पद को प्राप्त करता हुआ अन्त में निराकुलता ही अक्षय सुख (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है। अतः व्रत संयम आत्मकल्याण रूप चारित्र शुद्धि में प्रधान कारण है। मनुष्यमात्र को व्रती होना नितान्त आवश्यक है।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखते हुए मैंने इस व्रत विधान नामक ग्रन्थ का संकलन किया है। बहुत प्रयत्न करने पर भी इसमें १६४ व्रतों का ही संग्रह हो सका है। यदि इस संकलन द्वारा समाज का लाभ पहुँचा तो मैं अपने इस परिश्रम को सफल समझूँगा। तथा भविष्य में भी और अनुपम सामग्रियों से विभूषित 'वृहज्ज्योतिषार्णव' और 'प्रतिष्ठासार' जैसे आवश्यक ग्रन्थों को समाज के करकमलों में उपस्थित करने का शीघ्र प्रयत्न करूँगा।

—बारेलाल जैन राजवैद्य

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ
आद्य वक्तव्य	७, ८
विषय-सूची	८ से १६
मंगलाचरण	१७
१–श्रावक का लक्षण	१८
२–श्रावक के अष्टमूलगुण	१८
३–श्रावक के मुख्य आठ चिह्न	१८
४–श्रावक की चार भावनाएँ	१८
५–श्रावक के दैनिक षट्कर्म	१८
६–श्रावक के मुख्य बाह्यचिह्न	१९
७–श्रावक के बाईस अभक्ष्य	१९
८–श्रावक के दैनिक सप्तव्यसन नियम	१९
९–श्रावक के सप्तव्यसन यम	१९
१०–श्रावक के इकीस गुण	१९
११–व्रत की आवश्यकता	२०
१२–व्रत का लक्षण	२०
१३–यथाशक्ति पालना आवश्यक है	२०
१४–व्रत अनशन तप का भेद है	२०
१५–व्रत निरतिचारपूर्वक ही पाले	२१
१६–व्रतों में शिथिलता ही अतिचार है	२१
१७–व्रत की रक्षा यत्नपूर्वक करे	२२
१८–व्रत भंग होनेपर प्रायश्चित्त लेवे	२२
१९–व्रत के दिनों में अनिवार्य कर्तव्य	२२
२०–व्रत का उद्यापन	२३
२१–उद्यापन विधि	२३
२२–भाद्रपद में व्रतों की प्रधानता	२४
२३–व्रत करने का फल	२५

४-व्रती के भोजन के अन्तराय २५
५-व्रतोपयोगी आवश्यक विधियाँ २६
६-प्रोषध और उपवास २६
७-उपवास के भेद २६
८-उपवास का लक्षण २७
९-उपवास के दिन जिनेन्द्र पूजन २७
०-स्त्रियों को व्रताचरणात्मिका उल्लेख २७
१-व्रतों की दो तरह की मर्यादें २९
२-व्रत शीलसहित पाला करे ३०
३-शील की नव बाड़ें ३०
४-श्रावक के नव चंदोवा के स्थान ३०
५-प्रासुक द्रव्य ३०
६-जल के छन्ना का प्रमाण ३०
७-जल की मर्यादा ३१
८-जलगालन के अतिचार ३१
९-जल के एक बिन्दु में जीव संख्या ३१
४०-खान पान के पदार्थों की मर्यादा ३१
४१-द्विदल विचार ३३
४२-द्विदल के भेद ३४
४३-दही जमाने हेतु शुद्ध जामन ३४
४४-व्रत में विशेष ३४
४५-अष्टाह्निका व्रत ३५
४६-षोडश कारण व्रत ३८
४७-दशलक्षण व्रत ३९
४८-रत्नत्रय व्रत ४०
४९-पुष्पांजलि व्रत ४१
५०-सुखनिधान व्रत ४२

५१–संकटहरण व्रत ४२
५२–नित्यरसी व्रत ४३
५३–षट्रसी व्रत ४३
५४–ज्येष्ठ जिनवर व्रत ४३
५५–रविवार व्रत ४४
५६–णमोकार पतीसी व्रत ४५
५७–प्रेषण क्रिया व्रत ४६
५८–नवकार व्रत ४७
५९–चौबीस तीर्थंकर व्रत ४८
६०–करमचूर व्रत ४८
६१–समकित चौबीसी व्रत ४९
६२–भावनापच्चीसी व्रत ४९
६३– „ अन्य प्रकार ५०
६४–लघु पल्लविधान व्रत ५०
६५–वृहत् पल्लविधान व्रत ५०
६६–नक्षत्रमाला व्रत ५३
६७– , अन्य प्रकार ५४
६८–लब्धिविधान व्रत ५४
६९–सप्तर्षि व्रत ५६
७०–लघुसिंहनिष्क्रीडित व्रत ५६
७१–वृहत्सिंहनिष्क्रीडित व्रत ५७
७२–भाद्रपदसिंहनिष्क्रीडित व्रत ५८
७३–त्रिगुणसार व्रत ५९
७४–चारित्रशुद्धि (ग्यारहसौ चौंतीस व्रत) ६०
७५–सर्वतोभद्र व्रत ६०
७६–महासर्वतोभद्र व्रत ६१
७७–दुखहरण व्रत ६२

७८-जिनपूजापुरंदर व्रत ६२
७९-लघु धर्मचक्र व्रत ६३
८०-वृहद् धर्मचक्र व्रत ६३
८१-वृहद् जिनगुणसपत्ति व्रत ६४
८२-मध्यम जिनगुणसपत्ति व्रत ६६
८३-लघु जिनगुणसपत्ति व्रत ६६
८४-वृहत्सुखसपत्ति व्रत ६६
८५-मध्यम सुखसपत्ति व्रत ६७
८६-लघु सुखसपत्ति व्रत ६७
८७-रुद्रवसत व्रत ६७
८८-शालकल्याणक व्रत ६८
८९-श्रुतिकल्याणक व्रत ६९
९०-चन्द्रकल्याणक व्रत ६९
९१-लघुकल्याणक व्रत ६९
९२-मध्यकल्याणक व्रत ७०
९३-श्रुतस्कध व्रत ७०
९४- ,, अन्य विधि ७१
९५-श्रुतज्ञान व्रत ७१
९६-पच श्रुतज्ञान व्रत ७२
९७-ज्ञानपचमी व्रत ७३
९८-वृहद् रत्नावलि व्रत ७३
९९-मध्यम रत्नावलि व्रत ७३
१००- ,, अन्य प्रकार ७४
१०१-लघु रत्नावलि व्रत ७४
१०२-वृहद् मुक्तावलि व्रत ७५
१०३-मध्यम मुक्तावलि व्रत ७
१०४-लघु मुक्तावलि व्रत ७१

१०५–एकावलि व्रत
१०६–लघु एकावलि व्रत
१०७–द्विकावलि व्रत
१०८–लघु द्विकावलि व्रत
१०९–बृहत् कनकावलि व्रत
११०–लघु कनकावलि व्रत
१११–लघु मृदंगमध्य व्रत
११२–बृहद् मृदंगमध्य व्रत
११३–मुरजमध्य व्रत
११४–वज्रमध्य व्रत
११५–मेरुपंक्ति व्रत
११६–अक्षयनिधि व्रत
११७–मेघमाला व्रत
११८–सुखकारण व्रत
११९–समवशरण व्रत
१२०–आकाशपंचमी व्रत
१२१–अक्षयफलदशमी व्रत
१२२–निर्दोषसप्तमी व्रत
१२३–चन्दनषष्ठी व्रत
१२४–सुगंधदशमी व्रत
१२५–अनन्तचतुर्दशी व्रत
१२६–श्रवणद्वादशी व्रत
१२७–श्वेतपंचमी व्रत
१२८–शील व्रत
१२९–सर्वार्थसिद्धि व्रत
१३०–तीनचौबीसी व्रत
१३१–जिनमुखावलोकन व्रत

१३२-मुकुटसप्तमी व्रत	९१
१३३-जिनरात्रि व्रत	९१
१३४-नवनिधि व्रत	९२
१३५-अशोकरोहिणी व्रत	९२
१३६-कोकिलापंचमी व्रत	९३
१३७-रुक्मिणी व्रत	९४
१३८-कर्मनिर्जरा व्रत	९५
१३९-परमचूर व्रत	९६
१४०-अनस्तमी व्रत	९६
१४१-निर्जरपंचमी व्रत	९७
१४२-कवलचन्द्रायण व्रत	९८
१४३-बारह बिजोरा व्रत	९९
१४४-ऐसानव व्रत	९९
१४५-ऐसोदश व्रत	१००
१४६-कनिक व्रत	१००
१४७-श्रुतिपंचमी व्रत	१०१
१४८-कृष्णपंचमी व्रत	१०१
१४९-निःशल्य अष्टमी व्रत	१०१
१५०-लक्षणपंक्ति व्रत	१०२
१५१-दुग्धरसी व्रत	१०२
१५२-धनदकलश व्रत	१०२
१५३-कलीचतुर्दशी व्रत	१०३
१५४-मोक्षसप्तमी व्रत	१०३
१५५-रोटतीज व्रत	१०३
१५६-शीलसप्तमी व्रत	१०४
१५७-वीरशासनजयंती व्रत	१०४
१५८-श्री वीरजयंती व्रत	१०४

१५९–श्री आदिनाथजयती व्रत १००
१६०–आदिनाथशासनजयती व्रत १०१
१६१–आदिनाथनिर्वाणोत्सव व्रत १०१
१६२–नंदसप्तमी व्रत १०५
१६३–काजी बारस व्रत १०६
१६४–ऋषिपंचमी व्रत १०६
१ ५–त्रिलोकतीज व्रत १०६
१६६–आचारवर्धन व्रत १०७
१६७–सुदर्शन व्रत १०७
१६८–रत्नावली व्रत १०८
१६९–क्षमावणी व्रत १०८
१७०–दीपमालिका व्रत १०८
१७१–चौंतीस अतिशय व्रत १०९
१७ –गंध अष्टमी व्रत ११०
१७३–तीर्थंकर बेला व्रत ११०
१७४–शिवकुमार बेला व्रत १११
१७५–मौन व्रत ११२
१७ –विमानपंक्ति व्रत ११४
१७७–बारह तप व्रत ११५
१७८–नंदीश्वरपंक्ति व्रत ११७
१७९–परमेष्ठिगुण व्रत ११८
१८०–श्रुतज्ञान व्रत १२०
१८१–रूपत्रय व्रत १२१
१८२–गरुडपंचमी व्रत १२२
१८३–षष्ठी व्रत १२२
१८४–द्वादशी व्रत १२२
१८५–बेला व्र १२३

१८६–पंचम वेला व्रत १२२
१८७–तेला व्रत १२२
१८८–अष्टमी व्रत १२३
१८९–चतुर्दशी व्रत १२४
१९०–निर्वाणकल्याणक तेला व्रत १२४
१९१–लघुपंचकल्याणक व्रत १२६
१९२–वृहत्पंचकल्याणक व्रत १२६
१९३–पंचकल्याणक तिथियंत्र १२७
१९४–पंचपौरिया व्रत १२९
१९५–चंदनषष्ठी व्रत १२९
१९६–कौमारसप्तमी व्रत १२९
१९७–मनचिन्ती अष्टमी व्रत १२९
१९८–सुगंधदशमी व्रत १२९
१९९–दशमिनिमानी व्रत १२९
२००–सौभाग्यदशमीव्रत १२९
२०१–चमकदशमी व्रत १३०
२०२–छहारदशमी व्रत १३०
२०३–तमोरदशमी व्रत १३०
२०४–पानदशमी व्रत १३०
२०५–फूलदशमी व्रत १३०
२०६–फलदशमी व्रत १३
२०७–दीपदशमी व्रत १३
२०८–धूपदशमी व्रत १३
२०९–भावदशमी व्रत १३
२१०–स्योनदशमी व्रत १३
२११–उडदशमी व्रत १३
२१२–बारादशमी व्रत १३
२१३–भंडारदशमी व्रत १३
२१४–सूतकप्रमाण १३२ से १४
२१५–सचित्तप्रायश्चित्त १४
२१६–कायोत्सर्ग विधि १४
२१७–सामायिक विधि १४७ से १५
२१८–मेरी भावना १५
२१९–इष्ट कामना १
२२०–यह ग्रन्थ चिरकाल तक रहे १५
२२१–क्षमा-याचना १
२२२–अन्तिम मंगल कामना १५
२२३–बारह भावना १५
२२४–प्रकाशकीय परिचय १५
२२५–ग्रन्थकर्ता का परिचय १५

श्री शान्तिनाथाय नम

जैन-व्रत-विधान संग्रह

मंगलाचरण

दोहा-पंच परमगुरुको प्रणमि, जिणवाणी उर धार।
व्रत विधान भाषा सहित, लिखहुँ स्व पर हितकार ॥

छंद—

एक शतक अरु साढ़ तीन व्रत, व्रतविधानकी क्रिया महान।
सबके मंत्र विशद उच्चारण, दर्शाये आगम परमान ॥
साथ-साथमें पृथक रूपसे, सबकी मर्यादा सुखकार।
तिनके फलमें जिन भवि जाने, पाया स्वर्ग मोक्षका द्वार ॥
ऐसे 'व्रत विधान संग्रह' को लिखहुँ अनेक शास्त्र अनुसार।
अल्पबुद्धि अरु विषय गहन है यह प्रयास मेरा हितकार ॥
होगा भगवत शान्तिनाथके सत्प्रसादसे पूरण ग्रन्थ।
तथा भव्य जनके अनुग्रहसे होगा यह [illegible]

व्रतयोग्य पात्रके आवश्यक चिह्न—

श्रावक का लक्षण

श्रद्धा और विवेक पुन क्रिया सहित जो होय।
श्रावक वह कहलात है तीनों बिन नहीं कोय॥

भावार्थ—श्र (श्रद्धा) व (विवेक) क (क्रिया) अर्थात्
विवेक और क्रिया इन तीन गुणों से जो युक्त हो उसे श्रावक कहते ह
भी गुण न्यून हो तो नहीं।

श्रावकके अष्टमूल गुण

प्रथमहिं पञ्चउदम्बर'फल वा मद्य' मांस' मधु' तीन मका
त्रस जीवोंका नाश रहे बिन'छाना जल निशि आहा
इनका त्याग करो जिनदर्शन' यही मूलगुण अष्टप्रका
धारण कर श्रावक कहलाता, इन बिन जैनीको धिक्का

श्रावकके मुख्य आठ चिह्न

सब अन्याय' अभक्ष्य त्यागकर तजो अहितकारी मिथ्यात
निशिका' भोजन बिन छाना' जल हरो व्यसन' दुखकारी स
जीवोंकी करुणा' मन धारो कर 'जिनदर्शन सध्या प्रा
मुख्य चिह्न यह जैनीके हैं निश्चय मानो मेरे भ्रा

श्रावककी चार भावनाएँ

मैत्री' अरु प्रमोद' करुणामय' भाव करो 'माध्यस्थ विचा
इन भावोंके होने पर ही होता है निज आत्म सुधा

श्रावकके दैनिक षट्कर्म

जिनवरपूजा' गुरुकी भक्ती' शास्त्र'श्रवण सयम' तप' दान
षट् आवश्यक कर्म प्रतिदिन भक्ति भावसे करो सुजा

श्रावकके मुख्य बाह्य चिह्न

निशि[1]का भोजन विनछाना जल[2] गहैं नहीं सम्यक् मतिमान।
करें नित्य श्री [3]जिनके दर्शन बाह्यचिह्न जैनीके जान॥

श्रावकके बाईस अभक्ष्य

ओला[1] घोरवडा[2] निशिभोजन[3] बहुबीजक[4] बैंगन[5] संधान[6]।
बड पीपल[7] ऊमर[8] कठऊमर[9] पाकरफल[10] जो होय अजान[11]॥
कंदमूल[12] माटी[13] विष[14] आमिष[15] मधु[16] माखन[17] अरु मदिरापान[18]।
फल अतितुच्छ[19] तुषार[20] चलितरस[21] जिनमत ये बाईस अखान।

श्रावकके सप्त दैनिक नियम

भोजन[1] वाहन शयन[2] विलेपन[3] आसन[4] भूषण[5] अरु स्नान।
ब्रह्मचर्य ताम्बूल[6] पेय[7] सब सचित्तवस्तुका[8] परिमान॥
पुष्प[9] नृत्यगीतादिक पट्रस[10]वस्त्र[11]देशव्रत[12]गायन[13] जान।
नियम सप्तदश ये प्रतिदिन सब धारण करो सदा मतिमान॥

श्रावकके सप्त यम

कुगुरु[1] कुदेव[2] कुवृष[3]की सेवा अनर्थदण्ड[4] अघमय व्यापार।
द्यूत[1] मास मधु[2]वेश्या[3]चोरी[4] परतिय[5]हिंसादान[6]शिकार[7]॥
त्रसकी [1]हिंसा स्थूल असत्य[2] रु बिन छाना[3]जल निशिआहार[4]
ये सप्त अनर्थ जगमाहीं यावज्जीव करो परिहार॥

श्रावकके इक्कीस गुण

लज्जा[1] दया[2] प्रसन्न[3] रु श्रद्धा[4] पर औगुण ढक पर [1]उपकार।
सौम्य[2] दृष्टि गुणग्राही[3] प्रेमी[4] [5]श्रेष्ठविचारी नायीसार[6]॥
मृदुवचनी[7] ज्ञाता[8] अरु धर्मी[9] निर अभिमानी[10] तत्वी[11] जान।
सममावी[12] विनयी[13] रु कृतज्ञी[14] निर्लोभी सद्[15]व्रती मान॥

व्रतकी आवश्यकता

व्रतेन यो विना प्राणी पशुरेव न संशय ।
योग्यायोग्य न जानाति भेदस्तत्र कुतो भवेत् ॥

भावार्थ—व्रत रहित प्राणी निःसंदेह पशुके समान ही है। जिसके योग्यायोग्यका ज्ञान नहीं है ऐसे मनुष्य और पशुमें क्या भेद है? कुछ नहीं।

व्रतका लक्षण

सकल्पपूर्वक सेव्ये नियमोऽशुभकर्मण ।
निवृत्तिर्वा व्रत स्याद्वा प्रवृत्ति शुभकर्मणि ॥

भावार्थ—सेवन करने योग्य विषयोंमें सकल्पपूर्वक नियम करना, अथवा हिंसादिक अशुभ कर्मोंसे सकल्पपूर्वक निवृत्त होना, अथवा पात्र दानादिक शुभ कर्मोंमें सकल्पपूर्वक प्रवृत्त करना, व्रत कहलाता है।

यथाशक्ति व्रत पालन करना आवश्यक है

पचम्यादि विधि कृत्वा शिवाताभ्युदयप्रदम् ।
उद्योतयेद्यथासम्पन्निमित्ते प्रोत्सहेन्मन ॥

भावार्थ—मोक्ष पर्यन्त इन्द्र, चक्रवर्ती आदि पदों के अभ्युदय को देनेवाले, पचमी, पुष्पाञ्जलि, मुक्तावली, रत्नत्रयादिक व्रतों को शास्त्रानुसार करके अपनी शक्ति और सम्पत्ति के अनुसार उनका उद्यापन करना, क्योंकि नैमित्तिक (नित्य) क्रियाओं की अपेक्षा नैमित्तिक क्रियाओं के करने में मन अधिक उत्साह को प्राप्त होता है।

व्रत अनशन का ही भेद है

साकार सर्वतोभद्र सिंहनिष्क्रीडितादय ।
साकारस्योपवासस्य भेदाश्चैकान्तरादय ॥

—आचारसार

भावार्थ—साकार, सर्वतोभद्र, सिंहनिष्क्रीडित, उपवास और एकाशनादि ये सभी साकार अनशन के भेद हैं।

व्रत निरतिचार पूर्वक ही पालन करना चाहिये

व्रतानि पुण्याय भवन्ति जन्तो
न सातिचाराणि निषेवितानि ।
शस्यानि किं क्वापि फलन्ति लोके,
मलोपलीढानि कदाचनापि ॥
—सा ध

भावार्थ—जीवोंको व्रत पुण्यफल देते हैं। परन्तु अतिचार सहित व्रत पुण्यजनक नहीं होते। जैसे धान्यमें यदि नींदी गोड़ा न जावें, वे मल युक्त बनी रहें तो कभी भी वे फलवता नहीं होती। उनमें पैदा हो जाने वाले फालतू घास वगैरह को नींद गोड़कर साफ करने से ही वे फलवती होती है। इसी प्रकार निरतिचार व्रतों से ही पुण्य प्राप्त होता है, सातिचार व्रतों से नहीं।

व्रतों के आचरण में शिथिलता होना अतिचार है

अतिक्रमो मानसशुद्धिहानि,
व्यतिक्रमो यो विषयाभिलाषः ।
तथातिचारं करणालसत्वं
भगो ह्यनाचारमिह व्रतानाम् ॥
—पु मि

भावार्थ—मन की शुद्धि में हानि होना सो अतिक्रम, विषयों की अभिलाषा सो व्यतिक्रम, इंद्रियों की असावधानी अर्थात् व्रत के आचरण में शिथिलता सो अतिचार, और व्रत का सर्वथा भंग होना सो अनाचार है। जैसे खेत के बाहर एक बैल बैठा था, उसने विचारा कि निकटवर्ती खेत को चरना सो अतिक्रम, खड़ा होकर चलना सो व्यतिक्रम, बारी (बाढ़) तोड़ना सो अतिचार, और खेत चरना सो अनाचार

लिये हुए व्रत की रक्षा पूरे यत्नपूर्वक करनी चाहिये

प्राणान्तेऽपि न भङ्क्तव्य गुरुसाक्षिश्रित व्रतम्।
प्राणान्तस्तत्क्षणे दुःख व्रतभंगो भवे भवे॥

—सा ध ७–५२

भावार्थ—गुरु अर्थात् पंचपरमेष्ठी, अथवा व्रतदाता इनकी साक्षी पूर्वक लिये हुए किसी भी व्रत को अपने प्राण भी नष्ट हो जावें तो भी नहीं छोड़ना चाहिये। क्योंकि प्राणनाश केवल मरण के समय में ही दुःख का कारण है, परन्तु व्रत का भंग भव भव में दुःख का कारण है।

प्रमाद वा अज्ञानता से व्रतभंग हो जाय तो प्रायश्चित्त लेकर उसे पुनः धारण करे

समीक्ष्य व्रतमोदय मात्त पाल्य प्रयत्नत।
छिन्न दर्पात् प्रमादाद्वा प्रत्यवस्थाप्यमञ्जसा॥

—सा ध २–७९

भावार्थ—कल्याण चाहनेवाले गृहस्थको देश कालादिक का अच्छी तरह विचार करके व्रत का ग्रहण करना चाहिये। और ग्रहण किये व्रत को यत्नपूर्वक पालन करना चाहिये। तथा मद के आवेश में अथवा प्रमाद से व्रत के खण्डित हो जाने पर सम्यक् रीति से शीघ्र ही प्रायश्चित्त लेकर उसे फिर से ग्रहण करना चाहिये।

व्रत के दिनों में श्रावक का अनिवार्य कर्त्तव्य

प्रातः सामायिक कुर्यात्तत तात्कालिकीं क्रियाम्।
धौताम्बरधरो धीमान् जिनध्यानपरायण॥

भावार्थ—विवेकी व्रती श्रावक प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर सामायिक करे। और बाद में शौचादिक से निवृत्त होकर शुद्ध साफ वस्त्र धारण कर श्री जिनेन्द्रदेव के ध्यान में तत्पर रहे।

महाभिषेकमद्भुत्यैजिनागारे व्रतान्विते ।
कर्त्तव्य सह संघेन महापूजादिकोत्सवम् ॥

भावार्थ—श्री मन्दिरजी में जाकर सबको आश्चर्य करनेवाला ऐसा महा अभिषेक करे। फिर अपने संघ के साथ समारोहपूर्वक महापूजन करे।

ततो स्वगृहमागत्य दान दद्यात् मुनीशिने ।
निर्दोष प्रासुक शुद्ध मधुर तृतिकारणम् ॥

भावार्थ—पश्चात् अपने घर आकर मुनियों को निर्दोष प्रासुक, शुद्ध, मधुर और तृप्ति करनेवाला आहार देकर शेष बचे हुए आहार सामग्री को अपने कुटुम्ब के साथ सानन्द स्वयं आहार करे।

प्रत्याख्यानोद्यतो भूत्वा ततो गत्वा जिनालयम् ।
त्रि परीत्य तत्र कार्यास्तद्विध्युक्तजिनालयम् ॥

भावार्थ—फिर मन्दिरजी में जाकर प्रदक्षिणा देवे और व्रतविधान में कहे गये मंत्रों का जाप करे।

व्रत का उद्यापन

सपूर्णे हातु कर्त्तव्य स्वशक्त्योद्यापन बुधै ।
सवथा येऽप्यशक्त्यादिव्रतोद्यापनसद्विधौ ॥

भावार्थ—व्रत की मर्यादा पूर्ण हो जाने पर स्वशक्ति के अनुसार उद्यापन करे, यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो व्रत का जो विधान (मर्यादा) है उससे दूना करे।

उद्यापनविधि

कर्तव्य जिनागारे महाभिषेकमद्भुतम् ।
सर्वैव्रतविधै सार्धं महापूजादिकोत्सवम् ॥
घण्टाचामरचन्द्रोपक भृगार्यार्तिकादय ।
धर्मोपकरणान्येव देय भक्त्या स्वशक्तित ॥

पुस्तकादिमहादान भक्त्या देय यथाक्रम् ।
महोत्सव विधेय सुवाद्यगीतादिनर्तन ॥
चतुर्विधाय संघायाहारदानादिक मुदा ।
आमन्त्र्य परया भक्त्या देय सम्मानपूर्वकम् ॥
प्रभावना जिनेन्द्राणा शासन चैत्यधामनि ।
कुर्वन्तु यथाशक्त्या स्तोक चोद्यापन मुदा ॥

भावार्थ—खूब ऊँचे ऊँचे विशाल जिनमन्दिर बनवाने और उनमें बड़े समारोहपूर्वक प्रतिष्ठा कराकर जिनप्रतिमा विराजमान करे। पश्चात् चतुर्प्रकार संघ के साथ प्रभावनापूर्वक महा अभिषेक कर महापूजा करे। पश्चात् घण्टा, झालर, चमर, छत्र, सिंहासन, चँवरा, झारी, भृंगारी, आरती आदि अनेक धर्मोपकरण शक्ति के अनुसार भक्तिपूर्वक देवे। आचार्यादि सत्पुरुषों को धर्मवृद्धि तथा ज्ञानवृद्धि हेतु शास्त्र प्रदान करे। और उत्तमोत्तम वाद्य, गीत और नृत्य आदि के अत्यन्त आयोजन से मन्दिर में महान् उत्सव करे। चतुर्विध संघ को विशिष्ट सम्मान के साथ भक्तिपूर्वक बुलाकर अत्यन्त प्रेमसे आहारादि चतुप्रकार दान देवे। भगवान् जिनेन्द्र के शासन का माहात्म्य प्रकट कर खूब प्रभावना करे। इस प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन कर व्रत विसर्जन करे।

भाद्रपद मास में व्रतों की प्रधानता

अहो भाद्रपदाख्योऽयं मासोऽनेकव्रताकर ।
धर्महेतुपरो मध्येऽन्यमासाना नरेन्द्रवत् ॥

—मल्लिषेणपुराणे

भावार्थ—जिस प्रकार मनुष्यों में राजा माना जाता है, उसी प्रकार समस्त मासों में भाद्रपद मास भी श्रेष्ठ है। क्योंकि वह अनेक प्रकार के व्रतों का खान-स्वरूप है और धर्म का प्रधान कारण है।

व्रत करने का फल

अनेकपुण्यसंतानकारणं स्वर्गबंधनम्।
पापघ्नं च क्रमादेतद् व्रतं मुक्तिवशीकरम्॥
यो विधत्ते व्रतं सारमेतत्सर्वसुखावहम्।
प्राप्य षोडशमं स्वर्गं स गच्छेत् क्रमशः शिवम्॥

भावार्थ—व्रत अनेक पुण्य की संतान का कारण है, स्वर्ग का कारण है, संसार के समस्त पापों का नाश करनेवाला है एवं मुक्तिलक्ष्मी को वश में करनेवाला है, जो महानुभाव सर्वसुखोंपादक श्रेष्ठ व्रत धारण करते हैं वे सोलहवें स्वर्ग के सुखों का अनुभव कर अनुक्रम से अविनाशी मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं।

व्रती श्रावक के भोजन के अन्तराय

दृष्ट्वाऽऽर्द्रचर्मास्थिसुरामांसासृक्पूयपूर्वकम्।
स्पृष्ट्वा रजस्वलाशुष्कचर्मास्थिशुनकादिकम्॥
श्रुत्वातिकरुणाक्रन्द विडंबरप्राय निःस्वनम्।
भुक्त्वा नियमितं वस्तु भोक्तव्येऽशक्यविवेचने॥
संसृष्टे सति जीवद्भिर्जीवद्वा बहुभिर्मृते।
इदं मांसमिति दृष्टे सङ्कल्पे चाशनं त्यजेत्॥

भावार्थ—व्रतों का पालन करनेवाला गृहस्थ—गीला चमड़ा, हड्डी, मदिरा, मांस, लोहू तथा पीप आदि पदार्थों को देख करके तथा रजस्वला स्त्री, सूखा चमड़ा, हड्डी, कुत्ता, बिल्ली और चाण्डालादि को स्पर्श करके, तथा इनका मस्तक काटो, इत्यादि रूप अत्यन्त करुण रूप (रोने के) शब्दों का, तथा परचक्र के आगमनादि विषयक विडंबरप्राय शब्दों को सुन करके, तथा त्यागी हुई वस्तु को खा करके और खाने योग्य पदार्थ से अशक्य है अलग करना जिनका ऐसे जीते हुए अथवा मरे हुए दो इंद्रियादि जीवों के भोजन में मिल जाने पर तथा

यह खाने योग्य पदार्थ मांस के समान है इस प्रकार खाने योग्य पदार्थ
मन के द्वारा सकल्प होने पर भोक्ता को छोड़ देवे।

व्रतोपयोगी आवश्यक विधियाँ

(१) *कांजी*—सिर्फ पानी और भात मिलाकर खाना, अथवा चावलों का धोवन या माण्ड पीना।

(२) *आंवली*—छहों रसों के बिना सिर्फ नीरस एक अन्न पानी साथ लेना।

(३) *बेलड़ी*—पानी, भात और मिर्च मिलाकर खाना।

(४) *एकलठाणा*—मात्र एक बार का परोसा हुआ भोजन मौन पूर्वक लेना।

प्रोषध और उपवास

चतुराहारविसर्जनमुपवासः प्रोषधः सकृद्भुक्तिः।
स प्रोषधोपवासो यदुपोष्यारम्भमाचरति॥

भावार्थ—चारों प्रकार के आहार का त्याग करना सो उपवास एक बार भोजन करना सो प्रोषध (एकाशन) है। और उपवास पारने के दिन १६ प्रहर बाद आरम्भ अर्थात् एक बार भोजन लेना प्रोषधोपवास है।

उपवास के तीन भेद

(१) *उत्तम उपवास*—धारने के दिन दो प्रहर उपवास की प्रतिज्ञा कर १६ प्रहर धर्मध्यान में व्यतीत करना।

(२) *मध्यम उपवास*—धारने के दिन २ घड़ी दिन शेष रहे उपवास धारण कर १२ प्रहर धर्मध्यान में व्यतीत करना।

(३) *जघन्य उपवास*—उपवास के दिन प्रात काल प्रतिज्ञा कर ध्यान में व्यतीत करना।

उपवास का लक्षण

कषायविषयारम्भत्यागो यत्र विधीयते।
उपवासः स विज्ञेयो शेषं लंघनकं विदुः॥

भावार्थ—कषाय विषय और आरंभ का संकल्पपूर्वक त्याग जो उपवास है, शेष को लंघन समझना चाहिये।

विशेष—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार अपनी शक्ति देखकर उत्तम, मध्यम अथवा जघन्य जैसा उचित समझे वैसा करे।

उपवास के दिन भी श्री जिनेन्द्र पूजन करने की आज्ञा

प्रातः प्रोत्थाय ततः कृत्वा तात्कालिकं क्रियाकल्पम्।
निर्वर्त्तयेद्यथोक्तं जिनपूजां प्रासुकैर्द्रव्यैः॥

भावार्थ—प्रभात ही उठकर तात्कालिक शौचनिवृत्ति आदि सब क्रियाओं को करके प्रासुक अर्थात् जीवरहित शुद्ध द्रव्यों से आगमों में कही हुई विधि के अनुसार श्री जिनेन्द्रदेव का पूजन करे।

स्त्रियों को भी पूजन व व्रताचरणादि करने का उल्लेख

कियत्काले गते कन्या आगत्य जिनमन्दिरम्।
सपर्यां महतीं चक्रुर्मनोवाक्कायशुद्धितः॥
श्रावकव्रतसंयुक्ता बभूवुस्ताश्च कन्यकाः।
क्षमादिव्रतसंकीर्णाः शीलाङ्गपरिभूषिताः॥

—गौतमचरित्रे

भावार्थ—इन तीनों कन्याओं ने श्रावक व्रत धारण करके क्षमादिरूप धर्म और शील व्रत धारण किया, कुछ समय बाद उन्होंने जिनमन्दिर में आकर मन वचन काय की शुद्धि पूर्वक श्री जिनेन्द्र भगवान् की बड़ी पूजा की।

गृहीतगंधपुष्पादिसामग्र्या सपरिच्छदा।
अथैकदा जगामैषा प्रातरेव जिनालयम्॥

व्रत शील सहित ही पालन करना चाहिये

शील सहित व्रत पुण्य उपाय, बिना शील व्रत निष्फल थाय।

भावार्थ—शील सहित व्रत ही पुण्योत्पादक होते हैं।

शील की नव बातें

तियथल[1] वास प्रेमरुचि निरखन[2] दे परात्त भाषण[3] मधुबैन।
पूरवभोग केलरस[4] चिंतन, गरु[5] अहार लेत चित चैन॥
करशुचितन शृंगार बनावत[6] तिय परयंक मध्य सुख सैन।
मन्मथ[7] कथा उदर भर भोजन[8] ए नव बाढ शील मत जैन॥

श्रावक के चदोवा के नव स्थान

प्रथम रसोइ के स्थान[1] चक्की[2] उखरी[3] द्वय त्रय जान।
चोथो अनाज सोधने[4] काज जीमन चौका[5] पचम माढ़॥
छठमें आटा[6] छनने सोय सप्तम[7] थान सयन का होय।
पानी थान सु[8] अष्टम जान सामायिक का नवमों[9] थान॥

प्रासुक द्रव्य

सुक्क पक्क तत्त अबिल लवणेण मिस्सिय दव्व।
ज ज तेण य छिन्न त सव्व फासुय भणिय॥

भावार्थ—जो द्रव्य सूखा हो, परिपक्व हो, तप्त हो, आम्लरस तथा लवण-मिश्रित हो, कोल्हू, चरखी, चक्की, छुरी आदि यंत्रों से छिन्न हुआ तथा संशोधित हो वह सब प्रासुक है।

व्रती को जल छानने के लिये वस्त्र का प्रमाण

षट्त्रिंशदगुल वस्त्र चतुर्विंशतिविस्तृतम्।
तद्वस्त्र द्विगुणी कृत्य तोय तेन तु गालयेत्॥

भावार्थ—छत्तीस अंगुल लम्बा और २४ अंगुल चौड़ा ऐसा एक गाढ़ा वस्त्र लेकर द्विगुणित (दुहरा) कर उससे जल छानने योग्य है।

जल प्रासुक करने की विधि व मर्यादा

मुहूर्त गालित तोय प्रासुक प्रहरद्वयम्।
उष्णोदकमहोरात्रमगालितमिवोच्यते ॥

भावार्थ—छना हुआ जल दो घड़ी तक पीने योग्य रहता है। इला यची, लवगादि प्रासुक द्रव्या का चूर्ण मिलाने से (जिससे जल का रस, रूप, गन्ध बदल जाय) दो प्रहर तक प्रासुक रहता है। उबाला हुआ जल एक दिन-रात्रि अर्थात् २४ घण्टे प्रासुक रहता है। पश्चात् वह बिना छने हुए जल के बराबर हो जाता है।

जल गालने व्रत के अतीचार

मुहूर्तमेकोर्ध्वमगालन वा
दुर्वाससा गालनमम्बुनो वा।
अन्यत्र वा गालितशेषितस्य
न्यासो निपानऽस्य न तद् व्रतेऽच्य॑ ॥

भावार्थ—१—छने हुए पानी को एक मुहूर्त अर्थात् दो घड़ी के बाद न छानना, २—अथवा फटे, मैले, पुराने, छोटे छेदवाले कपड़े से छानना, ३—अथवा छाननेसे शेष बचे हुए जीवानी को जल को जिस स्थान का जल है उसमें न डालकर अन्य जलाशय में छोड़ना, ये तीन जल छानन व्रत के अतीचार हैं।

जल के एक बिन्दु में जीवों की संख्या

एकबिन्दूद्भवा जीवा पारावतसमा यदि।
भूत्वोच्चरन्ति चेज्जम्बूद्वीपोऽपि पूर्यते च तै ॥

भावार्थ—जल की एक बूँद में जितने जीव हैं वे कबूतर बराबर होकर यदि उड़ें तो यह जम्बू द्वीप लबालब भर जाय।

व्रती के खान पान के पदार्थों की मर्यादा

(१) बूरा—की मर्यादा शीत ऋतु में १ मास, ग्रीष्म ऋतु में १५ दिन और वर्षा ऋतु में ७ दिन की होती है।

(२) दूध—दोहने के बाद बिना गरम किये हुए की मर्यादा दो घड़ी की है, तुरन्त खूब गरम किये की मर्यादा ८ प्रहर की है। यदि बीच में स्वाद बिगड़ जाय तो बीच में ही परित्याग कर दें। यदि दोहने के बाद तुरन्त गरम न किया जाय तो जिस पशु का दूध है उसी आकारवाले सम्मूर्च्छन असंख्य जीव पैदा हो जाते हैं।

(३) आटा—आटा, सत्तू, बेसन आदि चून की मर्यादा वर्षा में ३ दिन, गर्मी में ५ दिन और शीत ऋतु में ७ दिन की है।

(४) दही—गरम दूध में शुद्ध जामन देकर जमाये हुए दही की मर्यादा ८ प्रहर की है।

(५) छाँछ—बिलोते समय ही पानी डाला जाय तो मर्यादा ४ प्रहर की और बिलाने के बाद डाला जाय तो २ घड़ी की मर्यादा होती है। पानी पक्का लेवे।

६—घी, गुड़, तेल की मर्यादा स्वाद न बिगड़ने तक।

७—पिसे हुए सेंधा नमक की मर्यादा २ घड़ी की है यदि हल्दी या मिर्च पीसते समय मिला दी जाय तो ६ घण्टे की होती है, पश्चात् अभक्ष्य है।

८—खिचड़ी, कढ़ी, रायता, तरकारी आदि की मर्यादा दो प्रहर की है।

९—पुआ, पूरी, खीर, रोटी, बड़ा आदि जिनमें पानी का अंश अधिक रहता है उनकी मर्यादा ४ प्रहर की है।

१०—मौनवाली पूड़ी, पपड़िया, खाजा, लड्डू, घेवर आदि जिनमें पानी का अंश कम रहता है उनकी मर्यादा ८ प्रहर की होती है।

११—जिस भोजन में पानी नहीं पड़ा हो जैसे मगदलेसन, चूरमा आदि की मर्यादा आठ के बराबर होती है।

१२—पिसे हुए हल्दी, धनिया, मिर्च आदि मसाले की मर्यादा आठ के बराबर है।

१८—बूरा, मिश्री, गन्ना, खारक आदि मिष्ट द्रव्य मिले हुए दही छाँछ की मर्यादा दो घड़ी की है।

१९—गुड़ मिला दही, छाँछ सर्वथा अभक्ष्य है।

नोट—सामान्यतः ऋतु का परिवर्तन आषाढ़ी से आषाढ़ी तक ४४ मासों में होता है।

द्विदल विचार

योऽपक्वतक्र द्विदलान्नमिश्रं भुक्तं विधत्ते मुखवाष्पसंगे।
तस्यास्य मध्ये मरणं प्रयान्ता सम्मूर्च्छका जीवगणा भवति॥

भावार्थ—कच्चे दूध, दही, मठा में द्विदल (जिसकी दो दालें हों) पदार्थ के मिलाने से और मुख की लार का उसमें सम्बन्ध होने से असंख्य सम्मूर्च्छन त्रस जीवराशि पैदा होती है इसके भक्षण में मांस् हिंसा होती है। अतः यह सर्वथा अभक्ष्य है।

एक गोरस में भी इस प्रकार बताया है

चऊ एइन्दी वे छह, अठ्ठहतेरिण भणंति।
दह चऊरिंदियजीवडा बारह पंच भणंति॥

चोपाई—जब चार महूरत जाहीं, एकेन्द्रिय जिय उपजाहीं।
बारघटिका जब जाय, बेइन्द्री तामें थाय॥
षोडशघटिका है जबहीं, ते इन्द्रिय उपजें तबहीं।
जब बीस घड़ी गत जानी, उपजें चौइन्द्रिय प्राणी॥
गमिया घटिका जब चौबिस, पचेंद्रिय जिय पूरित तिस।
ईहं नहिं संशय आनी, यों भाषे जिनवर वाणी॥
बुधिजन लख ऐसो दोष, तजिये ततछिन अघ कोष।
कोई ऐसे कहवाई, गहें इक याम हि माहीं॥
मरयाद न सधिहैं मूल, तजिहैं जे व्रत अनुकूल।
खाने में पाप अपार, छाड़ें शुभ गति है सार॥
—क्रि० सि० क्रि०

द्विदल के भेद

अन्नद्विदल—मूंग, मोठ, अरहर, मसूर, उड़द, चना, कुलथी, आदि अनाज। काष्ठद्विदल—चारोली, बादाम, पिस्ता, लौंग, पानदाना आदि। हरीद्विदल—तोरई, भिण्डी, फरफुला, घीतोरई, खरबूजा, ककड़ी, पेठा, परवल, सेम, लौकी, करेला, खीरा आदि वा बीज युक्त पदार्थ। शिखरिन—भी अभक्ष्य अन्तर्गत मानी है। (दही खाँड़ में मीठा पदार्थ)। कांजी—सर्वथा अभक्ष्य है। (दही छाँछ में राई लूण मिला के बड़ा आदि मिलाना)।

दही बनाने हेतु शुद्ध जामन

दही बाँधे कपड़ा माहीं, जब नीर न बूँद रहाहीं।
तिहि की दे बड़ा सुखाई, राखे अति जतन कराई॥
प्रासुक जल में घोलीने, पयमाहीं जामन दीने।
मरयादा भाषी जेह, यह जावन सों लख लेह॥
अथवा रुपया गरमाई डारे पय में दधिथाई।

व्रत में विशेष

अंतराय पालो मतिसार, मौन सहित करिये आहार।
व्रत में हरी जिने नर खाय, सवर तासु अकारथ जाय॥

१-अष्टाह्निका व्रत

चौपाई

तीन बार इक बरष मझार, आषाढ़ कार्तिक फाल्गुण धार।
जो उत्कृष्ट विरत को करे, आठ आठ उपवास जु धरे॥
दूजो भेद कोमली जान, जिनमारग में करो बखान।
आठें के दिन कर उपवास, नौमी एकभुक्ति परकास॥
दशमी दिन काजी कर सार, पानी भात एक ही बार।
ग्यारसि अल्प असन कीजिये, छयघट तज इक्घट लीजिये॥
मुन सोधो बारस विधि येह, त्रिविध पात्र को भोजन देय।
अंतराय नहिं तिनको थाय, तो यह व्रत धर असन लहाय॥
अंतराय तिनको जो परे, तो उस दिन उपवासहि करे।
तेरस दिन आँवलि कीजिये, ताका विधि मयि सुन लीजिये॥
एक अन्न षट्रस विन जान, जल में मूक लेय इक ठान।
चौदश चित्तनेलड़ी थाय, भानतीरयुत मिरच लहाय॥
पूरणमासी को उपवास, कियें होय चिर को अघनाश।
यह कामली की विधि कही, जिन आगम में जैसी लही॥
आदि अन्त करिये एकन्त, दश दिन धरिये शील महन्त।
यह व्रत सरद धर मन लाय, सबे हरी तजिये दुखदाय॥
वसु एकासन विधियुत करे, सोइ जघन विधि आदरे।
घर आरम्भ तजे दुखदाय, शील सहित आरम्भ कराय॥
अब मरयादा सुन भविजीव, घरत्रिशुद्धतासों लख लीव।
सत्रह बरष शास्त्र इक जान, करिये गावन शास्त्र प्रधान॥
अथवा आठ बरष लौं जान, बीस चार तसु शास्त्र बखान।
पांच बरष कर पद्रह शास्त्र घर मन वच तन शुभ अभिलाष॥
तीन बरष नव शास्त्र प्रमान, एक बरष तिहुँ शास्त्र सुजान।
जैसी सकति दइ अनवास, सो विधि आदर कर भवनाश॥

सकति प्रमाण उद्यापन करे, नहिं तो दूनो व्रत आदरे।
विधि माफक तें भविजन करो, सुर नर सुख लहि शिव तिय वरो॥
जो नरनारी यह व्रत करे, निश्चय स्वर्ग मुकति पद वरे।
सकट रोग शोक सब जाहिं, दुख दरिद्रता दूर विलाहिं॥

—क्रियाकोष

भावार्थ—अष्टाह्निका व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है—आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुण। इन महीनों के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ होकर पूर्णमासी को यह व्रत पूर्ण होता है। यद्यपि इस व्रत की विधियाँ अनेक तरह की पाई जाती हैं तथापि उन सबमें तीन विधियाँ मुख्य हैं—

१—उत्तम विधि

सप्तमी के दिन एकाशन करके उपवास की प्रतिज्ञा करे, अष्टमी से पूर्णमासी तक ८ उपवास करे। पश्चात् एकम को पारणा करे। इसी दिन धर्मध्यान में व्यतीत करे।

२—मध्यमविधि (कोमली विधि)

१—सप्तमी के दिन एकाशन कर उपवास की प्रतिज्ञा कर, अष्टमी का उपवास करे, इस दिन की नन्दीश्वर संज्ञा है। 'ओं ह्रीं नन्दीश्वर सर्वाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१ ००० ०) एक लाख उपवास के बराबर है।

२—नवमी के दिन पारणा करे। इस दिन का अष्ट महाविभूति संज्ञा है। 'ओं ह्रीं अष्ट महाविभूतिसर्वाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१०६०००) एक लाख साठ हजार उपवास के बराबर है।

३—दशमी के दिन मिर्च पानी और चावल का आहार करे। इस दिन की त्रिलोकसार संज्ञा है। 'ओं ह्रीं त्रिलोकसारसर्वाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१०००००) एक लाख उपवास के बराबर है।

४—पंचमी के दिन एक बार अल्प आहार करे। इस दिन की चतुर्मुख संज्ञा है। 'ओं ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (५००००००) पाँच लाख उपवास के बराबर है।

५—छठमी के दिन आहार करे। इस दिन की पंच महाकल्याण संज्ञा है। 'ओं ह्रीं पंच महाकल्याणसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (८४००००००) चौरासी लाख उपवास के बराबर है।

६—सप्तमी के दिन घिर जल के साथ नीरस एक अन्न का आहार करे। इस दिन की स्वर्गसोपान संज्ञा है। 'ओं ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (४०००००००) चालीस लाख उपवास के बराबर है।

७—चतुर्दशी के दिन चावल, मिर्च और नमक का आहार करे। इस दिन की सर्वसम्पत्ति संज्ञा है। 'ओं ह्रीं सर्वसम्पत्तिसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१० ०००) एक लाख उपवास के बराबर है।

८—पूर्णमासी का उपवास करे। इस दिन का इन्द्रध्वज नाम है। 'ओं ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (३५००००००) तीन करोड़ पचास लाख उपवास के बराबर है।

३—अक्षय निधि

अष्टमी से पूर्णिमापर्यन्त एकाशन करे।

विधि—सप्तमी से एकाशन तक श्री जिन धर्मध्यान में ही व्यतीत करे। और पुष्प प्रकार शील पाले। अन्तराय टालकर मौन सहित आहार करे।

उपवास १—सात वार १ आहार(५२ आहार)। २—आठ वार (२४ आहार)।
३—पाँच वार (१५ आहार) ४—तीन वार (६ आहार)।
५—एक वार (१ आहार)।

शक्ति के अनुसार संयम धारण कर व्रत पूर्ण करे। …
का … … जाप्य न करे तब तक—ओं ह्रीं [illegible]

जिनालयेभ्यो नमः' इस समुच्चयमंत्र का जाप्य त्रिकाल करे। यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे। व्रत के दिनों में प्रत्येक दिन अभिषेक पूर्वक महोत्सव सहित पूजन करना चाहिये।

१—यह व्रत अयोध्या में कुसुमित सेठ के पुत्र श्रीवर्म, जयराम और जयकीर्ति ने किया, जिसके प्रसाद से श्रीवर्म हरिषेण चक्रवर्ती हुआ, और जयराम तथा जयकीर्ति अरिंजय और अमितंजय नाम के चारण मुनि हुए। बाद को ये तीनों ही मोक्ष गये।

२—इसी व्रत को मैनासुन्दरी ने किया जिसके प्रभाव से कोटीभट श्रीपाल राजा तथा उनके ७०० वीरों का गलित कुष्ट दूर हुआ।

३—यह व्रत सुलोचना ने भी किया सो वह उसके प्रभाव से सन्यास पूर्वक मरकर स्वर्ग गई।

४—यह व्रत अनन्तवीर्य ने भी किया सो वह चक्रवर्ती हुआ।

५—यह व्रत जरासिन्धु ने भी किया सो प्रतिनारायण हुआ।

इस तरह अनेकों ने इस व्रत को किया और अजर अमर पद प्राप्त किया। कहा भी है—

बहुयक नर नारी व्रत कियो, तिन सब अजर अमर पद लियो।

२—षोडश कारण व्रत

सोलह कारण विधि सुन लेय, जिन आगम में भाषी तेह।
भादों माघ चैत्र तिहुँ मास, मध्य करे चित धर उल्लास॥
वास इकांतर विधियुत करे, बीच दोय जीमन नहिं धरे।
सोलह बरस करे भवि लोय, उद्यापन कर छाड़े सोय॥
सकति नहीं उद्यापन तनी, करे दुगुन व्रत थी जिन भनी।
मध्यम पाँच बरस विधि जान, जघन कही इक वर्ष प्रमाण॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में भादों, माघ और चैत्र इन तीन महीनों में आता है। कृष्णपक्ष की एकम से द्वितीय मास की कृष्ण एकम तक

३२ दिन किया जाता है। उत्तम, मध्यम और जघन्य इस प्रकार तीन विधि से होता है।

१–उत्तम विधि—बत्तीस दिन के ३२ उपवास।

२–मध्यम विधि—सोलह उपवास और सोलह पारणा।

३–जघन्य विधि—बत्तीस एकाशन।

मर्यादा—उत्तम १६ वर्ष। मध्यम ५ वर्ष। और जघन्य १ वर्ष प्रमाण है। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न होय तो दूना करे।

'ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः' इस मंत्र का निकाल जाप करे।

यह व्रत राजगृही नगरी में सोमशर्मा ब्राह्मण की पुत्री भैरवी कन्या ने किया जिसके प्रसाद से स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग में महर्द्धिकदेव होकर फिर पूर्व विदेह में सीमंधर तीर्थंकर हुआ।

३—दशलक्षण व्रत

दश लक्षण याही परकार, उत्तमविध दशपोपह धार।
दूजो विधि छहवासर तनी, करे इकातर भाषै गणी॥
तीजी जघन विधि इम जान, करे इकातर दशदिन मान।
मर्यादा दश वरष प्रमाण, कही जिनागम माहिं सुजान॥

—क्रि० को०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है अर्थात् माघ, चैत्र और भाद्रपद। शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ होकर चतुर्दशी को पूर्ण होता है। इसकी तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—दश दिन के दश उपवास करना।

२—मध्यम विधि—पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी इन चार दिनों में उपवास और शेष छह दिनों में छह एकाशन।

३—जघन्य विधि—दश दिन के दश एकाशन

अर्हन्मुखकमलसमुद्भूतोत्तमक्षमादिदशलक्षणैकधर्मा

त्रिकाल जाप करे। दश वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे।

यह व्रत धातुकीखण्ड के पूर्व विदेह में सीतोदा नदी के तीर विशालातापुरी के राजा प्रीतंकर की पुत्री मृगाङ्कलेखा, मतिशेखर मंत्री की पुत्री कामलता, मतिसागर सेठ की पुत्री मदनवेगा, और लक्ष्मण पुरोहित की पुत्री रोहिणी इन चारों ने विधिपूर्वक किया था जिसके प्रभाव से दशवें स्वर्ग में देव हुए, और वहाँ से चय कर उज्जयिना नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ क्रमशः देवप्रभ, गुणचन्द्र, पद्मप्रभ और पद्मसारथी नाम के चार पुत्र हुए, और वे चारों पुत्र राज्यसुख भोगकर वैराग्य धारण कर कर्म क्षय कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सही, वरष माहिं तिहुँ वारहिं कही।
भादों माघ चैत पख श्वेत, वारसि कर एकान्त सु हेत॥
पोषह सकति प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तें तेलो करे।
पड़िमा दिनकर है एकन्त, पंचदिवस धर शील महन्त॥
वरष तीन मरयादा गहे, उद्यापन कर फुनि निरवहै।
सकतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छांडे सोय॥
—क्रि० को०

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुक्ल द्वादशी को मध्याह्न भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी चतुर्दशी और पूर्णिमा, इन तीनों दिन उपवास करे और पड़िमा के दिन पारणा करे। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयम पूर्वक व्यतीत करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त करे। शक्तिहीन होनेपर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत सुदर्शन मेरु के दक्षिण दिशा में विदेह क्षेत्र के कच्छावती

देश के मध्य वीतशोकपुर नगर में वैश्रवण राजा ने किया था जिसके प्रभाव से सर्वार्थसिद्धि में इन्द्र हुआ और वहाँ से चयकर मल्लिनाथ तीर्थंकर हुआ।

५—पुष्पाञ्जलि व्रत

अडिल्ल—भादों माघ रु चैत्र मास त्रय मध्य ही,
तिनके सितपक्ष में पुष्पाञ्जलि व्रत कही।
पंचमि तें उपवास पाँच नवमी लगे,
कियें पुण्य उपजाय पाप सगले भगें॥
पंचमि सातें नवमी वास त्रय ही करे,
छटि अरु अष्टमि के दिन काजी व्रत धरे।
छटि आठें अरु नवमि एकांत हि कीजिये,
दोयवास एकान्त तीन धर लीजिये॥

दोहा—वरष पाच लौं चरन यह, कर विशुद्धिता धार।
ताको फल उत्कृष्ट है यामें फेर न सार॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ल पंचमी से प्रारंभ होकर के नवमी को समाप्त होता है। इस व्रत की उत्तम, मध्यम और जघन्य भेद से तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—पंचमी से नवमी तक पाँच उपवास करे।

२—मध्यम विधि—पंचमी, सप्तमी और नवमी के दिन उपवास करे, षष्ठी और अष्टमी को एकाशन करे।

३—जघन्य विधि—पंचमी और नवमी का उपवास करे। षष्ठी, सप्तमी और अष्टमी का एकाशन करे।

इस प्रकार पाँच वर्ष करे। पश्चात् उद्यापन करे। प्रतिदिन व्रत के दिनों में—"ओं ह्रीं पंचमेरुस्थ अशीतिजिनालयेभ्यो नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह के मंगलावती देश सीता नदी के तटपर रत्नसंचयपुर नगर में ब्राह्मण की पुत्री प्रभावती ने ^

विसान जाप करे। रस नय पूर्ण होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे।

यह व्रत धातुकीखण्ड के पूर्वविदेह में सीतोदा नदी के तीर विशालापुरी के राजा प्रतापरुद्र की पुत्री मृगाक्षरखा, मतिशेखर मंत्री की पुत्री कामलता, मतिसागर सेठ की पुत्री सत्यरंगा, और ललमद्रा पुरोहित की पुत्री रत्नप्रिया इन चारों ने विधिपूर्वक किया था जिसके प्रभाव से दसवें स्वर्ग में देव हुए और वहाँ से चय कर उज्जयिनी नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ क्रमशः रत्नप्रभ, गुणचन्द्र, पद्मप्रभ और पद्मनाभि नाम के चार पुत्र हुए और वे राज्य सुख भोग कर वैराग्य धारण कर तप कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सही, वरष मध्य तिहुँ वारहिं यही।
भादों माघ चैत्र पख स्वेत, बारसि कर एकान्त सु हेत॥
पोषह सजनि प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तैं तेलो करै।
पड़िमा दिनत्रय है एकन्त, पंचदिवस धर शील महन्त॥
वरष तीन मरयादा गही, उद्यापन कर फुनि निरवही।
सकतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छाँडै सोय॥
—कि० को

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला द्वादशी को मध्याह्न भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा इन तीनों दिन उपवास करे और पड़िमा के दिन पारणा करे। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयम पूर्वक व्यतीत करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त करे। शक्तिहीन होनेपर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत सुदर्शन मेरु के दक्षिण दिशा में भरत क्षेत्र के कच्छावती

देश के मध्य वीतशोकपुर नगर में वैश्रवण राजा ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग में इन्द्र हुआ और वहाँ से चयकर मल्लिनाथ तीर्थंकर हुआ।

५—पुष्पाञ्जलि व्रत

अडिल्ल—भादों माघ रु चैत्र मास त्रय मध्य हो,
तिनके सितपक्ष में पुष्पांजलि व्रत कहो।
पंचमि तें उपवास पाँच नवमी लगे,
कियें पुण्य उपजाय पाप सगले भगें॥
पंचमि सातें नवमी वास त्रय हो करे,
छटि अरु अष्टमि के दिन कांजी व्रत धरे।
छटि आठें अरु नवमि एकान्त हि साजिये,
उपवास एकान्त तीन धर लाजिये॥
दोहा—वरष पाँच लौं वरत यह, कर त्रिशुद्धिता धार।
ताको फल उत्कृष्ट है, यामें फेर न सार॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ल पंचमी से प्रारंभ होकर नवमी को समाप्त होता है। इस व्रत की उत्तम, मध्यम और जघन्य ये तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—पंचमी से नवमी तक पाँच उपवास करे।

२—मध्यम विधि—पंचमी, सप्तमी और नवमी के दिन उपवास करे, छठी और अष्टमी को एकाशन करे।

३—जघन्य विधि—पंचमी और नवमी का उपवास करे। छठी, सप्तमी और अष्टमी का एकाशन करे।

इस प्रकार पाँच वर्ष करे। पश्चात् उद्यापन करे। प्रतिदिन व्रत के दिनों में 'ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनालयेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

यह व्रत जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह के मंगलावती देश स्थित नामी के नगर रत्नसंचयपुर नगर में ब्राह्मण की पुत्री प्रभावती ने किया था

विशत जाप्य करे। इस व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे।

यह व्रत धातुकीखण्ड के पूर्वविदेह विषें सीतोदा नदी के तीर विशालापुरी में रत्नप्रभ सेठ की पुत्री मृगांकरेखा, मतिशेखर मंत्री की पुत्री कामसेना, मतिसागर सेठ की पुत्री मदनवेगा, और लक्ष्मण पुरोहित की पुत्री रोहिणी इन चारों ने विधिपूर्वक किया था जिसके प्रभाव से दसवें स्वर्ग में देव हुए, और वहाँ से चय कर उज्जयिनी नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ क्रमशः रत्नप्रभ, गुणचन्द्र, पद्मप्रभ और पद्मसारिणी नाम के चार पुत्र हुए, और वे चारों पुत्र राज्यसुख भोगकर वैराग्य धारण कर कर्म नाश कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सही, वरष मध्य तिहुँ बारहिं कही।
भादों माघ चैत पख स्वेत, बारसि कर एकात सु हेत॥
पोषह सकति प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तें तेलो करे।
पड़िमा दिनकर है एकन्त, पचदिवस धर शील महन्त॥
बरष तीन मरयादा गहै, उद्यापन कर फुनि निरवहै।
सकतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छाँडे सोय॥
—क्रि० को०

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला द्वादशी को मध्याह्न भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा, इन तीनों दिन उपवास करे और प्रतिमा के दिन पारणा करे। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयम पूर्वक व्यतीत करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त करे। शक्तिहीन होनेपर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत सुदर्शन मेरु के पश्चिम दिशा में विदेह क्षेत्र के कच्छावती

जिसमें ग्यारह सौ लिंग कुक्कुट चालीसों स्वर्ग में देव हुए, और वहाँ से चय कर उसने रत्नशेखर चक्रवर्ती होकर मोक्ष प्राप्त किया।

६—मुष्टिविधान व्रत

मुष्टिविधान मासत्रय येह, भादों माघ रु चैत्र गनेह।
जिन दर्शन कर मुष्टि चढ़ाय, एक बार फिर अशन लहाय।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। कृष्णा एकम से शुरू होकर शुक्ला पूर्णिमा को एक मास में समाप्त होता है। प्रति दिन एक मुष्टि प्रमाण शुभ द्रव्य श्री जिनेन्द्र भगवान् के चरण कमलों के निकट चढ़ाकर अभिषेकपूर्वक चतुर्विंशति जिन महापूजन करे और 'ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। एक बार भोजन करे। व्रत एक वर्ष तक करे। समाप्त होने पर उद्यापन करे।

७—संकटहरण व्रत

संकटहरण व्रत तीनों मास, तेरसि तें दिन तीनों भास।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला त्रयोदशी से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। प्रति दिन त्रिकाल—'ओं ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उसा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूरा होने पर उद्यापन करे।

८—नित्यरसी व्रत

अडिल्ल—लूण दीत शशि हरी भौम मीठो हरे,
घृत बुध गुरुको दही दूध भृगु परिहरे।
तैल तजे शनि यहै परत पारा गहै
मरयादा जिमि नेम धरे निमि निरवहै॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—रविवार को नमक, सोमवार को हरा, मंगलवार को मीठा, बुधवार को घृत, गुरुवार को दही, शुक्रवार को दूध, और शनिवार को तैल का त्याग करे। यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। शक्तिअनुसार पक्ष, मास, दो मास आदि रूप से किया जा सकता है। व्रत पूर्ण अवधि पूर्ण होने पर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं श्री अर्हं नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

६—षट्रसी व्रत

दूध दही घृत तैल लूण मीठो सही,
तजै पाख दोय दोय सकल सस्या करि।
करे असन इकवार व्रती इम व्रत करे,
पक्ष बारह मरयाद षट्रसी [illegible]॥

भावार्थ—यह व्रत छह महीने में समाप्त होता है। [illegible] का त्याग करे। दूसरे में दही, तीसरे में घृत, चौथे में [illegible], छठवें में मीठा, इस प्रकार त्याग करे। 'ओं ह्रीं [illegible]' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। छह महीने समाप्त [illegible]।

१०—ज्येष्ठ जिनवर व्रत

करत जेष्ठ जिनवर भविलोय, ज्येष्ठ मास [illegible] सोय।
कृष्णपक्ष पडिमा उपवास, एकासन चौदह [illegible] वास।
प्रोषध शुक्ल प्रतिपदा करे, पुनि एकन्त [illegible] धरे।
ज्येष्ठमास के दिवस जु तीस, तासु सहित [illegible]।
वृषभनाथ जिन पूजा रचे, गीत नृत्य [illegible] सचे।
अति उच्छाह धर हिये मझार, करे [illegible] विचार।

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में एक बार [illegible]। [illegible] ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा तक। ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा का [illegible] करे, [illegible]

दिन में एकाशन करे। फिर चैत्र शुक्ल पड़िवा का उपवास करे। फिर १४ दिन तक १४ एकाशन करे। इस प्रकार एक महीने में २ उपवास और २८ एकाशन करे। प्रतिदिन बड़े उत्साहपूर्वक अभिषेक करे और श्री आदिनाथ पूजन करे। 'ॐ ह्रीं श्रीं वृषभजिनाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस व्रत की मर्यादा उत्तम २४ वर्ष, मध्यम १२ वर्ष, और जघन्य १ वर्ष की है। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत गुजरात देश की नमपुरी नगरी में सोम शर्मा ब्राह्मण के यज्ञदत्त पुत्र की स्त्री सोमश्री ने किया था जिसके प्रभाव से श्रीधर राजा की पुत्री कुम्भश्री हुई। मुनिराज के उपदेश से इस भव में भी यह व्रत धारण किया। प्रति दिन अभिषेक करके गंधोदक लाकर अपनी पूर्वपर्याय की सासु के शरीर को लगाकर कुष्ट रोग दूर किया। व्रत के प्रभाव से स्त्री लिंग छेदकर दूसरे स्वर्ग में देव हुई और भवान्तर में मोक्ष प्राप्त करेगी।

११—रविवार व्रत

प्रथम एक रविवार अषाढ, अष्टमि पूर्वो के विच माढ़।
श्रावण माहिं करे पुनि चार, चार वाम भादों महिं धार॥
वरष एक माहीं नववार, करे पार्श्व जिन अर्चा सार।
व्रत वरष नव लों निरधार, उद्यापन कर शक्ति मझार॥
उत्तम प्रोषध की विधि जान, आमिल दूजी जगत बखान।
तृतिय प्रकार कहो इक ठान, एक भुक्ति विधि चौथी जान॥
सयम शील सहित निरधार, वरष जु नवको यह विस्तार।
वरष एक में कीयो चहै, दीत आठ चालीश जु गहै॥
विधि वाही चहुँवार बखान, करे पार्श्व अभिषेक विधान।
कीजे उद्यापन तिहँसार, पीछे तजिये व्रत निरधार॥
उद्यापन की शक्ति न होय, दूनो व्रत करिये भविलोय।
इह विधि लख भविजन व्रत करो, ता फल तैं शिवतिय को वरो॥

—क्रियाकोष

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ल के अन्तिम रविवार से प्रारंभ होता है। आषाढ़ का रविवार १, श्रावण के ४, भाद्रपद के ४, इस प्रकार एक वर्ष में नौ (९) रविवार किया जाता है। इस प्रकार नौ वर्ष में ८१ रविवार होते हैं।

यदि थोड़े ही समयमें करने का भाव हो तो आषाढ़ के अन्तिम रविवार से बारह महीनों के ४८ रविवार कर पूर्ण करे।

इस व्रत की विधियाँ चार हैं

१—*उत्तम विधि*—प्रति रविवार को प्रोषधोपवास करना।
२—*दूसरी विधि*—आमिल (इमली-चावल) का भोजन लेना।
३—*तीसरी विधि*—एकलठाना (एक बार का परोसा भोजन) करना।
४—*चतुर्थ विधि*—एकाशन करना।

इस प्रकार जिस किसी विधि से व्रत करे। व्रत के दिन में पार्श्वनाथ अभिषेकपूर्वक पूजन करे। अवधि समाप्त होनेपर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे।

'ओं ह्रीं श्रीं अर्हं चिन्तामणिपार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत बनारस नगरी में मतिसागर सेठ की स्त्री गुणमाला ने किया था जिसके प्रभाव से अनेक सुख सम्पत्तियों सहित बिछुड़े हुए सातों पुत्र और बहुओं से पुनः समागम हो गया था।

१२—णमोकारपैंतीसी व्रत

अपराजित है मंत्र णमोकार, अक्षर तसु पैंतीस विचार।
करि उपवास वरण परिमाण, मानें सात करो बुधिवान॥
पुनि चौदा चौदशि गण सांच, पाँचें तिथि के प्रोषध पांच।
नवमी नव करिये [illegible] सब प्रोषध [illegible]

पैंतासी णवकार जु येह, जाप्यमत्र नवकार जयेह।
मन वच तन नरनारी करें, सुरनर सुख लह शिवतिय करे ॥
—क्रियाकोष

भावार्थ—यह व्रत हृदय धर अर्थात् एक मास और छह मास में समाप्त होता है, और इस व्रत की अवधि के भीतर निज पैंतीस दिन ही व्रत के होते हैं। आषाढ शुक्ल सप्तमी से यह व्रत शुरू होता है। इसकी विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम आषाढ शुक्ल सप्तमी का उपवास करे। फिर श्रावण की सप्तमी २, भादों की सप्तमी २, और आश्विन की सप्तमी २, इस प्रकार सात उपवास करे। पश्चात् कार्तिक कृष्णा पञ्चमी से पौष कृष्णा पञ्चमी तक अर्थात् पाँच पञ्चमियों के पाँच उपवास करे। फिर पौष कृष्णा चतुर्दशी से चैत्र कृष्णा चतुर्दशी तक सात चतुर्दशियों के सात उपवास करे। फिर चैत्र शुक्ला चतुर्दशी से आषाढ शुक्ला चतुर्दशी तक सात चतुर्दशियों के सात उपवास करे। फिर श्रावण कृष्णा नवमी से अगहन कृष्णा नवमी तक नव नवमियों के नव उपवास करे। इस प्रकार ३५ उपवास द्वारा व्रत पूरा करे। प्रतिदिन अभिषेक पूर्वक नवकार मंत्र पूजन करें पश्चात् उद्यापन करे।

इस णमोकार मंत्र पैंतीसी व्रत के प्रभाव से गोपाल नामक ग्वाला चम्पा नगरी में वृषभदत्त सेठ के यहाँ सुदर्शन नाम का पुत्र हुआ था और इस निमित्त पाकर वैराग्य धारण कर उसने कर्मों का नाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

१३—क्षपण क्रिया व्रत

क्षपण क्रिरिया की विधि जिसी, सुनिये बुध भाषी जिन तिसी।
आठें आठमूल गुणतनी, पाँचें पाँच अणुव्रत भनी ॥
तीन तीज गुणव्रत की धार, शिक्षाव्रत की चौथ जु चार।
तप बारह की बारसि जान, तिसका प्रोषध बारह ठान ॥
साम्य भाव की पड़िमा एक, ग्यारस प्रतिमा की दश एक।
चौथ चार चहुँदानहिं तनी, पड़िमा एक जल गालन भनी ॥
अनथमीय पड़िमा अघरोध, तीनहु तीज चरण दृग बोध।

ये त्रेपण प्रोषध जो करे, शील सहित तप को अनुसरे॥
सो नर तिय सुर नृप सुख पाय, अनुक्रम ते शिव धाम लहाय।
उद्यापन विधि करिये सार, सक्तीहीन दुगुण व्रत धार॥

—क्रि० को०

भावार्थ—यह व्रत तीन वर्ष, तीन मास और एक पक्ष में समाप्त होता है। इस तीन वर्ष, दो माह और एक पक्ष के अन्दर व्रत के दिन सिर्फ ५२ ही होते हैं। विधि इस प्रकार है—

प्रथम—आठ मूलगुण के आठ आठ के आठ उपवास करे।
दूसरे—पाँच अणुव्रत के पाँच पञ्चमियों के पाँच उपवास करे।
तीसरे—तीन गुणव्रत के तीन तीज के तीन उपवास करे।
चौथे—चार शिक्षाव्रत के चार चतुर्दशी के चार उपवास करे।
पाँचवें—बारह तप के बारह द्वादशियों के बारह उपवास करे।
छठवें—समता भाव की एक पड़िमा का एक उपवास करे।
सातवें—ग्यारह प्रतिमा के ग्यारह ग्यारसों के ग्यारह उपवास करे।
आठवें—चार दान के चार चतुर्दशियों के चार उपवास करे।
नवमें—जल गालन क्रिया की एक पड़िमा का एक उपवास करे।
दशवें—रात्रि भोजन त्याग की एक पड़िमा का एक उपवास करे।
ग्यारहवें—तीन रत्नत्रय के तीन तीजों के तीन उपवास करे।

व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे। त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप्य करे।

१४—नवकार व्रत

नमोकार व्रत अब सुन राज, सत्तर दिन एकान्तर साज।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत सत्तर दिन में समाप्त होता है। सत्तर एकाशने करे, प्रतिदिन त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप्य करे। पश्चात् उद्यापन

१५—चौबीस तीर्थंकर व्रत

तीर्थंकर चौबीसी सार, करे वास चौबीस विचार।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत २४ दिन में ही समाप्त होता है, २४ तीर्थंकरों के २४ उपवास करे। 'ओं ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१६—करमचूर व्रत

अष्ट करम चूरण व्रत जान, चौसठ दिन को कह्यो प्रमाण।
अष्टमि वसु केवल उपवास, अष्टमि आठ कांजिका आस।
अष्टमि वसु इक तंदुल खाय, अष्टमि आठ ग्रास इक पाय।
आठ अष्टमि कुरड़ी भोजन, अष्टमि वसु इक रस इक अन्न।
एकलठानो अष्टमि आठ, वसु अष्टमि रूक्षाहार सु ठाट।

दोहा—वरष दोय वसु मास में व्रत पूरा है येह।
शील सहित व्रत कीजिये दायक सुर शिव गेह॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत दो वर्ष ८ मास के भीतर ६४ दिन में समाप्त होता है। विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम आठ अष्टमियों के आठ उपवास करे।
२—दूसरे आठ अष्टमियों के आठ कांजिकाहार करे।
३—तीसरे आठ अष्टमियों को सिर्फ तंदुल भोजन करे।
४—चौथे आठ अष्टमियों को सिर्फ एक एक ग्रास भोजन करे।
५—पाँचवें आठ अष्टमियों को एक एक कुरड़ी भोजन करे।
६—छठवें आठ अष्टमियों को एकरस और एक अन्न का भोजन करे।
७—सातवें आठ अष्टमियों को एकलठाना करे।
८—आठवें आठ अष्टमियों को रूक्ष अन्न का भोजन करे।

इस प्रकार व्रत पूरा करके उद्यापन करे। ...
सिद्धपरमेष्ठिने नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१७—समकित चौबीसी व्रत

व्रत समकित चौबीसी भनो, ...

भावार्थ—यह व्रत ... व्रत पूरा होने के बाद उद्यापन करे। ... नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१८—भावनापचीसी व्रत

अडिल्ल—दशमी दश उपवास पचमी ...,
आठें वसु उपवास ...।
सब प्रोषध पचीस शीलयुत ...,
ये भावन पचीसी ...।

—...

भावार्थ—यह व्रत पचीस उपवास ... । जिनका ... निम्न प्रकार है—

१—प्रथम दश दशमियों के ...।
२—दूसरे पाँच पंचमियों के ...।
३—तीसरे आठ अष्टमियों के ...।
४—चौथे दो पड़िमाओं के ...।

उपवास पूरे होने पर उद्यापन करे। ... जाप्य करे।

अन्य प्रकार—

भावनपचीसी व्रत जान, एकान्तर पचास प्रमाण।

भावार्थ—यह व्रत पचास दिन में पूरा होता है। उपरोक्त विधि के अनुसार उपवासों के स्थान में दूने एकाशन करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। जाप्य उपरोक्त मंत्र का ही करे।

१६—लघु पल्लविधान व्रत

पल्ल विधान जु चौंतिस दिना, पचिस प्रोषध नव पारणा। एकहि ते पाँचहि लों चढ़े, फेर उतर पहिले लग अढ़े।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत चौंतीस दिन में पूरा होता है। विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम एक उपवास और एक पारणा।

२—दूसरे दो उपवास और एक पारणा।

—तीसरे तीन उपवास और एक पारणा।

४—चौथे चार उपवास और एक पारणा।

५—पाँचवें पाँच उपवास और एक पारणा।

६—छठवें चार उपवास और एक पारणा।

७—सातवें तीन उपवास और एक पारणा।

८—आठवें दो उपवास और एक पारणा।

६—नवमें एक उपवास और एक पारणा।

इस प्रकार चौंतीस दिन में २५ उपवास और ६ पारणा किये जाते हैं। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। त्रिकाल णमोकार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

२०—वृहद् पल्लविधान व्रत

सुनहु पल्लविधान व्रत, जिन आगम अनुसार। विरत बहत्तर कीजिये, बारह मास मझार॥

ए वरष एक में वास, सत्तर दुय आगम भाष।
धारणे धारणे सत, धरिये एकान्त महन्त॥
धर शील त्रिविध नर नारी व्रत करहु न ढील लगारी,
सुर है अनुक्रम शिव जाइ, विधि पद्म तनी यह गाइ।

—कि क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें ७२ दिन व्रत के होते हैं, अर्थात् ४८ उपवास, ८ तेला, ६ बेला, इस प्रकार ७२ दिन होते हैं। क्रम निम्न प्रकार है—

१—आश्विन कृष्णा—षष्ठी तथा तेरसी का उपवास।
,, शुक्ला—एकादशी, द्वादशी का बेला और चतुर्दशी का उपवास।
२—कार्तिक कृष्णा—द्वादशी का उपवास।
,, शुक्ला—तृतीया और द्वादशी का उपवास।
३—मगशिर कृष्णा—एकादशी का उपवास।
,, शुक्ला—तृतीया और द्वादशी का उपवास
४—पौष कृष्णा—द्वितीया और अमावस का उपवास।
,, शुक्ला—पंचमी, सप्तमी और पूर्णमासी का उपवास।
५—माघ कृष्णा—चौथ, सप्तमी और चतुर्दशी का उपवास
,, शुक्ला—सप्तमी अष्टमी का बेला और दशमी का उपवास।
६—फाल्गुन कृष्णा—पंचमी और षष्ठी का बेला।
,, शुक्ला—पड़िवा और एकादशी का उपवास।
७—चैत्र कृष्णा—पड़िवा दोज का बेला, तथा चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी और एकादशी का उपवास।
,, शुक्ला—सप्तमी और दशमी का उपवास।
८—वैशाख कृष्णा—चतुर्थी और दशमी का उपवास।
,, शुक्ला—द्वितीया तृतीया का बेला, तथा नवमी और त्रयोदशी का उपवास।

९—ज्येष्ठ कृष्णा—अष्टमी का उपवास तथा त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या का तेला।

,, शुक्ला—अष्टमी, दशमी, और पूर्णिमा का उपवास।

१०—आषाढ़ कृष्णा—दशमी का उपवास और त्रयोदशी, चतुर्दशी, मावस का तेला।

,, शुक्ला—अष्टमी, दशमी और पूर्णिमा का उपवास।

११—श्रावण कृष्णा—चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी और चतुर्दशी का उपवास।

,, शुक्ला—तृतीया का उपवास, द्वादशी त्रयोदशी का तेला और पूर्णिमा का उपवास।

१२—भाद्रपद कृष्णा—द्वितीया का उपवास, पंचमी और सप्तमी का तेला, तथा द्वादशी का उपवास।

,, शुक्ला—पंचमी, षष्ठी, सप्तमी का तेला तथा नवमी का उपवास, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी का तेला और पूर्णिमा का उपवास।

प्रतिदिन त्रिकाल जाप्य नमस्कार मंत्र का देना चाहिए। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करना चाहिए।

२१—नक्षत्रमाला व्रत

गीतका छन्द

अश्विनी नक्षत्र थकी जु वासर चार अधिक पचास ही,
तिहि मध्य एकासन सत्ताइस बीस सात उपासही।
युत शील मन वच तन विशुद्धहि धर विवेकी चाय सों,
माला नक्षत्र सु नाम व्रततें छूटिये विधि दाय सों॥

—कि० वि० को०

भावार्थ—यह व्रत चौवन दिन में समाप्त होता है। प्रथम अश्विनी नक्षत्र के दिन से प्रारम्भ करे। प्रथम दिन उपवास, दूसरे दिन पारणा,

तीसरे दिन उपवास, चौथे दिन पारणा इस क्रम से ~३ उपवास और २७ पारणा करता हुआ क्रम से ५४ दिन पूरे करे। प्रतिदिन त्रिकाल णमो कार मंत्र का जाप्य देवे। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे।

अन्य प्रकार

व्रत नक्षत्रमाला उर धरे, भव चौवन एकान्तर धरे।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यदि उपवास की शक्ति न हो तो ५४ एकाशन कर व्रत समाप्त करे।

७२—लब्धिविधान व्रत

भादों माघ चैत्र विधि ठान, धरि पड्रस एकान्तर ठान।
पडिया दोयज तीज प्रवाण, थापे तेला कर विधि मान॥
सक्ति प्रमाण जु पोषहिं धरे, चौथे दिन एकासन धरे।
पाचों दिवस शील को पाल, तीन वरष व्रत करहिं सम्हाल॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्णा अमावस्या से शुरू होता है, प्रथम अमावास्या को एकाशन करे। फिर पडिवा, दौज और तीज का तेला करे। चतुर्थी को एकाशन करे। इस प्रकार प्रतिवर्ष भाद्रपद, माघ और चैत्र में करे। तीन वर्ष समाप्त होने पर उद्यापन करे। ओं ह्रीं श्री महावीरस्वामिने नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य देवे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

दूसरी विधि

दूजी विधि आगम यह कहै, पडिया तीजहि प्रोषध गहै।
दोयज दिवस करे एकान्त, यह मरयाद वरष त्रय मन्त॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—भादों, माघ और चैत्र मास में शुक्ल पडिया और तीज का उपवास करे। दोयज तथा चतुर्थी को पारणा करे। इस प्रकार तीन वर्ष पूर्णकर उद्यापन करे।

तीसरी विधि

पड़िवाँ तीज एकात करेय, दोयज को उपवास धरेय।
मर्यादा भादों नव वष, करिये भवि मनमें धर हर्ष॥
पाँच दिवस लों पाले शील, स्वर्गादिक सुख पावे लील।
पुन उत्तम नर पदवी लहे, दीक्षा धर शिवतिय कर गहे।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—भादों, माघ और चैत्र मास में शुक्ल पड़िवा और तीज का एकाशन तथा दोयज का उपवास। और चौथ का एकाशन। इस प्रकार नौ वर्ष पूरे कर उद्यापन करे।

वाराणसी नगरी के राजा विश्वसेन की रानी विशालनयना तथा उसकी चमरी और रंगा नाम की सखियों ने मुनि निंदा कर तीव्र पाप उपार्जन किया था जिसके फलस्वरूप बहुत काल तक अनेक कुयोनियों में भ्रमण करती हुई उज्जयिनी नगरी के पास पलाश नाम के ग्राम में एक शूद्र के घर तीनों पुत्रियाँ हुईं जो बहुत ही कुरूपा थीं। इनके माता पिता जन्मते ही मरण को प्राप्त हो गये थे, इनके कुत्सित व्यवहार के कारण ग्रामवासियों ने इन तीनों को ग्राम से निकाल दिया था। ये तीनों भ्रमण करती हुई पाटलीपुर के उद्यान में पहुँचीं। वहाँ इन्हें मुनिराज के दर्शन हुए। उनके उपदेशामृत से प्रभावित होकर तीनों ने लब्धिविधान व्रत लिया, और बहुत श्रद्धा तथा भक्ति पूर्वक उसे किया। अन्त में मरण कर व्रतके प्रभाव से पाँचवें स्वर्ग में देव हुईं। वहाँ से चयकर विशालनयना का जीव तो मगध देशके बाड़वनगर में काश्यपगोत्रीय शांडिल्य ब्राह्मण की स्थण्डिला स्त्री के गौतम नाम का पुत्र हुआ। जो महावीर स्वामी के समवशरण में प्रथम गणधर हुआ। कुछ काल बाद केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया। तथा चमरी और रंगा के जीव स्वर्गसे चयकर मनुष्यपर्याय प्राप्त कर तप द्वारा कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

२३—सप्तकुम्भ व्रत

सप्तकुंभ व्रत बासठ दिना, प्रोषध धर पैंतालिस दिना।
सत्रह पारने के दिन जान, सप्तकुंभव्रत धर उर ठान॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ६२ दिन में पूरा किया जाता है जिसमें ४५ उपवास और सत्रह पारणा होते हैं। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे, यथाशक्ति मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

२४—लघु सिंहनिष्क्रीडित व्रत

दोहा—सिंहनिष्क्रीडित व्रततनो, कहूँ विधान बखान।
विधिस्यों कीजे भावयुत, कर्मनिर्जरा ठान॥

चालछंद—कर प्रथम एक उपवास, पुन दोय एक तिहुँ जास।
दोय चार तीन पण कीजे, चव पाँच पाँच कर दीजे॥
चहुँ पाँच तीन चहुँ दोई, तिहुँ एक दोय इक होई।
सब वास साठ गण लीजे, तसु बीस पारणा कीजे॥
अस्सी दिन में व्रत येह, कर कह्यो जिनागम येह।
यह तप शिव सुख का दायक, कीनो पूरव मुनिनायक॥

—कि० सिं० क्रि०

यह व्रत ८० दिन में पूरा होता है जिसमें ६० उपवास और २० पारणाएं होती हैं। यथा—

१—एक उपवास, एक पारणा, २—दो उपवास एक पारणा,
—एक उपवास एक पारणा, ४—तीन उपवास एक पारणा,
५—दो उपवास एक पारणा, ६—चार उपवास एक पारणा,
७—तीन उपवास एक पारणा, ८—पाँच उपवास एक पारणा,
९—चार उपवास एक पारणा, १०—पाँच उपवास एक पारणा,
११—पाँच उपवास एक पारणा, १२—चार उपवास एक पारणा,

१ —पाँच उपवास एक पारणा, १४—तीन उपवास एक पारणा,
१५—चार उपवास एक पारणा, १६—दो उपवास एक पारणा,
१७—तीन उपवास एक पारणा, १८—एक उपवास एक पारणा,
१९—दो उपवास एक पारणा, २०—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार यह व्रत ८० दिन में समाप्त होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप करना चाहिये।

२५—बृहत्सिंहनिष्क्रीडित व्रत

बृहत्सिंहक्रीडित व्रत सुनो, इकसौ सतहत्तर दिन गनो।
इक सौ पैंतालिस उपवास, करै पारणे बत्तिस जास।

भावार्थ—यह व्रत १७७ दिन में समाप्त होता है, जिसमें १४५ उपवास और ३२ पारणा होते हैं, यथा—

१—उपवास एक पारणा एक, २—उपवास दो पारणा एक,
३—उपवास एक पारणा एक, ४—उपवास तीन पारणा एक,
५—उपवास दो पारणा एक, ६—उपवास चार पारणा एक,
७—उपवास तीन पारणा एक, ८—उपवास पाँच पारणा एक,
९—उपवास चार पारणा एक, १०—उपवास छह पारणा एक,
११—उपवास पाँच पारणा एक, १२—उपवास सात पारणा एक,
१३—उपवास छह पारणा एक, १४—उपवास आठ पारणा एक,
१५—उपवास सात पारणा एक, १६—उपवास नौ पारणा एक,
१७—उपवास आठ पारणा एक, १८—उपवास सात पारणा एक,
१९—उपवास आठ पारणा एक, २०—उपवास छह पारणा एक
२१—उपवास सात पारणा एक, २२—उपवास पाँच पारणा एक,
२३—उपवास छह पारणा एक, २४—उपवास चार पारणा एक,
२५—उपवास पाँच पारणा एक, २६—उपवास तीन पारणा
२७—उपवास चार पारणा एक, २८—उपवास दो पारणा।

२९—उपवास तीन पारणा एक, ३०—उपवास एक पारणा एक,
३१—उपवास दो पारणा एक, ३२—उपवास एक पारणा एक,

इस प्रकार यह व्रत १७७ दिन में समाप्त होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिये। व्रत समाप्ति के बाद उद्यापन करना चाहिये।

२६—भाद्रपदसिंहनिष्क्रीडित व्रत

भाद्रपदसिंहनिष्क्रीडित जान, छय शत दिन ताको परिमाण।
इकसौ पचहत्तर उपवास, करे पारणा पचिस जास॥

भावार्थ—यह व्रत २०० दिन में समाप्त होता है जिसमें १७५ उपवास और २५ एकाशन होते हैं। यथा—

१—उपवास एक पारणा एक, २—उपवास दो पारणा एक,
३—उपवास तीन पारणा एक, ४—उपवास चार पारणा एक,
५—उपवास पाँच पारणा एक, ६—उपवास छह पारणा एक,
७—उपवास सात पारणा एक, ८—उपवास आठ पारणा एक,
९—उपवास नौ पारणा एक १०—उपवास दश पारणा एक,
११—उपवास ग्यारह पारणा एक, १२—उपवास बारह पारणा एक
१३—उपवास तेरह पारणा एक १४—उपवास तेरह पारणा एक
१५—उपवास बारह पारणा एक १६—उपवास ग्यारह पारणा एक,
१७—उपवास दश पारणा एक, १८—उपवास नौ पारणा एक,
१९—उपवास आठ पारणा एक, २०—उपवास सात पारणा एक,
२१—उपवास पाँच पारणा एक, २२—उपवास चार पारणा एक,
२३—उपवास तीन पारणा एक, २४—उपवास दो पारणा एक,
२५—उपवास एक पारणा एक।

इस प्रकार २०० दिन में व्रत समाप्त करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

२७—त्रिगुणसार व्रत

त्रिगुणसार व्रत इकतालीस, ग्यारा जेवा प्रोषध तीस।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४१ दिनों में पूरा होता है जिसमें ३० उपवास और ११ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा, २—एक उपवास एक पारणा,
३—दो उपवास एक पारणा, ४—तीन उपवास एक पारणा,
५—चार उपवास एक पारणा, ६—पाँच उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा, ८—चार उपवास एक पारणा,
९—तीन उपवास एक पारणा, १०—दो उपवास एक पारणा,
११—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार ४१ दिन में व्रत समाप्त करे, प्रतिदिन त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

२८—बारा सो चौंतीसा (चारित्रशुद्धि) व्रत

अडिल्ल छन्द—

दोयज पाँचैं आठैं ग्यारस चौदशी,
इनके प्रोषध करे सकल अघ जो नशी।
दश प्रोषध इक मास में इम पख के भये,
एक वरष के इक से वीस मिल सब ठये।
पूरण है दश वर्ष सार्ध त्रय मास में,
हैं बारासौ चौंतिस प्रोषध जास में।
सम्यक चारित्त तनी भावना चित गहैं,
बारह सौ चौंतीसा व्रत मुनिजन कहैं।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत १० वर्ष, ३ माह और १५ दिन में समाप्त होता है जिसमें १२३४ उपवास होते हैं। अर्थात् प्रत्येक माह की दो नौमी, दो पचमी, दो अष्टमी, दो एकादशी और दो चतुर्दशी, इस प्रकार एक माह में १० उपवास किये जाते हैं, इस व्रत का प्रारम्भ भाद्रपद शुक्ला पड़िमा से होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल जाप्य 'ओं ह्रीं असि आ उसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः' मन्त्र का देना चाहिये। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करना चाहिये।

यह व्रत उज्जैन नगरी के राजा हेमवर्मा ने किया था जिसके प्रभाव से तीसरे भव में विदेह क्षेत्र की विजयापुरी नगरी में धनजय राजा के चन्द्रभानु नाम का तीर्थंकर पुत्र हुआ और पंचकल्याणक प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

२९—सर्वतोभद्र व्रत

व्रत जो सर्वतोभद्र विचार, सौ दिन की मरयादा धार।
प्रोषध पचहत्तर परवान, अरु पच्चीस पारने जान।
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एकसौ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ७५ उपवास और २५ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा,	२—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा,	४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा,	६—चार उपवास एक पारणा,
७—पाँच उपवास एक पारणा,	८—एक उपवास एक पारणा,
९—दो उपवास एक पारणा,	१०—तीन उपवास एक पारणा,
११—दो उपवास एक पारणा	१२—तीन उपवास एक पारणा,
१३—चार उपवास एक पारणा,	१४—पाँच उपवास एक पारणा,
१५—एक उपवास एक पारणा,	१६—पाँच उपवास एक पारणा,
१७—एक उपवास एक पारणा,	१८—दो उपवास एक पारणा,

१९—तीन उपवास एक पारणा, २०—चार उपवास एक पारणा,
२१—तीन उपवास एक पारणा, २२—चार उपवास एक पारणा,
२३—पाँच उपवास एक पारणा, २४—एक उपवास एक पारणा,
२५—सौ उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत समाप्त करे। विशाल नमस्कार मंत्र का जाप करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

३०—महासर्वतोभद्र व्रत

महा सर्वतोभद्र व्रत जान, दोसो पैंतालिस दिन मान।
इकसौ छ्यानवे दिन उपवास, करे पारने सब उनचास॥

—सुरेन्द्र-तरंगिणी

भावार्थ—यह व्रत दो सौ पैंतालीस दिन में पूरा होता है जिनमें एक सौ छ्यानवे उपवास और उनचास पारणे होते हैं—

१—एक उपवास एक पारणा, २—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा, ४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा, ६—छह उपवास एक पारणा,
७—सात उपवास एक पारणा, ८—एक उपवास एक पारणा,
९—दो उपवास एक पारणा, १०—तीन उपवास एक पारणा,
११—चार उपवास एक पारणा, १२—पाँच उपवास एक पारणा,
१३—छह उपवास एक पारणा, १४—सात उपवास एक पारणा,
१५—एक उपवास एक पारणा, १६—दो उपवास एक पारणा,
१७—तीन उपवास एक पारणा, १८—चार उपवास एक पारणा,
१९—पाँच उपवास एक पारणा, २०—छह उपवास एक पारणा,
२१—सात उपवास एक पारणा, २२—एक उपवास एक पारणा,
२३—दो उपवास एक पारणा, २४—तीन उपवास एक पारणा,
२५—चार उपवास एक पारणा, २६—पाँच उपवास ए

३५—वृन्द जिनगुणसम्पत्ति व्रत

चालछंद

जिनगुण सम्पत्ति व्रत धार, सुनिये तिनको अनधार,
दश अतिशय जिन जन मत ही, लीये उपजे सब सत ही।
उपजो जब केवलज्ञान, दश अतिशय प्रगटे जाम,
दम अतिशय बीस जु केरी, कर बीस दसें सुख घेरी।
देवन कृत अतिशय जानो, चौदश चौदह तिहि ठानो,
वसु प्रातिहार्य जिनदेव, वसु आठें करिये एव।
भावन सोलह कारण की, पडिमा सोलह परनी की,
पाचों कल्याणक जाकी, पाँचें पाँचों कर ताकी।
प्रोषध ये त्रेसठ जानो, युत शील भविक जन ठानो
उत्तम सुर नर सुख पावे, अनुक्रमतें शिवपुर जावे।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत १० मास में समाप्त होता है, जिसमें त्रेसठ उपवास होते हैं। यथा—

१—प्रथम जन्म के दश अतिशयों के दश दशमी के उपवास करे।

२—दूसरे केवलज्ञान के दश अतिशयों के दश दशमी के उपवास करे।

३—तीसरे देवकृत चौदह अतिशयों के चौदह चतुर्दशियों के उपवास करे।

४—चौथे आठ प्रातिहार्यों के आठ अष्टमियों के उपवास करे।

५—पाँचवें षोडश कारण भावना के सोलह पडिमा के उपवास करे।

६—छट्ठवें पाँचों कल्याणकों के पाँच पंचमियों के उपवास करे।

इस प्रकार ६३ उपवास द्वारा व्रत पूर्ण करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत पाटलीपुर नगर में नागदत्त सेठ की स्त्री सुमति सेठानी ने किया था जिसके प्रभाव से अनेक सुख भोगकर अनुक्रम से हस्तिनागपुर में

धेरथ नाम का राजा हुआ था और भगवान आदिनाथ का आहार दान देकर संसार से विरक्त होकर तप द्वारा कर्मनाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया और मोक्ष को प्राप्त हुए।

३६—मध्यम जिनगुणसम्पत्ति व्रत

जिनगुण सम्पत् उपवासह दीस, प्रोषध दत्तिस पारणा तीस।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ६६ दिन में समाप्त होता है जिसमें २६ उपवास और ३० पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा	२—एक उपवास एक पारणा
३—एक उपवास एक पारणा	४—एक उपवास एक पारणा
५—एक उपवास एक पारणा	६—एक उपवास एक पारणा
७—एक उपवास एक पारणा	८—एक उपवास एक पारणा
९—एक उपवास एक पारणा	१०—एक उपवास एक पारणा
११—एक उपवास एक पारणा	१२—एक उपवास एक पारणा
१३—एक उपवास एक पारणा	१४—एक उपवास एक पारणा
१५—एक उपवास एक पारणा	१६—एक उपवास एक पारणा
१७—एक उपवास एक पारणा	१८—एक उपवास एक पारणा
१९—एक उपवास एक पारणा	२०—एक उपवास एक पारणा
२१—एक उपवास एक पारणा	२२—एक उपवास एक पारणा
२३—एक उपवास एक पारणा	२४—एक उपवास एक पारणा
२५—एक उपवास एक पारणा	२६—एक उपवास एक पारणा
२७—एक उपवास एक पारणा	२८—एक उपवास एक पारणा
२९—एक उपवास एक पारणा	३०—एक उपवास एक पारणा

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं अर्हन्त परमेष्ठिने नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

३७—लघु जिनगुण संपत्ति व्रत

लघुजिन गुण संपति त्रेसठ्ठि, कर एकान्तर पूज्य प्रमेट्ठि।

भावार्थ—यह व्रत त्रेसठ दिन में पूरा किया जाता है, इसमें ६३ एकाशन होते हैं। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

३८—बृहत्सुखसंपत्ति व्रत

पडिमा इक दोयज दोइ, तिहुँ तीज चौथ चहुँ जोई।
पाचैं पण छट्टि छह आनो, सातैं पुनि सात बखानो॥
आठैं के प्रोषध आठ, नवमी नव आगम पाठ।
दशमी दश ग्यारस ग्यारे, बारस के प्रोषध बारे॥
तेरस के तेरा लीने, चौदशि के चौदह कीजे।
पद्रसि पद्रह शिवकारी, बीस रु सौ प्रोषध धारी॥
यह सुख संपति व्रत नीको, भव भव सुखदायक जी को।
मन वच काया शुद्ध कीजे, भविजन नरभव फल लीजे॥

—कि० सि० कि०

यह व्रत १२० दिन में पूरा किया जाता है जिसमें १२० उपवास होते हैं, यथा—

१—एक पडिमा का एक उपवास,
२—दो दोयज के दो उपवास,
३—तीन तीज के तीन उपवास,
४—चार चौथ के चार उपवास,
५—पाँच पञ्चमियों के पाँच उपवास,
६—छह षष्ठिया के छह उपवास,
७—सात सप्तमियों के सात उपवास,
८—आठ अष्टमियों के आठ उपवास,
९—नौ नवमियों के नौ उपवास,
१०—दश दशमियों के दस उपवास,
११—ग्यारह एकादशिया के ग्यारह उपवास,
१२—बारह द्वादशियों के बारह उपवास,
१३—तेरह त्रयोदशिया के तेरह उपवास,
१४—चौदह चतुर्दशियों के चौदह उपवास,
१५—पन्द्रह पन्द्रसियों के पन्द्रह उपवास।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। त्रिकाल णमोकार मन्त्र का जाप्य करे।

३६—मध्यम सुखसपत्ति व्रत

सुख सपति दिन इकसोवीस, पूर्यो मावस प्रोपध दीस।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है, जिसमें १२० उपवास होते हैं। यथा—प्रत्येक मास की पूर्णिमा और अमावास्या के दिन उपवास करे। इस प्रकार २१ वर्ष में १२० उपवास द्वारा व्रत पूरा कर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४०—लघु सुखसपत्ति व्रत

षोड़श तिथि प्रोपध षट्दश, लघुवत सुखदाय अनेकस।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत सोलह दिन में पूर्ण होता है। जिस किसी भी मास की शुक्ल पड़िमा से कृष्ण पड़िमा तक १६ दिन के १६ उपवास करे। प्रतिदिन त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

४१—रुद्रवसत व्रत

रुद्रवसत चवालिस दिना, पैंतिस प्रोपध नव पारणा।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत चवालीस दिन में पूरा होता है, जिसमें ३५ उपवास और नव पारणा होते हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा, २—तीन उपवास एक पारणा,
३—चार उपवास एक पारणा, ४—पाँच उपवास एक पारणा,
५—छह उपवास एक पारणा, ६—छह उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा, ८—तीन उपवास एक पारणा,
९—एक उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूर्ण करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

४२—शीलकल्याणक व्रत

दोहा—शीलकल्याणक व्रत तनो, भेद सुनो जे सन्त।
मन वच काय विशुद्धि कर, धारो भवि हरषन्त॥

चाल छंद

तिरयंच रु नर सुर नारी, चौथी चिन चेतन सारी।
पंच इन्द्रियातें चहुँ गुनिये, तिन संख्या बीस जु मुनिये॥
मन वच तन तें ते बीस, गुनिये हुं तीस रु तीस।
कृत कारित अनुमोदन तें, गुनिये पुन साठहिं गनतें॥
इकसौ अस्सी हुए जोई, प्रोषधकर भविधर सोई।
इक वरष माँहि निरधार, करिये पूरण व्रत सार॥
इक दिन उपवास जु कीजे, दूजे दिन असन सुलीजे।
तीजे दिन फिर उपवास, इम करहु इकांतर तास।
इकसौ अस्सी पर्यन्त, इतने ही उपवास करन्त।
दिन साढे तीनसौ धीर, पालें नित शील गहीर॥
यह शीलकल्याणक नाम, व्रत है बहुविध सुखधाम।
तीर्थंकर पदवी पावे, समकित युत व्रत जो ध्यावे॥
—कि० सि० कि

भावार्थ—यह व्रत ३६० दिन में पूरा होता है जिसमें १८० उप
और १८० पारणायें होतीं हैं। यथा—देवी १ मनुष्यनी २ तिर्यंचनी
अचेतनी ४ इन चारों को पाँच इन्द्रियों से गुणा किया तो २० हु
फिर २० को मन, वचन, काय, इन तीन से गुणा तो ६० हुए।
६० को कृत, कारित, अनुमोदना इन तीन से गुणा १८ हुए। इन ए
अस्सी शील के भेदों के १८ उपवास करे। एक उपवास, एक पार
इस क्रम से १८० उपवास व १८० पारणायें करे। एक वर्ष पूर्ण होन
उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप करे।

४३—श्रुतिकल्याणक व्रत

श्रुति कल्याणक दिवस पचीस, पच पच दिन ब्योरो दीस।
प्रोषध कजिक एकलठानो, रूक्ष जु अनागार पहिचानो॥
श्रुतिकल्याणक यह विधि धार, श्रुतहि पढन कर लेय आहार॥
—कि० वि० कि

भावार्थ—यह व्रत पचीस दिन में पूरा होता है। यथा—प्रथम पाच दिन के ५ उपवास करे। फिर दूसरे पाँच दिन काजिक आहार करे। तीसरे पाँच दिन एकलठाना करे। चौथे पाँच दिन रूक्ष आहार करे। पाँचवें पाँच दिन मुनिवृत्ति से आहार कर। इस प्रकार २५ दिन पूरा होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। शास्त्र स्वाध्याय के बाद आहार करे।

४४—चद्रकल्याणक व्रत

चद्रकल्याणक दिवस पच्चीस, पाच पाच दिन ब्योरे दीस।
प्रोषध कजिक एकलठान, रूक्ष जु अनागार पहिचान।
चद्रकल्याणक व्रत विधि येह, मन वच तन करिये भविलोय।
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत २५ दिन में पूरा होता है। जिसमें प्रथम पाँच दिन उपवास, दूसरे पाँच दिन काजिक भोजन, तीसरे पाँच दिन एकलठाना, चौथे पाँच दिन रूक्ष भोजन, पाँचवें पाँच दिन मुनिवृत्ति से भोजन कर। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४५—लघुकल्याणक व्रत

लघुकल्याणक व्रत दिनपच, एक एक दिन वहि विधि सच।
प्रोषध कजिक एकलठान, रूक्ष जु अनागार पहिचान।

भावार्थ—यह व्रत पाँच दिन में पूरा होता है। विधि प्रथम १ दिन उपवास, दूसरे १ दिन कांजिक भोजन, तीसरे १ दिन एकलठाना, चौथे १ दिन रूक्ष भोजन, पाँचवें १ दिन मुनिवृत्ति से भोजन करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

४६—मध्यकल्याणक व्रत

मध्य कल्याण जु तेरा दिना, आदि अंत दुय प्रोषध गिना।
एकल चार कंजिका तीन, रूक्ष जु अनागार दुय दून॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत १३ दिन में पूर्ण होता है। यथा—प्रथम एक उपवास, दूसरे चार दिन एकलठाना, तीसरे कांजिकाहार, चौथे २ रूक्ष भोजन, पाँचवें २ दिन मुनिवृत्ति से आहार, छठवें १ उपवास। इस प्रकार १३ दिन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

४७—श्रुतस्कंध व्रत

दोहा—श्रुतस्कंध व्रत तीन विधि, उत्तम मध्य कनिष्ठ।
षोडश प्रोषध तीस दुय वासर माहिं गरिष्ठ॥
दश प्रोषध दिन बीस में, मध्यम विधि लख लेह।
चसु प्रोषध इक पक्ष में, है कनिष्ठ व्रत येह॥
कथन विशेष कथा महा, भादों माहि करेय।
त्रिविधि जिनेश्वर भाषियो करके कर्म उच्छेद॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद मास में किया जाता है। इसकी विधियाँ तीन प्रकार हैं—१ उत्तम विधि, २ मध्यम विधि, ३ जघन्य विधि।

१—*उत्तम विधि*—भाद्रपद कृष्णा एकम से आश्विन कृष्णा एकम तक २२ दिन में १६ उपवास और सोलह पारणा।

२—मध्यम विधि—भाद्रपद में २० दिन में १० उपवास और १० पारणाएँ करना।

३—जघन्य विधि—१६ दिन में ८ उपवास और ८ पारणाएँ करना।

'ॐ ह्रीं श्रीं जिनमुखोद्भूत स्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः'

इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत के पूर्ण समाप्त होने के बाद उद्यापन करे।

अन्य विधि

श्रुतस्कंधव्रत अब आदरे, बत्तिस दिवस एकांत करे।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ३२ दिन में पूरा होता है जिसमें ३२ एकाशन होते हैं। उपरान्त मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत समाप्त होने के बाद उद्यापन करे।

यह व्रत पूर्व विदेह में पुष्कलावती देश के पुंडरीक नगर में राजा गुणभद्र की पट्टरानी गुणवती ने सीमंधर स्वामी के निकट धारण किया था, जिसके प्रभाव से चौथे भव में पश्चिम विदेह कुमुदवती देश के अशोकपुर नगर में पद्मनाभि राजा की पट्टरानी जितपद्मा के गर्भ से पद्मधर नाम का तीर्थंकर हुआ जो तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती और कामदेव इन तीन पदों से युक्त था, और नीति पूर्वक राज्य भोगकर संसार से उदास होकर जिनदीक्षा ग्रहण कर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

४८—श्रुतज्ञान व्रत

दोहा—प्रोषधव्रत श्रुतज्ञान के जिनवर भाषे जेम।
सकल आठ चउ एकसो बुधि सुन भवि धर प्रेम॥

चौपाई

शुक्ल पक्ष में व्रत कर सार, षोडश तिथि के मध्य विचार।
सोलह पडिमा प्रोषध धार, सित मित कर पख में निरधार॥
और कहूँ तिथि तिन कर तीज, चौथ चार पण पञ्चमी लीज।
छह छुटि सातें सात बखान, आठें आठ नमें नव जान॥

दशमी दश ग्यारह ग्यारसी, प्रोषध कर बारह बारसी।
तेरसि तेरह मास बखान चौदश चौदह प्रोषध ठान॥
पून्यो के पन्द्रह उपवास, मावस पन्द्रह करिये तास।
शील सहित प्रोषध सब करे, भवभव के संचित अघ हरे॥
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत १२ वर्ष ८ माह में समाप्त होता है जिसमें १४८ उपवास होते हैं, यथा—

१—सोलह पड़िवा के सोलह उपवास, २—तीन तीज के तीन उपवास,
३—चार चौथ के चार उपवास ४—पाँच पञ्चमी के पाँच उपवास,
५—छह छठी के छह उपवास ६—सात सप्तमी के सात उपवास,
७—आठ अष्टमी के आठ उपवास, ८—नौ नवमी के नव उपवास,
९—दश दशमी के दश उपवास १०—ग्यारह ग्यारसी के ग्यारह उपवास,
११—बारह द्वादशी के बारह उपवास १२—तेरह त्रयोदशी के तेरह उपवास
१३—चौदह चतुर्दशी के चौदह उपवास १४—पन्द्रह पूर्णमा के पन्द्रह उपवास,
१५—पन्द्रह अमावस के पन्द्रह उपवास

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४६—पंचश्रुतज्ञान व्रत

पंच श्रुतज्ञानहिं व्रतसार, कर उपवास निरंतर धार।
इकसौ अड़सठ दिन परमान, जब चाहे आरंभे ठान॥
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ३३६ दिन में समाप्त होता है, जिसमें १६८ उपवास और १६८ पारणे होते हैं। एक उपवास एक पारणा इस अनुक्रम से करे। ओं ह्रीं पंचश्रुतज्ञानाय नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५०—ज्ञानपचीसी व्रत

अडिल्ल—प्रोषध चौदह चौदशि के विधियुत करे,
ऐसे ग्यारा ग्यारसि के प्रोषध करे।
सब उपवास पचीस शील व्रतयुत धरे,
ज्ञान पचीसी यम्न जिनागम इम करे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पचीस दिन में पूरा होता है, अर्थात् चौदह पूर्व के चौदह चतुर्दशी के उपवास और ग्यारह अंग के ग्यारह एकादशियों के उपवास कुल २५ करे। 'ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५१—वृहद् रत्नावलि व्रत

व्रत रत्नावलि वृहद् बखान, त्रयशत छ्यासठ दिन परवान।
प्रोषध सबै तीनसै करे, छ्यासठ तहाँ पारणा धरे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत ३६६ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ३०० उपवास और ६६ पारणाएं होती हैं। इस व्रत को किसी मास से प्रारंभ करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५२—मध्यम रत्नावलि व्रत

चाल छंद

रत्नावलि मध्यम करिये, प्रोषध तीजहिं सुदि धरिये।
पचमि अष्टमि उपवास, सितपक्ष तिहूं उपवास॥
दोयज पचमि अघहारी, आठैं प्रोषध सुखकारी।
इक मास माहिं छह जानो, इक वर्ष बहत्तर ठानो॥
उद्यापन शकति प्रमाण, करके तजिये मतिमान।
दृग युत अरु शील धरीने, तातैं उत्तम फल लीजे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें बहत्तर उपवास होते हैं। यथा—प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष में २, ५, ८, इन तिथियों में उपवास करे। तथा कृष्णपक्ष में २, ५, ८, इन तीन तिथियों में उपवास करे। इस प्रकार एक मास में ६ उपवास करे, १२ मास के कुल बहत्तर उपवास कर। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

अन्य प्रकार

मध्यम रत्नावलि व्रत और, प्रोषध सत्ये बहत्तर ठौर।
शुकल पचमी छटि इकदशी, कृष्ण दोज छटि अरु द्वादशी॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—इस व्रत की दूसरी विधि भी है यथा—शुक्लपक्ष की ५, ६, ११, तथा कृष्णपक्ष की २, ६, १२ इस प्रकार प्रति मास ६ उपवास करे। १२ मास के कुल ७२ उपवास कर। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

५३—लघु रत्नावलि व्रत

लघु रत्नावलि इकतालीस, ग्यारह जेवा प्रोषध तीस।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४१ दिन में पूर्ण होता है जिसमें ३० उपवास और ११ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा, २—एक उपवास एक पारणा,
३—दो उपवास एक पारणा, ४—तीन उपवास एक पारणा,
५—चार उपवास एक पारणा, ६—पाँच उपवास एक पारणा,
७—पाँच उपवास एक पारणा, ८—चार उपवास एक पारणा,
९—तीन उपवास एक पारणा, १०—दो उपवास एक पारणा,
११—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

५४—[illegible] व्रत

अडिल्ल छन्द—एक [illegible] पारहीं,
चार [illegible]।
[illegible]
[illegible] ॥

—कि० वि० कि०

भावार्थ—यह व्रत [illegible] दिन ५ [illegible] और
६ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास [illegible] पारणा,
२—तीन उपवास [illegible] एक पारणा,
५—पाँच उपवास [illegible] पारणा,
७—तीन उपवास [illegible] एक पारणा,
९—एक उपवास [illegible] पारणा,

इस प्रकार व्रत पूरा [illegible] नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल
जाप्य करे।

५५—[illegible] व्रत

मुक्तावलि [illegible] पारणे [illegible]।
मध्यम मुक्तावलि [illegible] भवि [illegible] ॥

—[illegible]

भावार्थ—यह [illegible] है जिसमें ४९ [illegible]
और १३ पारणे होते हैं। [illegible] और [illegible]
नमस्कार मन्त्र का [illegible]

५६—[illegible] व्रत

चालछन्द—मुक्तावलि [illegible]
[illegible] करिये [illegible]
पहलो [illegible]

असोज कृष्ण छठि तेरस, उजयारी करिये द्वारस,
कातिक वदि बारस नाम, सुदि तीज रु द्वारस ठाम।
मगसिर वदि द्वारस जानो, प्रोषध सुदि तीजहि ठानो,
नव-नव प्रतिवर्ष गहीजे, प्रोषध इक अस्सी कीजे।
पूरो नव वर्ष मझारी, शुतशील करहु नर नारी,
तातें फल पावै मोटो मिटहै विधि उदय जु खोटो।

—क्रि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत नव वर्ष में पूर्ण होता है जिसमें प्रत्येक वर्ष में नौ उपवास होते हैं, कुल ८१ उपवास होते हैं यथा—

भाद्रपद शुक्ल ७, असोज कृष्ण ६–१३, असोज शुक्ल ११, कार्तिक कृष्ण १२, कार्तिक शुक्ल ३–१२, मगशिर कृष्ण १२, मगशिर शुक्ल ३, इस प्रकार एक वर्ष में ९ उपवास करे। कुल ९ वर्ष के ८१ उपवास पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। और ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत दुर्गन्धा नाम की ब्राह्मण की पुत्री ने किया था जिसके प्रसाद से प्रथम स्वर्ग में देव हुई और वहाँसे चयकर मथुरा में श्रीधर राजा के यहाँ पद्मरथ नाम का पुत्र हुआ था और वासुपूज्य स्वामी के समवशरण में दीक्षा लेकर उनका गणधर हुआ और कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

५७—एकावलि व्रत

अडिल्ल छंद—सुनहु भविक एकावलि व्रत विधि है जिसी,
सुक्ल प्रतिपदा पंचमि अष्टमि चौदशी॥
कृष्ण चतुर्थी अष्टमि चौदशि जानिये,
चौरासी उपवास वरष मध ठानिये॥

—क्रि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें ८४ उपवास होते हैं। किसी भी मास की शुक्ल प्रतिमा से प्रारम्भ होता है। शुक्ल १, ५, ८, १४ तथा कृष्ण ४, ८, १४ प्रत्येक मास की इन सात तिथियों के उपवास करे। इस प्रकार १२ मास के ८४ उपवास करे। त्रिकाल नम स्कार मन्त्रका जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५८—लघु एकावलि व्रत

लघु एकावलि चौबिस ठान, चोबिस प्रोषध कर मत ध्यान ॥

—हरिवंशपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४८ दिनमें पूर्ण होता है, जिसमें २४ उपवास और २४ पारणायें होती हैं। किसी भी मास की किसी भी तिथिसे प्रारम्भ करे। एक उपवास, एक पारणा इस क्रमसे करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्रका त्रिकाल जाप्य करे।

५९—द्विकावलि व्रत

दोहा—विधी द्विकावलि व्रत्त की, श्री जिन भाषी नाम।
बेला सात जु मास में, धरिये सुन तिन नाम ॥
चाल छंद-सित पक्ष थकी व्रत लीजे, पडिमा द्वितिया बेला कीजे,
पुन पाँचें षष्ठी जानो, आठें नवमी पुन ठानो।
चौदश पून्यो गिन लेह, बेला चहुँ सित पक्ष एह,
तिथि चौथ पचमी धारी, आठें नवमी सुविचारी ॥
चौदश मावस परवान, पक्ष कृष्ण करे इम ठान,
इम सात मास इक माहीं, बारा मासहिं इक ठाहीं।
चौरासी बेला कीने, उद्यापन कर दाबीजे,
इस व्रतमें सुरशिव पावे, सुख की तहाँ ओर न आवे ॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में पूर्ण होता है जिसमें ८४ उपवास होते हैं। यथा—इस व्रत को किसी भी मास से शुरू करें।

शुक्ल पक्ष की तिथियाँ–

१–प्रतिपदा और द्वितीया का बेला।
२–पंचमी और षष्ठी का बेला।
३–अष्टमी और नवमी का बेला।
४–चौदश और पूर्णो का बेला।

कृष्ण पक्ष की तिथियाँ–

१–चौथ और पंचमी का बेला।
२–अष्टमी और नवमी का बेला।
३–चौदश और मावस का बेला।

इस प्रकार एक मास में ७ बेला करे। इसी प्रकार १२ मास के ८४ बेला करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

६०—लघु द्विकावलि व्रत

लघुद्विकावलि इकसो बीस, बेला करे हरष चौबीस।
इक हारे अड़तालिस और, सब पारणे चौबिस जोर।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत १२० दिन में समाप्त होता है, जिसमें २४ बेला, ४८ एकाशन, २४ पारणा—इस प्रकार १२० होते हैं। प्रथम बेला १, फिर पारणा १, फिर एकाशन २, इस क्रमसे करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्रका त्रिकाल जाप्य करे।

६१—वृहद्कनकावलि व्रत

गुरुकनकावलि व्रत दिन जान, दिन जु पांच सै बाइस जान।
प्रोषध कर चौ से चालीस, जेवा सवे अठासी दीस॥

यह व्रत ५२२ दिन में पूर्ण होता है जिसमें चारसौ चौंतीस उपवास और अठासी पारणे होते हैं। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

६२—लघु कनकावलि व्रत

चाल छन्द—

कनकावलीय व्रत तैसो, आगम भाष्यो सुन जैसो।
सित पक्ष एकी उपवास, करिये विधि सुनिये तास॥

प्रोषध सित पडिमा कीजे, पुन वास पचमी लीजे।
सुदि की दशमी पुन करही, वदि द्वितिया छट वारसही॥
इक मास मध्य छह कीजे, करिये भवि भाव धरीजे।
उपवास बहत्तर जास, इक वरष मध्य कर तास।

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें ७२ उपवास होते हैं। यथा—किसी भी एक मास से प्रारंभ करे। शुक्ल पक्ष की पड़िमा, पंचमी और दशमी का उपवास, कृष्ण पक्ष में द्वितिया, षष्ठी और द्वादशी का उपवास, इस प्रकार प्रत्येक माह में ६ उपवास कर १२ मास के ७२ उपवास कर व्रत पूर्ण करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

६३—लघुमृदंगमध्य व्रत

दोय वास फिर असन फेर तिहुँ चहुँ करे,
पाच वास धर चार तीन द्वय अनुसरे।
दिवस तीन में वास कहे तेवीस हैं,
लघु मृदंग मध्य सात पारणा युत गहे॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक मास में पूरा किया जाता है जिसमें २३ उपवास और सात पारणाएँ होती हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा, २—तीन उपवास एक पारणा
३—चार उपवास एक पारणा ४—पाँच उपवास एक पारणा
५—चार उपवास एक पारणा ६—तीन उपवास एक पारणा
७—दो उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूर्णकर उद्यापन करे। और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

६४—बृहत् मृदंगमध्य व्रत

गीतिका छंद

उपवास इक कर दोय धारे, तीन चहुँ पण छह धरे।
पुन सात आठ र चंद नयनों कर पसु सात जु करे॥
छह पाँच चार रु तीन दय इक वास इकयासी गहे।
मिरदंगमध्य जु नाम द्वादश पारणा सत्रह गहे।
—कि० कि० कि०

भावार्थ—यह व्रत ९८ दिन में पूरा होता है जिसमें ८१ उपवास और १७ पारणाएँ होती हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा,
२—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा,
४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा,
६—छह उपवास एक पारणा,
७—सात उपवास एक पारणा,
८—आठ उपवास एक पारणा,
९—नौ उपवास एक पारणा,
१०—आठ उपवास एक पारणा,
११—सात उपवास एक पारणा,
१२—छह उपवास एक पारणा,
१३—पाँच उपवास एक पारणा,
१४—चार उपवास एक पारणा,
१५—तीन उपवास एक पारणा,
१६—दो उपवास एक पारणा,
१७—एक उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। और नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

६५—मुरजमध्य व्रत

मुरजमध्य व्रत तैंतीस जान, छब्बिस प्रोषध जेवा सात।
—वर्धमानपुरा[illegible]

भावार्थ—यह व्रत तैंतीस दिन में पूरा होता है जिसमें २६ उप[illegible] और ७ पारणाएँ होती हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा, २—तीन उपवास एक पारणा,
—चार उपवास एक पारणा, ४—पाँच उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा, ६—चार उपवास एक पारणा,
७—तीन उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे, और त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

६६—वज्रमध्य व्रत

वज्रमध्य व्रत दिन अड़तीस, बेला नव प्रोषध उनतीस।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत अड़तीस दिन में पूरा होता है, जिसमें २९ उपवास और नव पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा, २—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा, ४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा, ६—पाँच उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा, ८—तीन उपवास एक पारणा,
९—दो उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे, और नमस्कार मन्त्र त्रिकाल जाप्य करे।

६७—मेरुपंक्ति व्रत

चौपाई

वरत मेरुपंकति जो नाम तासु करनविधि सुन अभिराम।
द्वीप अढ़ाई मध्य सुजान, पाँच मेरु ज्यों प्रकट बखान॥
जम्बू द्वीप सुदर्शन सही, विजय सु पूर्व धातुकी मही।
अपर धातुकी अचल प्रमाण, प्राची पुष्कर मंदिर मान।
पुष्कर अपर विद्युन्मालिनी, पंचमेरु वन थान सम्हालिनी।
तिनमें असी चैत्यग्रहसार, तिनके व्रत प्रोषध निरधार।

सुनहु सुदर्शन भूधर जेह, भद्रशाल वन चहुँदिशि तेह।
जिनमंदिर तिहि चार बखान, प्रोषध चार एकान्तर ठान।
पीछे बेलो कीजे एक, वन सौमनस दूसरो टेक।
चार जिनेश्वर भवन प्रकाश, चार वास पुन बेलो तास।
नंदन वन जिन प्रोषध चार, पाछैं ताके बेलो धार।
पाडुक वन चहुँ जिनवर गेह, ताके चहुँ प्रोषध धर एह।
पुन बेलो धारा भविसार, मेरु सुदर्शन यह विस्तार।
प्रोषध सोलह बेला चार, व्रत दिन चहुँ चालीस मझार।
चालीस उपवास बखान बीस जु तास पारणा जान।
ऐसे अनुक्रम धरिये भव्य, पंच मेरु व्रत विधि सौं सव्व।
इनमें अंतर पाडे नाहीं, लगते प्रोषध बेला माहीं।
सब प्रोषधको ऐसो जोड, बेला बीस करे चित मोड।
प्रोषध सबे एकसौ बीस, करे पारणा अस्सी दीस।
सकल वास बेला बिच जान, बीस इकांत कहे जु बखान।
ऐसे बीस दिवस जानिये, वरत मेरु पकति मानिये।
सात महाना दिन दशमाँहि, सकल वरत इम पूरण थाहि।
शील सहित शुभ व्रत पालिए, हीन उदय विधिके टालिए।
सुरपद पावे संशय नाहीं, अनुक्रम भव लहि शिवपुर जाहीं।
—कि० सि० क्रि

भावार्थ—यह व्रत ७ महीने और १० दिन में पूरा होता है। जिसमें ८० उपवास, २० बेला, और १०० पारणायें होती हैं। इस व्रत को भाद्र[illegible] निज माहसे प्रारम्भ करे। विधि—

१—सुदर्शन मेरु—भद्रशालवन के चैत्यालय ४ के ४ उपवास और ४ पारणाएं। फिर एक बेला और एक पारणा। इस प्रकार उपवास ४, बेला १, पारणा ५ हुए।

	प्रोषध	बेला	पारणा
इसी प्रकार नन्दन वन के	४	१	५
,, सौमनस वन के	४	१	५
,, पाडुक वन के	४	१	५

इसी प्रकार कुल मिलाकर—

	प्रोषध	बेला	पारणा
सुदर्शनमेरु के	१६	४	२०
विजयमेरु के	१६	४	२०
अचलमेरु के	१६	४	२०
मंदिरमेरु के	१६	४	२०
विद्युन्मालामेरु के	१६	४	२०

इस प्रकार पाँचों मेरु के उपवास ८०, बेला २०, पारणा १०० हुए—बेला २० के दिन ४०, कुल दिन २२० हुए।

जाप्य मन्त्र– ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अस्सीजिनालयेभ्यो नमः। इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। यदि पृथक् २ करना हो तो निम्न प्रकार करे—

१–ओं ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

२–ओं ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

३–ओं ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

४–ओं ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

५–ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे।

६८—अक्षयनिधि व्रत

व्रत अक्षैनिधि को उपवास, श्रावण सुदि दशमी कर तास।
भादों वदि दशमी जब होय, तिनहू के प्रोषध अवलोय॥
और सकल एकांत जु करे, सो दश वर्षहिं पूरी करे।
उद्यापन कर छाँडे ताहि, नातर दूनो करिये आहि॥

भावार्थ—यह व्रत दश वर्ष में पूरा होता है। प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी और भाद्रपद कृष्ण दशमी का उपवास करे। शेष बीच के २८ दिनों में एकाशन करे। इस प्रकार दश वर्ष तक व्रत करे। पश्चात् उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत राजगृही नगरी में राजा मेघनाद ने किया था जिसके प्रभाव से वह पहले स्वर्ग में देव हुआ और वहाँ से चयकर मनुष्य पर्याय प्राप्त कर तप द्वारा कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

६९—मेघमाला व्रत

चौपाई

बरत मेघमाला तसु नाम, भादव मास करे सुखधाम।
प्रोषध पड़िमा तीन बखान, आठें दुहुँ चोदशि दुहुँ जान॥
सात वास चौबीस एकात, त्रिविध शीलयुत करिये सत।
वरष पाँचलों तसु मरयाद, सुरसुख पावे युत अहलाद॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है। यथा—

भाद्रपद कृष्ण १, ८, ४ तथा शुक्ला ८ १४ और असोज कृष्ण १ इन सात तिथियों के प्रतिवर्ष उपवास करे। शेष २४ दिन एकाशन करे। इस प्रकार ५ वर्ष तक करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

यह व्रत कौशाम्बी नगरी में धनागन सेठ और उसकी पद्मश्री सेठानी ने किया था जिसके प्रभाव से वे दोनों जीव स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए और वहाँ से चयकर मनुष्य होकर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

७०—सुखकारण व्रत

अडिल्ल छन्द—एकवास एकत एक अनुक्रम करे,
मास चार पक्ष एक इकान्तर इम धरे।

देव शास्त्र गुरु पूज सवें व्रत धर सदा,
नाम तास सुखकरण हरन दुख जिन वदा।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत ४ मास और १५ दिन में समाप्त होता है। किस किसी मास की पड़िमा से यह व्रत शुरू करे। पड़िमा का उपवास, दोयज का पारणा, तीज का उपवास, चौथ का पारणा, इस अनुक्रम से ४॥ मास करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

७१—समवशरण व्रत

दोहा—श्वेत किसन चौदश तनी, प्रोषध बीस रु चार।
शील सहित भविजन करें, समोशरण व्रत सार॥
—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। प्रत्येक चतुर्दशी का उपवास करना। चौबीस चतुर्दशी पूर्ण होने पर उद्यापन करे। 'ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशाय सकलगुणकरण्डाय श्रीसर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

७२—आकाशपचमी व्रत

भादव सुदि पचमि उपवास, करे व्रत पचमि आकाश।
वरष पाँच मरयादा जास, शील सहित प्रोषध धर तास॥
—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है। प्रतिवर्ष भादपद शुक्ल पचमी को उपवास करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत सोरठ देश के तिलकपुर नगर में भद्रशाह सेठ की पुत्री विशाला ने कि … के प्रसाद से वह चौथे स्वर्ग में मणिभद्र …

का त्व हुआ था, और वहाँ से च्य कर उज्जैन नगर मे प्रियसुंदर राजा के यहाँ सदानन्द नाम का पुत्र हुआ और न्त बतेक काल राज्योचित सुख भोगकर जिन दीक्षा ग्रहण कर कर्मनाश कर मोक्ष को प्राप्त हुआ।

७३—अक्षयफलदशमी व्रत

श्रावण सुदि दशमाको सही, अक्षयदशमि व्रतको जन कही।
प्रोषध करे शील युत सार, तसु मर्याद वरष दश धार॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत दस वर्ष में पूर्ण होता है। प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी के दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

७४—निर्दोषसप्तमी व्रत

भादों सुदि सातें निर्दोष, वरत करे प्रोषध शुभ कोष।
मन वच काय शील व्रत पाल, सात वरष उद्यापन काल॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत सात वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतवर्ष भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को उपवास करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

यह व्रत पटना नगर के पृथ्वीपाल राजा तथा अर्हद्दास सेठ ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग में देव हुए।

७५—चंदनषष्ठी व्रत

भादों वदि छठि दिन उपवास, चंदन षष्ठी व्रत धर तास।
मन वच काय शील व्रत पाल, छ मर्याद वरष छह जास॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत छह वर्ष मे पूर्ण होता है। प्रति वर्ष भादों कृष्ण षष्ठी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

यह व्रत उज्जैनी नगरी में जिनदत्त सेठ के पुत्र दृढ़रथचन्द्र तथा उसकी पत्नी चन्दना ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

७६—सुगन्धदशमी व्रत

व्रत सुगंध दशमी को जान, भादों सुदि दशमी दिन ठान।
प्रोषध करे वरष दश सही, शील सहित मरयादा गही॥
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत दश वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला दशमी को उपवास करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रतपूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत मगध देश के वसन्ततिलक नगर में विजयसेन राजा की पुत्री दुर्गन्धा ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गसुख भोगकर मनुष्य होकर मोक्ष प्राप्त किया।

७७—अनन्तचतुर्दशी व्रत

भादों सुदि चौदशि दिन जान, व्रत अनन्त चौदशि को ठान।
तीर्थंकर चौदहों अनंत, रचे पूज सो जीव महंत॥
प्रोषध करे शीलयुत सार, चौदह वरष लगे निरधार।
उद्यापन विधि कर वह तजे, सो जन स्वर्गादिक सुख भजे॥
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत चौदह वर्ष में पूर्ण होता है। प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी के दिन उपवास करे। अनन्तनाथ पूजन विधान रचे। 'ओं नमोऽर्हते भगवते अनन्तो अनन्तदर्शनलीय अनन्तकेवलणाणें अनन्तकेवल दर्शणें अणुपूज्जवासयों अनन्त अनन्तागमकेवलि स्वाहा' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। यदि इस मन्त्र का न कर सके तो—'ओं ह्रीं अर्हं हं स अनन्त केवलिने नमः' इस मन्त्र का जाप्य देवे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

विशेष—यह व्रत भाद्रपद शुक्ला ११ से शुरू होता है इसलिये ११, १२, १३ का एकाशन, चौदश का उपवास और पूनम का एकाशन। इस तरह पाँच दिन किया जाता है।

यह व्रत अयोध्या नगरी के पास पद्मखण्ड नामक ग्राम में सोमशर्मा ब्राह्मण तथा उसकी स्त्री सोमा ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गादिक सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

७८—श्रवणद्वादशी व्रत

भादों सुदि द्वादशि व्रत जान, श्रवण द्वादशी जो अभिराम।
बारह बरष लगे जो करे, शील सहित प्रोषध अनुसरे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत बारह वर्ष में पूर्ण होता है। प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला द्वादशी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत मालवा प्रान्त के पद्मावतीपुर नगर में नरब्रह्मा राजा तथा उसकी शीलवन्ता नाम की पुत्री और विनयवन्तमा नाम की माता, इन तीनों ने किया था, जिसके प्रभाव से स्वर्गादिक सुख भोगकर तीनों ने मोक्ष प्राप्त किया।

७९—श्वेतपंचमी व्रत

आषाढ़ फाल्गुण कातिक पक्ष, सितपंचमि तें व्रतकों लेह।
पैंसठ प्रोषध करिये ताम, बरष पाच पाच परिमास॥
श्वेतपंचमी को व्रत धार, त्रिविध शुद्ध धारो नरनार।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष और पाँच महीने में समाप्त होता है। आषाढ़ कार्तिक या फाल्गुन इन तीनों मासों में से किसी एक मास में प्रारम्भ करे। प्रति मास शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन उपवास करे। इस

प्रकार ६५ उपवास पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

८०—शील व्रत

चाल छन्द—अब सुनहु शीलव्रत सार, जैसो आगम निरधार।
वैशाख सुक्ल छठ लीजे, प्रोषध उपवास करीजे।
अभिनंदन जिनवरमोख, कल्याणक दिन सब पोख।
शुभ शीलव्रत तसु नाम, कर पंच वरष सुखधाम।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूर्ण होता है, जिसमें पाँच उपवास होता है। प्रति वर्ष वैशाख शुक्ल छठी के दिन (अभिनन्दन प्रभु का मोक्ष कल्याणक है) उपवास करे 'ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

८१—सर्वार्थसिद्धि व्रत

गीतिका छंद—कार्तिक सुक्ल अष्टमि दिवसतें अष्टवास जु कीजिये।
तसु आदि अंत एकन्त दश दिन, शील सहित गणीजिये॥
जिनराज श्रुत गुरु पूज्य उत्सव, सहित नृत्यादिक करें।
सर्वार्थसिद्धि जु नाम व्रत यह, मोक्ष सुख को अनुसरें।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत दश दिन में पूर्ण होता है जिसमें आठ उपवास और दो पारणायें होती हैं। यथा—सप्तमी को एकाशन व्रत की प्रतिज्ञा करे। अष्टमी से पूर्णमासी तक ८ उपवास करे और एकम को पारणा करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

८२—तीनचौबीसी व्रत

दोहा—व्रत चौबीसी तीन को, सुक्ल भाद्रपद तीज।
प्रोषध कीने शीलयुत, सुर शिव सुख ...

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण तृतीया के दिन किया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन उपवास करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

८३—जिनमुखावलोकन व्रत

दोहा—जिन मुख अवलोकन करत, करिये भादों मास।
जिन मुख देखे प्रात उठ, अवर न देखे तास॥
चालछंद-प्रोषध इक मास इकंतर, कांजी जुत करिये निरंतर।
अथवा चन्द्रायण करहूँ, लघु सक्ति एकान्तर धरहूँ।
सख्या धर वस्तु जु केरी, तातैं नहिं अधिको लेई।
यह बात महा सुखदाई, चहुँ गति भव भ्रमण नशाई।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक मास में पूरा किया जाता है। भाद्रपद कृष्ण पडिमा से असोज कृष्ण पड़िमा तक प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त में उठकर (जब किसी का मुँह न देखे) प्रथम ही श्री जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन करे। इस प्रकार एक मास करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनपर उद्यापन करे।

इस व्रत मे भोजन की विधियाँ पाँच है—

१–उपवास—तीस दिन उपवास करना।

२–कांजिक—पानी के साथ सिर्फ (भात चावल) खाना।

३–चान्द्रायण—पहिले दिन १ ग्रास, दूसरे दिन २ ग्रास, तीसरे दिन ३ ग्रास, इस प्रकार १ १ ग्रास बढाकर १५ ग्रास तक करे। फिर घटाकर से १ १ ग्रास कम कर एक तक कम करे। इसके आदि और अन्त मे उपवास करे।

४–एकाशन—सिर्फ एक ही बार भोजन करे।

५–परिमितवस्तु—भोग्य सामग्रियों का प्रमाण कर उससे अधिक न खाना। इन पाँचों मे से अपने सामर्थ्यानुसार विधि करे।

९०—कर्मनिर्जरा व्रत

सवैया

दर्शन के निमित्त आषाढ़ सुदी चौदश,
श्रावण की चौदशि सुज्ञान काज कीजिये।
भादों सुदि चोदशि को प्रोषध चरित्र केरो,
तपयोग चोदशि असोज सुदि लीजिये।
ये ही चार प्रोषध बरष माहिं विधिसेती
कर्म निर्जरनी व्रत सुन लीजिये।
धनश्रीय सेठ सुता करके सुरपद पायो
अजों भविभाव करनेकों चित्त दीजिये।

—कि० वि० कि०

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ला चौदशि से प्रारंभ होता है अर्थात् दर्शन विशुद्धि निमित्त आषाढ शुक्ला चतुर्दशी का उपवास करे। दर्शन विशुद्धि भावना भावे। 'ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यग्ज्ञान भावना के निमित्त श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का उपवास करे। सम्यग्ज्ञान भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यक्चारित्र के निमित्त भाद्रपद शुक्ला १४ को उपवास करे। सम्यक् चारित्र भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः'

८६—रुक्मणी व्रत

सवैया

लक्ष्मीमती के जीवने पूर्वभव माहि व्रत कीनो
यह श्वेत भाद्रपद आठें प्रोषध आदायकें।
दोय याम धारणे और चार उपवास दिन
पूजा रचै दोय याम पारणो बनायकें।
कीनो आठ वरष लों शुद्ध भाव देहि त्याग
अच्युत सुरेश इन्द्राणी पद पायकें।
भइ रुक्मणी कृष्ण वासुदेव पटतिया,
रुक्मणी नाम व्रत जानो चित लायकें।

—कि० सि० कि०

भावार्थ—यह व्रत आठ वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को एकाशन कर व्रत ग्रहण कर। अष्टमी का उपवास, नवमी का पारणा, दशमी का उपवास, एकादश का पारणा, द्वादशी का उपवास, तेरस का पारणा, चतुर्दशी का उपवास और पूर्णमासी को पारणा कर। इस प्रकार प्रतिवर्ष आठ वर्ष तक ४ उपवास ४ पारणा, और १ पारणा करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य कर।

यह व्रत लक्ष्मीमती ब्राह्मणी के जीव ने धारण किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गादिके सुख भोगकर कुंडलपुर नगर में राजा भीष्म के यहां रुक्मिणी नाम की पुत्री हुई, जो सौराष्ट्र देश में द्वारावती नगरी के राजा कृष्णचंद्र (वासुदेव) की पट्टरानी हुई, और अंत में अपने पुत्र प्रद्युम्नकुमार के साथ दीक्षा लेकर उत्तम गति को प्राप्त हुई।

६०—कर्मनिर्जरा व्रत

सवैया

दर्शन के निमित्त आषाढ़ सुदी चौदश,
श्रावण की चौदशि सुज्ञान काज कीजिये।
भादों सुदि चौदशि को प्रोषध चरित्र केरो,
तपयोग चौदशि असोज सुदि लीजिये।
ये ही चार प्रोषध बरष माहिं विधिसेती
कर्म निर्जरनी व्रत सुन लाजिये।
धनश्रीय सेठ सुता करके सुरपद पायो
अनों भविभाव करवेकों चित्त दाजिये।

—कि० सि० कि०

भावार्थ—यह व्रत आषाढ शुक्ला चौदश से प्रारंभ होता है अर्थात् दर्शन विशुद्धि निमित्त आषाढ शुक्ला चतुर्दशी का उपवास करे। दर्शन विशुद्धि भावना भावे। 'ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यग्ज्ञान भावना के निमित्त श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का उपवास करे। सम्यग्ज्ञान भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यक्चारित्र के निमित्त भाद्रपद शुक्ला १४ को उपवास करे। सम्यक्चारित्र भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः'

६४—कवलचंद्रायण व्रत

दोहा—वरत कवल चंद्रायणा, बारह मास मझार।
एक महीना में करे, एक बार चित धार॥

चौपाई

करे अमावस को उपवास, पाछे तें इक चढ़ता ग्रास।
पड़िमा दिवस ग्रास इक लीन, दोयज दोय तीज दिन तीन।
चोथ चार पण पाचें सही, छट्टि छह सातें सत लही।
आठें आठ नमी नो टेक, दशमी दश ग्यारसि दश एक।
बारह बारसि तेरस जान, तेरा चौदा चौदशि ठान।
पून्यो दिवस करे उपवास, शुकल पक्ष की यह विधि खास।
कृष्ण पक्ष की पड़िमा जास, लेय अहार सु चौदह ग्रास।
दोयज तेरह बारह तीज, चोथ ग्यार पचमि दश लीज।
षष्ठी नव सातें वसु जान, आठें सात नम छह मान।
दशमी पाच ग्यारसी चार, बारसि तीन तेरसि द्वय धार।
चौदश दिवस ग्रास इक जान, मावस दिन प्रोषध को ठान।
एक मास को व्रत है येह, ग्रास लीजिये तिम सुन येह।
ग्रास लेन को ऐसा करे, मुख में दत न करतें पड़े।
बीच पियो पानी न गहाय, अंतराय गल अटकें थाय।
जिन पूजा विधियुत दिन तीस, करे वंदना गुरु नमि शीश।
शास्त्र बखान सुनो मन लाय धरम कथा में दिवस गमाय।
पाले शील वचन मन काय, इहि विध महापुण्य उपजाय।
यातें सुरपद होवे ठीक, अनुक्रम शिव पाव तहाँ कीच।

—कि० सि० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक महीने में समाप्त होता है। यथा—

जिस किसी मास की अमावस्या का उपवास कर शुरू करे फिर एकम का एक ग्रास, दोयज को २ ग्रास, इस प्रकार प्रतिदिन १ १ ग्रास भोजन बढ़ाता हुआ चतुर्दशी को १४ ग्रास लेवे। पूर्णमासी का उपवास करे। फिर कृष्ण पक्ष की पड़िमा को १४ ग्रास, दोयज को तेरह ग्रास, इस प्रकार क्रमानुसार एक एक ग्रास कमाता हुआ चतुर्दशी को एक ग्रास भोजन लेवे। और अमावस्या का उपवास करे। इस प्रकार एक मास में व्रत पूर्ण करे। जो ग्रास लेवे समय कदाचित् हाथ से मुंह से ग्रास गिर पड़े तो अन्तराय माने। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

यह व्रत श्री आदिनाथ स्वामी के पुत्र बाहुबलि स्वामी ने किया था जिसके प्रभाव से केवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष प्राप्त किया। तथा श्री [illegible] स्वामी की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी ने किया था जिसके प्रभाव से [illegible] छेदकर स्वर्ग में देव हुए, और फिर मनुष्य होकर केवलज्ञान [illegible] मोक्ष प्राप्त किया।

९५—बारह बिजोरा व्रत

बारबिजोरा व्रत हर मास, दोऊ द्वादशि कर [illegible]

—[illegible]

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है [illegible] २४ द्वादशियों के २४ उपवास करे। नमस्कार [illegible] करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

९६—ऐसोनव व्रत

एसो नव व्रत दिन चार स, [illegible]
[illegible] पण प्रोषध जया असी, [illegible]

—[illegible]

भावार्थ—यह व्रत चार सौ पचासी दिन में पूरा होता है, जिसमें ४ ½ उपवास और अस्सी पारणा होते हैं। यथा—

एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, इस प्रकार ९ उपवास तक बढ़े फिर एक एक उपवास कम करता हुआ १ तक आवे। इस प्रकार ९ बार बढ़ावे और घटावे। एक बार में ४५ उपवास और ९ पारणा होते हैं। कुल नौ आवृत्ति में ४०½ उपवास और ८० पारणा में व्रत पूर्ण होता है। णमोकार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

९७—षोडश व्रत

षोडश व्रत छहसो पचास, सौ जेवा साढ़े पाच सौ घास।
दशलों चढ़े अनुक्रम सोय, जो लों व्रत पूरण नहिं होय॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ६५० दिन में पूरा होता है, जिसमें ५५० उपवास और १०० पारणायें होती हैं। यथा—

किसी किसी मास से प्रारंभ करे। प्रथम दिन एक उपवास एक पारणा, फिर दो उपवास, एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, इस प्रकार एक एक उपवास बढ़ाकर १० उपवास तक बढ़ावे, फिर ९ उपवास एक पारणा, ८ उपवास एक पारणा, इस प्रकार १—१ घटाकर एक तक आवे। इस प्रकार दश आवृत्ति में ५५० उपवास और १०० पारणा होकर व्रत पूर्ण हो जाता है। णमोकार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

९८—कंजिक व्रत

कंजिक व्रत जल भात अहार, चौंसठ दिन पाल निरधार।
यथाशक्ति कछु और न तत, तितने मास वरष पर्यंत।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष के भीतर ५८ दिन में समाप्त होता है। किसी भी मास के प्रथम दिन से यह व्रत आरंभ करे। चौंसठ दिन तक भिक्षुक आहार अर्थात् पानी और भात लेवे। यदि शक्ति हो तो दूना तिगुना भी कर सकते हैं। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

९९—श्रुतिपंचमी व्रत

श्रुतिपंचमि पढ शास्त्र विशाल, जेठ सुदी पंचमि उपवास।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत जेठ शुक्ला पंचमी के दिन किया जाता है। इस दिन उपवास कर। 'ओं ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। यह व्रत ५ वर्ष करे। पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१००—कृष्णपंचमी व्रत

कृष्ण पंचमी व्रत विधि तास, जेठ कृष्ण पंचमि उपवास।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत जेठ कृष्ण पंचमी के दिन किया जाता है। इस दिन उपवास कर। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य कर। ५ वर्ष बाद उद्यापन करे।

१०१—निःशल्य अष्टमी व्रत

निःशल्य अष्टमी भादों सुदी, प्रोषध कर संथनासन जुदी।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को होता है। इस दिन उपवास कर। प्रत्येक प्रहर में अभिषेकपूर्वक पूजन करे। सोलह वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन कर। नमस्कार मंत्र का जाप्य करे।

यह व्रत दक्षिण देश के सुप्रतिष्ठ नगर में सेठ नंद की पुत्री लक्ष्मीमती ने किया था जिसके प्रभाव से स्त्रीलिंग छेद कर मोक्ष प्राप्त किया।

१०२—लक्खणपंक्ति व्रत

लक्खणपंक्ति व्रत चारसो आठ, कर एकान्तर प्रोषध ठाट।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४०८ दिन में पूरा होता है, जिसमें २०४ उपवास और २०४ पारणाएँ होती हैं। किसी भी मास से इस व्रत को आरंभ करे। एक उपवास, एक पारणा इस क्रम से करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०३—दुग्धरसी व्रत

दुधरसि व्रत भादोंसुदि धरे, बारसि को पय भोजन करे।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत भादों शुक्ल द्वादशी के दिन किया जाता है। इस दिन सिर्फ दूध का आहार ले। सारा समय धर्मध्यान में व्यतीत करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। १२ वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०४—धनदकलश व्रत

श्लोक—भद्रे भाद्रपदे मासे प्रतिपदादिकृत मुदा।
कलशोद्धारण पूतं चंदन स्रक्चर्चितम्॥
मासमेक प्रकुर्वंते शीलमेकाशन तपम्।
विधिना वत्सर पंच उद्यापन विधीयते॥

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण १ से शुरू होता है और भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा को समाप्त होता है। प्रति दिन चन्दनादि मंगलद्रव्ययुक्त कलशों द्वारा श्रीमज्जिनेन्द्रदेव का अभिषेक कर पूजन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। शील, संयम, तप, दान आदि कार्यों में समय व्यतीत करे। पाँच वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०५—कलीचतुर्दशी व्रत

आषाढ़ी सित चौदश होय, तब तें व्रत यह लीजो सोय।
दोहा—चार मास की चौदशा, शुक्ल पक्ष जब होय।
व्रत कीजे शुभ भाव सों, मुक्ति वधू कों लोय॥

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ल १४ से प्रारंभ होता है, एवं आषाढ़ श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, इन चार मास की शुक्ला चतुर्दशियों को उपवास करे। नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। ४ वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०६—मोक्षसप्तमी व्रत

श्रावण सुदि सातें दिन आन, प्रोषध शील सहित भवि ठान।
सात वरष मरयादा धार, पीछे उद्यापन कर सार॥

—कथाकोष

भावार्थ—सात वर्ष तक प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन उपवास करे। ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

१०७—रोटतीज व्रत

भादों सुदी तीज दिन जान, सब आरम्भ तजे बुधिवान।
तीन वरष प्रोषध चित धार, पीछे उद्यापन कर सार।

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत तीन वर्ष में समाप्त होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला तीज के दिन उपवास करे और अभिषेकपूर्वक त्रैलोक्य जिनालय विधान करे। ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष बाद उद्यापन करे।

यह व्रत हस्तिनागपुर के राजा विशाखदत्त की रानी विजयसुन्दरी ने किया था जिसके प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर देव होकर फिर मनुष्य पर्याय प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

१०८—शीलसप्तमी व्रत

भादों सुदि सातैं दिन जान, प्रोषध धरे हरष उर ठान।
सात बरष मरयादा सही, पीछे उद्यापन विधि कही।

—कथाकोष

भावार्थ—सात वर्ष तक प्रतिवर्ष भादों शुक्ल सप्तमी को उपवास करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०९—वीरशासनजयन्ती व्रत

वासस्स पढममासे पढमे पक्खम्मि सावणे बहुले।
पडिवदपुव्वदिवसे तित्थुप्पत्ति अभिजम्हि॥

—धवला प्रथमखण्ड

भावार्थ—श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन प्रथम प्रहर में अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी की दिव्य ध्वनि प्रकट हुई थी और उसके द्वारा अनन्तानन्त संसारी जीवों का कल्याण हुआ था, अतएव इस पवित्र दिन उपवास करे। श्रीमहावीर स्वामी का अभिषेक पूजन करे। 'ओं ह्रीं श्रीमहावीराय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११०—श्रीवीरजयन्ती व्रत

चैत्र शुक्ल तेरस दिन जान, उपजे वीरनाथ भगवान।
सुरपति आय मेरु पधराय, कियो अभिषेक महासुखदाय॥

भावार्थ—चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन कुण्डनपुर नगर में सिद्धार्थ राजा के घर त्रिशला देवी की कूख से श्री महावीर स्वामी ने जन्म लिया। इसी पवित्र दिन सौधर्म इन्द्र ने आकर भगवान् को मेरु पर्वत पर ले जाकर

अभिषेक किया था। इस दिन उपवास करे। धर्मप्रभावना के साथ करे। धर्मध्यान में सारा समय व्यतीत करे।

१११—श्रीआदिनाथजयंती व्रत

चैत्र वदी नवमी दिन जान, उपजे आदिनाथ भगवान।

भावार्थ—चैत्र वदी नवमी के पवित्र दिन में चौदहवें कुलकर श्रीनाभिराजा तथा मरुदेवी रानी की पवित्र कुक्ष से धर्मतीर्थ के प्रवर्तक श्री ऋषभनाथ भगवान् ने अवतार लिया, इस दिन महाअभिषेकपूर्वक पूजन विधान व उपवास करे। शास्त्र-सभा धर्मोपदेश द्वारा धर्म की खूब प्रभावना करे। 'ओं ह्रीं श्रीं वृषभनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११२—श्रीआदिनाथशासनजयंती व्रत

फागुन वदि एकादशि जान, वाणी खिरी आदि भगवान।

भावार्थ—फाल्गुन कृष्ण ११ के दिन श्रीआदिनाथ महात्मा ने घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया और संसार के प्राणियों के हितार्थ अपनी दिव्य ध्वनि द्वारा इस दिन प्रथम उपदेश दिया, इसलिये इस पवित्र दिन धर्मप्रभावना करे और उपवास करे। 'ओं ह्रीं श्रीं वृषभाय' नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११३—श्रीआदिनाथनिर्वाणोत्सव व्रत

माघ वदी चोदशि दिन कहो, आदिनाथ प्रभु शिवपुर लहो।

भावार्थ—माघ वदी १४ के पवित्र दिन श्रीआदिनाथ भगवान ने मोक्ष प्राप्त किया था। इस दिन उपवास करे। 'ओं ह्रीं श्रीं वृषभाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११४—नंदसप्तमी व्रत

भादों सुदि सप्तमि दिन जान, प्रोषध चरे सभी

भावार्थ—भादों सुदी सप्तमी के दिन उपवास करें। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। सात वर्ष पूरे होने पर उद्यापन करे।

११५—कांजीवारस व्रत

भादों सुदि द्वादशि के दिना, प्रोषध करे श्री जिनमना।

भावार्थ—भादों सुदी १२ के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। बारह वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

११६—ऋषिपंचमी व्रत

मास आषाढ़ शुक्ल की सोय, जयहिं पंचमी को दिन होय।
व्रतके दिन छाडो आरंभ, जिन घर भजो तजो सब दंभ॥
पाँच वर्ष अरु मासहि पंच, ये सब व्रत बैसठ सुन सच।
जब यह व्रत पूरो ह्वै लोय, यथाशक्ति उद्यापन होय॥

भावार्थ—यह व्रत ५ वर्ष और ५ महीने में समाप्त होता है। प्रति मास शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे। आषाढ़ शुक्ला पंचमी से यह व्रत शुरू करे। ६५ उपवास पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत हस्तिनापुर में धनपति सेठ की पुत्री कमलश्री ने किया था जिसके प्रभाव से उसका बिछुड़ा हुआ पुत्र पुनः मिल गया था और अन्त में स्वर्ग सुख प्राप्त हुए थे।

११७—त्रिलोकतीज व्रत

भादो सुदि तृतिया दिन जान, त्रिलोक तीज व्रत को ठान।
प्रोषध तीन वर्ष मध करे, पाछे उद्यापन विधि धरे॥

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत तीन वर्ष में पूर्ण होता है, प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला ३ के दिन उपवास करे। ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अकृत्रिमजिन

चयालयभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे, व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

११८—आचारवर्धन (अम्लवर्धन व्रत)

इक से दश लग प्रोषध करे, बिच बिच इक इक पारणा धरे।
फिर दश से इक लग व्रत धार, इक इक बीच पारणा सार।
कुल इक शत उपवास कराय, अरु उन्नीस पारणा थाय।

—सुदृष्टितरंगिणी

भावार्थ—यह व्रत ११६ दिन में पूरा होता है, जिसमें १०० उपवास और उन्नीस पारणा होती हैं। किसी भी मास से व्रत प्रारंभ करे। एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, इस क्रम से १० उपवास तक करे, फिर एक एक घटाकर एक उपवास तक आवे। इस प्रकार व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

११९—सुदर्शन व्रत

है सम्यक्त्व तीन परकार, क्षय उपसम क्षयोपसम धार।
शंकादिक वसु दोष महान, तीनों के मिल चोविस जान॥
तिनके प्रोषध धर चौविस, करे पारणा तहा चोवीस।
सब दिन अडतालीस सुजान, करे भक्ति सूं व्रत महान॥

—सुदृष्टितरंगिणी

भावार्थ—यह व्रत ४८ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें २४ उपवास और चौबीस पारणायें होती हैं। उपशम, क्षय और क्षयोपशम ऐसे सम्यक्त्व तीन प्रकार है, इन तीनों शंकादि ८ दोषों से गुणा करने पर २४ भेद होते हैं। इनके निमित्त एक पारणा, एक उपवास, इस क्रम से २४ उपवास और २४ पारणा करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१२०—रक्षाबंधन व्रत

चौपाई

श्रावण सुदि पूनो दिन कह्यो, श्रवण नक्षत्र सु तादिन लह्यो।
सूर अकम्पनादि शत सात, विष्णुकुमार हर्यो उत्पात॥
अति पवित्र तादिन को मान, प्रोषध करे हरष हिय ठान।
ताकी याद राखन हेत, सूत बाँधिये हरष समेत॥

भावार्थ—श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र में अकम्पनादि सात सौ मुनियों के ऊपर बलि राजा द्वारा किये गये महान् उपद्रव को श्री विष्णुकुमार मुनि ने विक्रिया ऋद्धि के बल द्वारा दूर किया था, इसी हेतु इस पवित्र दिन को उपवास करे। यथाशक्ति शुद्ध पीला सूत हाथ में बाँधे। विष्णुकुमार पूजन करे। "ॐ ह्रीं विष्णुकुमारमुनिभ्यो नमः" इस मंत्र का जाप्य करे।

१२१—क्षमावणी व्रत

असोज कृष्ण पंचम दिन जान, क्षमा उभय विधि से जन ठान।
पूजन करे महा सुखदाय, प्रोषध कर बहु कर्म नशाय।

भावार्थ—असोज कृष्ण पंचमी के दिन प्रातःकाल उठ श्री जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेकपूर्वक पूजन करे। फिर शास्त्र प्रवचन कर अपनी कषायों को शांत कर सहधर्मी जनों से परस्पर में क्षमा-क्षमा कहकर वर्ष के समस्त अपराधों को क्षमा करे और दूसरों से करावे। बाद कुछ फल भेंट करे। इस दिन उपवास करे। सारा दिन रात्रि धर्मध्यान में व्यतीत करे।

१२२—दीपमालिका व्रत

श्लोक—

चतुर्थकालेऽर्धचतुर्थमासैर्विहीनताविश्चतुरब्दशेषके।
स कार्तिके स्वातिषु कृष्णभूत प्रभातसंध्यासमये स्वभावतः॥

ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैः दीपितया प्रदीप्तया।
तदात्मपावानगरी समन्ततः प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते॥
ततस्तु लोकः प्रतिवर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक्॥
—हरिवंशपुराण

भावार्थ—चौथे काल में जब तीन वर्ष साढ़े आठ मास बाकी रहे तब कार्तिक मास की अमावस्या के प्रभातकाल स्वाति नक्षत्र में श्री महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ, देवों ने आकर यहाँ निर्वाणकल्याणक का उत्सव मनाया, और पावापुरी में दीपदान किया। इस पवित्र दिन की स्मृति में दीपावली भारत में प्रसिद्ध हुई है। इस दिन उपवास करे। श्री महावीर पूजन करे और निर्वाण लाडू चढ़ावे, महान धर्मप्रभावना करे। सायंकाल घर घर में दीप प्रज्वलित करे। ओं ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिने नमः। इस मंत्र का जाप्य करें। इसी दिन से वीर निर्वाण संवत् चालू हुआ है।

१२३—चौंतीस अतिशय व्रत

दोहा—अतिशय लख चौंतीस व्रत, तासु तनो कछु भेद।
कथा माहिं सुनिया जिसो, किये होय दुखछेद॥

अडिल्ल—दश दशमी जनमत के अतिशय दश तनी।
फिर दश केवलज्ञान उपज दश भनी।
चौदशि चौदा अतिशय देवाकृत कही,
चार चतुर्थ्य चाय चार ये विध नहीं।
षोडश आठें प्रातिहार्य वसुकी भनी
ज्ञान पाँच की पाँचें पाँच कही तनी।
अरु षष्ठी छह छहा सबै प्रोषध सुनो,
पाँच अधिक गन साठ किये फल बहु सुनो।
—कि० सि० कि

भावार्थ—यह व्रत २ वर्ष ८ महीने और १५ दिन में समाप्त होता है, जिसमें ६५ उपवास आते हैं। यथा—

१—जन्म के दश अतिशयों के दश दशमियों के १० उपवास करे।

२—केवलज्ञान के दश अतिशयों के दश दशमियों के १० उपवास करे।

३—देवकृत चौदह अतिशयों के चौदह चौदशों के १४ उपवास करे।

४—चार अनन्तचतुष्टय के चार चौथों के चार उपवास करे।

५—आठ प्रातिहार्यों के १६ अष्टमियों के १६ उपवास करे।

६—पाँच ज्ञान के पञ्चमियों के पाँच उपवास करे।

७—छह पडवा के छह उपवास करे।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। ओं ह्रीं णमो अरहन्ताणं' मन्त्र का जाप्य करे।

१२४—गणअष्टमी व्रत

दोहा

अष्टमिमध्य त्रिंशत बावन, द्वय सौ अट्ठासी प्रोषध मन।
समकित सहित धरे व्रत जास, करे पारने चौंसठ तास॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ३५२ दिन में पूरा होता है, जिसमें दो सौ अट्ठासी उपवास और चौंसठ पारणा होते हैं। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप करे।

१२५—तीर्थंकरबेला व्रत

दोहा—ऋषभ आदि तीर्थेश के, बेला बीस रु चार।
आठें चौदशि कीजिए, अंतर मूल न पार॥

चौपाई

सातें आठें बेलो ठान, नौमी दिवस पारणों जान।
तेरस चौदश द्वय उपवास, मावस पून्यो भोजन तास।

वर्ष हजार एक प्रति एक, बेला चौंसठ धर सुविवेक।
करे आयु लघु जानो जबै, शील सहित भवि धारो तबै।
लगते कारण शक्ति को नाहिं, आठैं चौदश कर शक नाहिं।
इनमें अंतर पाड़े नहीं, सो उत्कृष्ट लेह सुख सही।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत १६ महीने में समाप्त होता है जिसमें ६४ बेला और ६४ पारणा होते हैं। प्रति माह प्रत्येक सप्तमी अष्टमी तथा त्रयोदशी, चतुर्दशी के बेला, नवमी और पूर्णिमा के पारणा करे। यदि शक्ति विशेष हो तो एक बेला एक पारणा इस क्रम में एक हजार वर्ष तक करे।

व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे और नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

विदेह क्षेत्र के पुष्कलावती देश में वीतशोकापुरी नाम की नगरी है, उसमें महापद्म नाम के चक्रवर्ती थे। उनकी वनमाला नाम की एक रानी थी, भवदत्त ब्राह्मण का जीव जो तीसरे स्वर्ग में देव हुआ था, वहाँ से चयकर इस रानी के गर्भ में आया, और शिवकुमार नाम का पुत्र हुआ, इसने यह व्रत किया जिसके प्रभाव से छठवें स्वर्ग में इन्द्र हुआ, और वहाँ से आकर मगध देश की राजगृही नगरी में अर्हद्दास सेठ की जिनमती सेठानी के गर्भ से जम्बूस्वामी उत्पन्न हुए और लौकिक सुखों को तिलांजलि देकर दीक्षा धर कर्म नाश कर विपुलाचल पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

१७७—मौन व्रत

चौपाई

मौन व्रत भवि विधि सुन लेय, नित्य नैमित्तिक द्वय विधि होय।
नित्य मौन जीवन पर्यन्त, सप्तकाय में ढील न रन्च॥
भोजन वमन और स्नान, मैथुन अरु मल मोचन जान।
जिन पूजन सामायिक हेत, मौन सप्तविध नित्य भजेत॥

अब सुन नैमित्तिक विधि जान, एक वर्ष में पूरण मान।
पौष शुक्ल की एकादशी, षोडश प्रहर वास कर सती॥
एकादशी सु द्वादश मास, बीस चार करिये उपवास।
एक वर्ष पूरण जब होय, उद्यापन विधिवत कर सोय॥
उद्यापन की शक्ति न होय, तो दूनो व्रत करिये सोय।
मौन व्रत कथा के माहिं, लखिये विधी विशेष तहाँहिं॥

—मौनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत दो प्रकार से किया जाता है। यथा—

१—*नित्यमौन*—भोजन, वमन, स्नान, मैथुन, मलक्षेपण, सामायिक, और जिनपूजन, इन सात कार्यों में जीवन पर्यन्त मौन रखना।

२—*नैमित्तिकमौन*—यह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है। पौष शुक्ला एकादशी से प्रारम्भ होता है। प्रत्येक मास की प्रत्येक एकादशियों के दिन १६ प्रहर का उपवास करे। २४ उपवास पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत कौशल देश के कूट नामक ग्राम में कुणबी की कन्या तुङ्गभद्रा ने किया था, जिसके प्रभाव से वह कौशल देश में यमुना नदी के किनारे कौशाम्बी नगरी में हरिवाहन राजा के यहाँ सुकोशल नाम का पुत्र हुआ और संसार से विरक्त होकर जिनदीक्षा ग्रहण की, ऐसे पितापुत्र विहार करते हुये किसी वन में आ पहुँचे, और वहाँ भी उनके भंडारी मतिसागर का जीव जो सिंह हुआ था वह आ पहुँचा सो पूर्व वैर के कारण उन दोनों योगीश्वरों के शरीर को विदारणा शुरू किया। वे दोनों मुनिराज ध्यान में तल्लीन होकर कर्मों का नाश कर अन्त कृतकेवली होकर मोक्ष गये।

१२८—विमानपंक्ति व्रत

दोहा—व्रत विमान पंकति तनो, विधि सुनिये भवि सार।
मन वच क्रम करिये सदा, सुर सुरेश पद धार॥

अडिल्ल—सौधम ए ईशान सुरग जुग तें गही।
पंच पचोत्तर लगे पटल त्रेसट कही॥
तिनकी चहुँ दिशि माहिं सुश्रेणी जहाँ।
जन भवन हैं अनक अकृत्तम ही तहाँ॥

दोहा—तिनके नाम विधान को, वरतय हैं लख सार।
जहाँ जहाँ जते पटल, सो सुनिय विस्तार॥

चौपाई

द्वय सुरगन इकतीस विख्यात, सनत्कुमार माहेन्द्रहिं सात।
चार ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सही, लातव कापिष्ठहिं द्वय सही॥
एक शुक्र महाशुक्रहिं धार, एक सतारहिं अरु सहस्रार।
आनत प्राणत आरण तीन, अच्युत लग छह पटल प्रवीण॥
नव नव ग्रैवेयक जानिये, नव नवोत्तर इक मानिये।
पंच पचोत्तर पटल जु एक, ये त्रेसट मुनि धर सु विवेक॥
अबै वरत प्रोषध विधि जिसी, कथा प्रमाण कहूँ सुन तिसी।
एक पटल प्रतिप्रोषध चार, करे इकातर चित अरु धार॥
प्रोषध लगते तेलो एक, कर भविजन मन धर सु विवेक।
ता पीछे प्रोषध चहुँ जान, तिनके पीछे वेलो ठान॥
चहुँ प्रोषध चहुँ वेलो वास, छह चहुँ अनसन पुन छह वास।
इहि विधि त्रेसट वार विधान, चहुँ प्रोषध छह अनुक्रम ठान॥
त्रेसट वार जु पूरण थाय, इक लगतो तेलो करवाय।
बीच इकातर असन जु करं, एक भुक्ति अंतर नहिं परं॥
इनके तेला अरु उपवास, अनशन दिवस रु तेलो जास।
अरु सब दिन इकठे कर जोड़, सो सुन लो भवि चित धर कोड़॥

छह सौ दिवस सतान वेजान, वरप दिवस मरयाद वखान।
वास इकोतर द्वयसे जान, अर सव वास जोड इम ठान॥
वास इक्यासी पर सय तीन, असन तीन सौ सोला कीन।
यह व्रत तान भवन में सार, विधियुत कियें देव पद धार॥
अनुक्रम शिर जेंहें तहँकीक, अव वारह भवि चित धर ठीक।

—कि० वि० कि०

भावार्थ—यह व्रत ६६७ दिन में पूरा होता है जिसमें १ तेला, ६४ बेला और ४५२ उपवास आते हैं। जिनसे कुल उपवास ३८१ होते हैं। तथा पारणा १—६३—२५८ मिलकर ३१६ होते हैं। स्वर्गों के पटल ६३ तथा उनके चारों तरफ श्रेणीबद्ध अनेक चैत्यालय हैं। उनकी भावना भानी चाहिये। व्रतारम्भ समय पहिले १ तेला करे, फिर एक पारणा कर व्रत आरंभ करे।

१—प्रथम स्वर्ग के प्रथम पटल का बेला १, पारणा १, फिर इसके चारों दिशाओं में श्रेणीबद्ध अनेक चैत्यालय उन सम्बन्धी चार दिशा के उपवास ४, पारणा ४। इस प्रकार एक पटल सम्बन्धी बेला १, उपवास ४, पारणा ५ हुवे। इस क्रम से ६३ पटल के बेला ६३, उपवास २५२, पारणा ३१५ होते हैं। इसमें व्रतारम्भ का तेला १, पारणा १, जोड़ने से उपवास कुल ३८१, पारणा ३१६ हुए। इस प्रकार व्रत पूर्ण करे। 'ऊँ ह्रीं ऊर्ध्वलोकसम्बन्धिअसंख्यातजिनचैत्यालयेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

१२६—वारह तप व्रत

चौपाई

वारह व्रततनी विधि जिसी, वारह भाँति वखानी तिसी।
प्रोषध कीजे वारह भात, अरु वारह करिये एकान्त।
वारह[१] काजी तंदुल लेय, निगोरसे[२] गोरस तज देय

अल्प अहार असन इक भाग, लेंहि करहिं छ्यपट माग।
इकठाना भोजन जल सवे, ले पुरपाय वार इक तवे।
मूग मोठ चोला अरु चना, लेय इकोन थीन ततखिना।
पानी लूण थका जो खाय, नयडनाम ताको कहवाय।
घृतहिं छाडिये सब परकार, सो जानो लूको आहार।
विविध पात्र साधर्मी जान, ताहि अहार देय विधि जान।
ले मुखशोध निरन्तर थाय, पाछें व्रत धर असन लहाय।
अंतराय हुये उपवास, करे नाम मुख शोध्यो तास।
घर रे लोक बलाय रहेइ, बिन याचे भोजन जल देइ।
धरे थाल माहीं जो खाय, फिर याचे न अयाचा खाय।
लूण सवथा त्यागे यदा, भाँति अलूणा कीर्ह तदा।
जिनपूजा सुन शास्त्र वखान, एकग्रेह को कर परमाण।
जाय उडड तास के वार, भोजन लेहु कहे नर नार।
ठाम असन जल को जो गहे, वरत मान निरमान जु कहे।
बारह बरत भाँति दश दोय, अनुक्रम इयतपच्च भविलोय।
समकित सहित जु व्रत को धरे, त्रिविध शुद्ध शीलहिं आचरे।
करहु पूरण वर्ष मझार, सो सुरपद पावे नर नार।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष के भीतर १६४ दिन में पूरा होता है। शुक्लपक्ष की जिस किसी तिथि से शुरू किया जाता है। प्रथम बारह उपवास करे। २ बारह एकाशन करे। ३ बारह कांजिक भोजन करे। ४ बारह निगोरसे (बिना गोरस) भोजन करे। ५ बारह अल्प आहार करे। ६ बारह एक लठाना करे। ७ बारह मूंग के आहार करे। ८ फिर १२ मोठ के आहार करे। ९ बारह चोला के आहार करे। १० बारह चना का आहार करे। ११ बारह मात्र पानी का आहार करे। १२ बारह बिना घृत के आहार करे। अंतराय टालकर भोजन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१३०—नंदीश्वरपंक्ति व्रत

दोहा—

नंदीश्वर पंकति विरत, सुनहु भविक चित लाय।
किये पुण्य अति ऊपजे, भव आताप मिटाय॥

चौपाई

प्रथमहि चार इकांतर बीस, कर पीछे बेला इकतीस।
ता पीछे जु इकान्तर करे, द्वादश प्रोषध विधियुत धरे।
पुन बेलो करिये हित जान, बारा बास इकान्तर ठान।
पीछे इक बेलो कीजिये, इक अंतर दश द्वय लीजिये।
फिर इक बेलो कर उर प्रेम, वसु उपवास इकांतर नेम।
सब उपवास आठ चालीश तिन बेलो चहु गहे गरीश।
दधिमुख रति करके उपवास, अंजनगिरि चहुँ बेला तास।
दिवस एकसो आठ मझार, वरत यही पूरणता धार।
छप्पन प्रोषध भवि मन आन, करे पारणा बावन जान।
लगते करे न अंतर पड़े, अघ अनेक भव संचित हरे।

—कि० सि० क्रि०

यह व्रत १०८ दिन में पूरा होता है, जिसमें ५६ उपवास और ५२ पारणा होते हैं। यथा—

पूर्वदिशि–अंजनगिरिका बेला १, ताके उपवास २, पारणा १, दधिमुख के उपवास ४, पारणा ४। रतिकर के उपवास ८, पारणा ८। इस प्रकार पूर्व दिशि के उपवास १४, पारणा १४। इसी प्रकार दक्षिण के, पश्चिम के और उत्तर के करे। नन्दीश्वर की भावना भावे।

'ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो नमः' इस मन्त्रका त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१३१—परमेष्ठिगुण व्रत

दोहा—कहूं पच परमेष्ठि के, जे जे गुण सगराश।
छयालीस वसु तास छह, अरु पचिस अठवीस ॥

चौपाई

वसु छयालिश गुण श्रीअरहत, दश अतिशय जनमत है सत।
केवलज्ञान भये दश थाय, दुहु की बीस दशैं करवाय।
प्रातिहार्य की आठैं आठ, चोथ चतुष्टय चहु ये पाठ।
सुरकृत अतिशय चौदह जास, चौदा चादशि गणिये तास।
अब सुनिये वसु सिद्धन भेद, करिय वास आठ सुनि लेद।
समकित दूजो णाण वखान, दसण चौथो नीरज ज्ञान।
सुहमच्छटो अवगाहन सही, अगुर लघु सतम गुण सही।
अवाबाध आठमो धरे, इन आठों की आठें करे।
आचारज गुण जेह छत्तीस, तिनकी विधि सुनिये निशदीश।
बारसिवारा तप दश दोय, पड्‌आवश्यक की छट छह होय।
पाचें पाच पाच आचार, दशलक्षण दश दशमी धार।
तीन तीन तिहु गुप्ति जु तना, प्रोषध यह छहतीसहि भनो।
गुण पचिस उवज्झाय सुजान, चादह पूरब कह्यो वखान।
ग्यारा अग प्रकाशें धीर, ये पचास गुण लखिये वीर।
चोदा चौदशि के उपवास, ग्यारा ग्यारसि प्रोषध तास।
उपाध्याय के गुण हू जिते, वास पचीस वखाने तिते।
साधु अट्ठाइस गुण जानिये, तिहिं प्रोषध इहि विधि ठानिये।
पच महाव्रत समितिजु पच, इन्द्रिय विजय पाँचगण सच।
इनकी पद्रह पाचें करे, आवश्यक की छह छट करे।
भूमिशयन मज्जनको त्याग, वसन त्यजन कचलोंच विराज।
भोजन करे एक ही वार, ठाढो होय सो लेय अहार।
करे नहीं दातुन की बात, इन साता की पड़िमा सात।

सब मिल प्रोषध ये अठवीस, करहें भवि हुइ शिव इश।
पंच परम गुरु गुण सब जोड, सौ पर तेंतालिस कुल जोड।
करिये प्रोषध तिनके भव्य, सुरपद के सुखदायक सब्य।
अनुक्रम शिव पावे तहँ लोक, जिनवर भाष्यो है भवि ठोक।
—क्रि० मि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत २८८ दिन में पूरा होता है जिसमें १४३ उपवास और १४३ पारणा होते हैं। यथा—

१—अरहन्त के ४६ गुण के ४ उपवास और ४६ पारणा—
जन्म के १० अतिशयों के दश दशमियों के उपवास और १० पारणा।
केवलज्ञान के अतिशयों के दश दशमियों के उपवास और १० पारणा।
आठ प्रातिहार्य के आठ अष्टमियों के आठ उपवास और ८ पारणा।
चार अनंतचतुष्टय के चार चतुर्थियों के चार उपवास और ४ पारणा।
उपरोक्त चौदह अतिशयों के १४ चतुर्दशियों के १४ उ० १४ पा०।

२—सिद्धों के ८ गुणों के ८ उपवास, ८ पारणा—
आठ गुणों के आठ अष्टमियों के आठ उपवास, आठ पारणा।

३—आचार्यों के ३६ गुण के ३६ उपवास, ३६ पारणा—
बारह तप के १२ द्वादशियों के १२ उपवास, और १२ पारणा।
छह आवश्यक की छह षष्ठियों के ६ उपवास और ६ पारणा।
पंचाचारों के पाँच पंचमियों के पाँच उपवास और पाँच पारणा।
दशलक्षण के दश दशमियों के १० उपवास और १० पारणा।
तीन गुप्तियों के तीन तीजों के तीन उपवास और तीन पारणा।

४—उपाध्याय के २५ गुण के ५ उपवास, २ पारणा—
प्रथम १४ के १४ चतुर्दशियों के १४ उपवास और १४ पारणा।
अंग ११ के ११ एकादशियों के ११ उपवास और ११ पारणा।

५—सब साधु के २८ गुणों के २८ उपवास, २८ पारणा—
पाँच महाव्रत के पाँच पंचमियों के ५ उपवास और ५ पारणा।

पाँच समितियों के पाँच पडिमाओं के ५ उपवास और ५ पारणा।
पाँच इन्द्रियजय के पाँच पडिमाओं के ५ उपवास और ५ पारणा।
छह आवश्यक के छह पडिमा के छह उपवास और छह पारणा।
सात सात गुणों के सात पडिमा के सात उपवास और सात पारणा।
इस प्रकार व्रत पूरा करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे। पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१३२—श्रुतज्ञान व्रत

चौपाई

श्रुतज्ञान व्रत कह्यो महान, आगम विधि जिमि कही बखान।
पडिमा मतिज्ञान अठवीस, ग्यारह ग्यारसि अंग प्रतीक।
दोयज दोय परिक्रम सोय, सूत्र अठासी अष्टमि होय।
नौमी एक योग प्रथमान, चौदशि चौदह पूर्व बखान।
पंच चूलिका पंचमि पाँच, अवधि ज्ञान छह षष्ठी वास।
दोय चौथ मन पर्यय ज्ञान, दशमी एक सु केवलज्ञान।
एक शतक अट्ठावन वास, करे पारने इतने तास।
मास उनासी पूरण होय, कर उद्यापन विधिवत सोय।

—सुदृष्टितरंगिणी

भावार्थ—यह व्रत उन्यासी मास में पूरा होता है, जिसमें अट्ठावन उपवास और एक सौ अट्ठावन पारणा होते हैं। यथा—

१—मतिज्ञान के २८ पडिमा के २८ उपवास और २८ पारणा करे।
२—ग्यारह अंग के ११ ग्यारसों के ११ उपवास और ११ पारणा करे।
३—परिक्रम के दो दोयज के २ उपवास और २ पारणा करे।
४—अगामी सूत्र के ८८ अष्टमियों के ८८ उपवास और ८८ पारणा करे।
५—प्रथमानुयोग का एक नवमी का १ उपवास और १ पारणा करे।

६—चौदह पूर्व के १४ चतुर्दशियों के १४ उपवास और १४ पारणा करे।
७—पाँच चूलका के ५ पंचमियों के ५ उपवास और ५ पारणा करे।
८—अवधिज्ञान के ६ पडिवा के ६ उपवास और ६ पारणा करे।
९—मन पर्ययज्ञान के २ चौथियों के २ उपवास और २ पारणा करे।
१०—केवलज्ञान के १ दशमी का १ उपवास और १ पारणा करे।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। 'ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१३३—कर्मक्षय व्रत

चौपाई

कर्म क्षयण व्रत विधि इम जान, कही जिनागम मांहि प्रमाण।
प्रकृति एक सौ अड़तालीस, तिन नाशन व्रत यह जगदीश।
सात चतुर्थी के उपवास, प्रोषध तीन सप्तमी तास।
चौदशि केर पिच्यासी सोय, शत अडतालिस प्रोषध होय।
इहि विधि पूरण है व्रत जबै, उद्यापन कर छाँडे तबै।
—सुदृष्टितरंगिणी

भावार्थ—यह व्रत ७४ मास में पूर्ण होता है, जिसमें १४८ उपवास और १४८ पारणा होते हैं। यथा—

१—सात प्रकृति नाशनार्थ सात चतुर्थियों के सात उपवास, ७ पारणा।
२—तीन प्रकृति नाशनार्थ तीन सप्तमी के ३ उपवास, ३ पारणा।
३—छत्तीस प्रकृति नाशनार्थ छत्तीस नवमियों के ३६ उपवास, ३६ पारणा
४—एक प्रकृति नाशनार्थ एक दशमी का एक उपवास, एक पारणा।
५—सोलह प्रकृति नाशनार्थ बारह द्वादशियों के १२ उपवास, १२ पारणा।
६—पचासी प्रकृति नाशनार्थ ८५ चौदशि के ८५ उपवास, ८५ पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' इस मन्त्र का त्रिक

१३४—गरुडपचमी व्रत

श्रावण सुदि पचमि के दिना, गरुड़ पचमी व्रत जिन भना।
—जैनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत ५ वर्ष में समाप्त होता है, प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ला ५ के दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः' इस मत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत चारित्रमती ने किया था जिसके प्रभाव से पिता की मूर्च्छा दूर की थी और अन्त में मोक्ष प्राप्त किया था।

१३५— षष्ठी व्रत

षष्ठी श्रावण शुक्ल महान, षष्ठी व्रत धर अति सुख ठान।
—जैनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत ६ वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथाय नमः' इस मन्त्र का जाप्य करे। पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत मालव देश के चिंच नामक ग्राम में एकनागगौड़ की पुत्री चारित्रमती ने किया था, जिसके प्रभाव से नदी में शत्रु द्वारा नहाया हुआ पुन पुन प्राप्त हो गया था, और यह चारित्रमती जिनदीक्षा लेकर स्वर्ग में देव हुई और वहाँ से चयकर जिनदीक्षा ग्रहण कर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

१३६—द्वादशी व्रत

भादों शुक्ल द्वादशी होय, व्रत द्वादशी कर भवि सोय।
—जैनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत १२ वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला द्वादशी के दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

यह व्रत मालवा देश के पद्मावतीपुर नामक ग्राम में नरब्रह्म राजा की पुत्री शीलावती ने पालन किया था जिसके प्रसाद से स्वर्गादि सुख भोग मोक्ष प्राप्त किया था।

१३७—बेला व्रत

आदि अन्त एकासन करे, बीच दोय उपवास जु धरे।

—हरिवंशपुराण

भावार्थ—प्रथम एक एकाशन, फिर दो उपवास, पीछे एक एकाशन करना।

१३८—षष्टमबेला व्रत

प्रथम एकाशन बेला एक, पाछे एकासन इक टेक।
छह बेला भोजन का त्याग, षष्टम बेला व्रत यह भाग॥

—हरिवंशपुराण

भावार्थ—प्रथम धारणे के दिन आदि में एकाशन, फिर दो उपवास, फिर पारणा के दिन अन्त भाग में एकाशन इस प्रकार छह बेला भोजन का त्याग करना।

१३९—तेला व्रत

त्रय उपवास बीच में ठान, धारणे पारणे एकलठान।

—हरिवंशपुराण

भावार्थ—पहले और अन्त में एकाशन और बीच में तीन उपवास करना।

१४०—अष्टमी व्रत

अष्टम्यामुपवासोऽय, विधत्ते भावपूर्वकम्।
हत्वा कर्माष्टकं सोऽपि, याति मोक्षपदं ध्रुवम्॥

भावार्थ—यह व्रत प्रत्येक मास की प्रत्येक अष्टमी के दिन किया जाता है। इस दिन उपवास करे। 'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धाधिपतये नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। आठ वर्ष बाद उद्यापन करे।

१४१—चतुर्दशी व्रत

करहु व्रत चौदश उपवास, पूजा करो जिनेश्वर पास।
मास दिवस महिं दो-दो बार, कृष्ण सुकल महिं भेद न पार।
मास आषाढ सुकल व्रत लाजे, तेरस दिन इक भुक्ति सु कीजे।
चौदश वास करो मन लाय पून्यो पारणा कीने राय।
चौदह वर्ष करो व्रत सार, पीछे उद्यापन कर सार।

—चतुर्दशीव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत आषाढ शुक्ला १४ से शुरू होता है। प्रत्येक मास की प्रत्येक चतुर्दशी के दिन एकाशन करे। चतुर्दशी को उपवास और पून्यो को पारणा करे। 'ओं ह्रीं अनन्तनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। १४ वर्ष बाद उद्यापन करे।

यह व्रत सुजानी नाम की सेठानी ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग तिर्यंच के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

१४२—निर्वाणकल्याणक वेला व्रत

जे जे तीर्थंकर निर्वाण, गये तास दिन की तिथि ठान।
तिहि दिन को पहलो उपवास लगतो दूजो वास प्रकाश।
इहि विधि बारह मास मझार, वेला करिये बीस र चार।
वेला कल्याणक निर्वाण, व्रत नाम लिखिये बुधिमान।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत ७२ दिनमें पूरा होता है। जिसमें २४ वेला और २४ पारणा होते हैं। यथा—

तीर्थंकर सं०	निर्वाण तिथियाँ	व्रत तिथियाँ	पारणा तिथियाँ
१	माघ कृष्णा १४	८–३०	१
२	चैत्र शुक्ला ५	५–६	७
३	चैत्र शुक्ला ६	६–७	८
४	वैशाख शुक्ला ६	६–७	८
५	चैत्र शुक्ला ११	११–१२	१३
६	फाल्गुन कृष्णा ४	४–५	६
७	फाल्गुन कृष्णा ७	७–८	९
८	फाल्गुन कृष्णा ८	८–९	१०
९	भाद्रपद शुक्ला ८	८–९	१०
१०	आश्विन शुक्ला ८	८–९	०
११	श्रावण शुक्ला १५	१५–१	
१२	भाद्रपद शुक्ला १४	१४–१५	
१३	आषाढ़ कृष्णा ८	८–९	१०
१४	चैत्र कृष्णा ३०	३०–१	२
१५	ज्येष्ठ कृष्णा १४	१४–२०	१
१६	ज्येष्ठ कृष्णा १४	१४–२०	१
१७	वैशाख शुक्ला १	१–२	२
१८	चैत्र कृष्णा २०	०–१	२
१९	फाल्गुन शुक्ला ५	५–६	७
२०	फाल्गुन कृष्णा १२	१२–१४	१४
२१	वैशाख कृष्णा १४	१४–३०	१
२२	आषाढ़ शुक्ला ७	७–८	९
२३	श्रावण शुक्ला ७	७–८	९
२४	कार्तिक कृष्णा २०	३०–१	२

इस प्रकार व्रत समाप्त करे। निर्वाणकल्याणक की भावना भावे 'ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितिर्थंकरेभ्यो नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

१४३—लघुपंचकल्याणक व्रत

गर्भ जन्म तप ज्ञान शिव, तीर्थंकर चौबीस।
वरष माहिं तिथि मध्य की, करे एक सौ बीस॥
—कि० सि० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है। जिसमें १२० उपवास और १२० पारणा होते हैं। जिस जिस तिथि में तीर्थंकर का कल्याणक हुआ हो उस उस तिथि में उपवास करे। 'ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

१४४—बृहत्पंचकल्याणक व्रत

चौपाई

प्रथम वरष श्री गर्भ कल्याण, वरष दूसरी जनमन जान।
तप कल्याणक वर्षहिं तीन, चौथो वरष सु केवल लाह॥
वरष पांचवों श्री निर्वाण, चाविस चौबिस प्रोषध ठान।
वरष पांच मरयादा धार, पीछे उद्यापन कर सार॥
—कि० सि० कि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा किया जाता है। प्रथम वर्ष में चौबीस तीर्थंकरों की गर्भ की तिथियों के २४ उपवास करे। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष में जन्म के २४। तृतीय वर्ष में तप के २४। चौथे वर्ष में ज्ञान के २४ और पांचवें वर्ष में निर्वाण के २४ उपवास करे। 'ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

पंच कल्याणक तिथि चक्र

तीर्थंकर संख्या	गर्भ कल्याणक	जन्म कल्याणक	तप कल्याणक	ज्ञान कल्याणक	निर्वाण कल्याणक
१	आ कृ २	चै कृ ९	चै कृ ९	फा कृ ११	माघ कृ १४
२	ज्ये कृ ३०	पौ शु १०	पौ शु ९	पौ शु ११	चै शु ५
३	फा शु ८	माग शु १५	माग शु १५	का कृ ८	चै शु ६
४	चै शु ६	पौ शु १०	पौ शु १२	पौ शु १४	चै शु ६
५	आ शु २	वै कृ १०	वै शु ६	च शु ११	चै शु ११
६	माघ कृ ६	का कृ १३	मग कृ १०	चै शु १५	फा कृ ८
७	भाद्र शु ६	ज्ये शु १२	ज्ये शु १२	फा कृ ६	फा कृ ७
८	चै कृ ५	पौ कृ ११	पौ कृ ११	फा कृ ७	फा कृ ८
९	फा कृ ९	मग शु ९	मग शु १	का शु २	भाद्र शु ८
१०	चै कृ ८	पौ कृ १२	पौ कृ १२	पौ कृ १४	आश्वि शु ८
११	ज्ये कृ ६	फा कृ ११	फा शु ११	माघ कृ २०	श्रा शु १५
१२	आषा कृ ६	फा कृ १४	फा कृ १४	माघ शु २	भाद्र शु १४
१३	ज्ये कृ १०	पौ शु ४	पौ शु ८	माघ शु ६	आषा कृ ८
१४	कार्ति कृ १	ज्ये कृ १२	ज्ये कृ १२	चै कृ २०	चै

तीर्थंकर संख्या	गर्भ कल्याण	जन्म क	तप क	ज्ञान क	निर्वाण क
१५	वै शु १३	पा शु १	पौ शु १३	पौ शु १५	ज्ये शु ४
१६	भाद्र कृ ७	ज्ये कृ १४	ज्ये कृ १४	पौ शु ११	ज्ये कृ १४
१७	श्रा कृ १०	वै शु १	वै शु १	चै शु ३	वै शु १
१८	फा शु ३	मग शु १४	मग शु १०	का शु १२	चै कृ ३०
१९	चै शु १	मग शु ११	मग शु ११	मग शु ११	फा शु ५
२०	श्रा कृ २	वै कृ १०	वै कृ १०	वै कृ ९	फा कृ १२
२१	असो कृ २	आषा कृ १०	आषा कृ १०	मग शु ११	वै कृ १४
२२	का शु ६	श्रा शु ६	श्रा शु ६	असो शु १	आषा शु ७
२३	वै कृ २	पौ कृ ११	पौ कृ ११	चै कृ ४	श्रा शु ७
२४	आषा शु ६	चै शु १३	वै शु १३	वै शु ७	का कृ ३०

नवल साह कृत 'वर्धमानपुराण' में निम्नलिखित २० व्रत और कह गये है जो बीस पथ, श्वेताम्बर तथा ढूँढिया आदि सम्प्रदायों में प्रचलित जान पड़ते है, और जो कि तेरह पथ सम्प्रदाय के प्राय प्रतिकूल है, उन व्रतों को भी यहाँ संग्रह किया जाता है।—

१—पचपोरिया व्रत

भादों सुदि पाँचें दिन जान, घर पचीस बाँटे पकवान।

२—चन्दनषष्ठी व्रत

चदनषष्ठी भादा शुक्ल, चदन चर्चित भोजन मुक्त।

३—कौमारसप्तमी व्रत

भादों सुदि सप्तमी के दिना, खजरी मण्डप पूजे जिना।

४—मनचिती अष्टमी व्रत

भादों सुदि आठें दिन जान, मन चिन्ते भोजन परवान।

५—सुगधदशमी व्रत

अब सुगध दशमा व्रत जान, भादा सुदि दशमा को मान।

६—दशमिनिमानी व्रत

भादों सुदि दशमी व्रत धार, आदर युत परघर आहार।

७—सौभाग्यदशमी व्रत

भादों सुदि दशमी दिन ठान, दश सुहागिना भोजन

८—चमकदशमी व्रत

चमक दशमि और चमकाय, जो भाजन नहि तो व्रतराय।

९—छहारदशमी व्रत

छहार दशमि व्रत इहि परकार, दश सुपात्र को देय अहार।

१०—तमोरदशमी व्रत

तम्बोल दशमि व्रत को यह थोर, दश सुपात्र को दय तमोर।

११—पानदशमी व्रत

पान दशमि बीरा दश पान, दश श्रावक दे भाजन दान।

१२—फूलदशमी व्रत

फूल दशमि दश फूलन माल, दश सुपात्र पहिनाय अहार।

१३—फलदशमी व्रत

फल दशमी फल दश कर लेय, दश श्रावक के घर घर देय।

१४—दीपदशमी व्रत

दीप दशमि दश दीप बनाय, जिनहिं चढ़ाय आहार कराय।

१५—धूपदशमी व्रत

धूप दशमि व्रत धूप दशाग, खेवो जिन ढिग भाव अभग।

१६—भावदशमी व्रत

भाव दशमि व्रत दश दश पुरी, दश श्रावक दे भोजन करी।

१७—न्योनदशमी व्रत

न्योन दशमि दश दशमि कराय, नये नये दश पात्र जिमाय।

१८—उडडदशमी व्रत

दशमि उडड उडड अहार, पच घरन मिलि जो अधिकार।

१९—बारादशमी व्रत

बारा दशमि सुहारी लेय, बारा बारा दश घर देय।

२०—भडार दशमी व्रत

भडार दशमि व्रत शक्ति ज पाय,दश जिन भवन भडार चढाय।

सूतक-प्रमाण

जैन धर्म के आप ग्र थो म कहीं भी सूतक और पातक व्यवहारी जीवों को मानने का उल्लेख नहा मिलता। यह प्रथा जैनेतर समाज से दखा दखी जैन समाज मे भी प्रचलित हो गइ है।

शोर म सूतक मात्र जननेवाली स्त्री को ही होता है, क्योंकि उसकी योनिस्थान से जनने के बाद भी अशुद्ध खून निकलता रहता है। किसी किसी स्त्री का तो ४५ दिन तक रहता है इसलिए मात्र उस प्रसूता स्त्री को ही ४५ दिन का सूतक होता है, अन्य जनों को नहीं (प्रसूता को छोड़ और पति आदि को नहा होता)

मरणसूतक—किसी भी व्यक्ति का मरण हो, मरण के पश्चात् अन्तमुहूर्त उपरान्त उस शरीर मे सम्मूच्छिम जीव पैदा हो जाते हैं। अत जब उस मृतक शरीर को जलाया जाता है उसके साथ वे अगणित जीव जल जाते हैं। इसलिए उन जीवों के जल जाने का पातक मात्र अग्नि लगानेवाले पुरुषों को ही होता है, अन्य को नहा। उनको भी तब तक जब तक राख न उठाई जाय और दान, पूजन स्नानादि द्वारा शुद्धि न हो जाय।

१—भरत चक्रवर्ती के पुत्र और आदिनाथ को केवलज्ञान एक साथ हुआ, भरत चक्रवर्ती ने प्रथम ही समवशरण मे जाकर पूजा की।

—आदिपुराण

२—सुकमाल का जन्म होते ही सबसे पहिले सुभद्रा सेठानी ने मदिर मे जाकर भगवान् की पूजा की।

—सुकमाल चरित

३—कृष्णनारायण के जब प्रद्युम्नकुमार का जन्म हुआ तब श्रीकृष्ण जी ने मन्दिरजी में पूजन कराया। —प्रद्युम्नचरित

४—भगवान् का जन्म कल्याणक के बाद इन्द्र की आज्ञा से भगवान् के पिता ने अपने बान्धवों के साथ जिनमन्दिर में अभिषेकपूर्वक महापूजा की। —मल्लिपुराण

इत्यादि जैन शास्त्रों में अनेक उल्लेख हैं। जैन शास्त्रों के अनुसार सूतक उक्त प्रकार होता है। परन्तु व्यवहार में सूतक का रूप जिस प्रकार से प्रचलित है वह इस प्रकार से है। —सद्धावमार्तण्ड से उद्धृत

रज मासिसूतक

प्राकृतं जायते स्त्रीणां मासे मासे स्वभावतः।
पंचाशद्वर्षादूर्ध्वं तु अकाल इति भाषितं ॥

भावार्थ—स्त्रियों का स्वभाव से हर महीने महीने रजस्राव होता है वह प्राकृतिक रज है। दश वर्ष के भीतर और ५० वर्ष के ऊपर जो रजस्राव होता है वह अकाल रज है, वह दूषित नहीं है।

शुद्धा भर्तुश्चतुर्थेऽह्नि, भोजने रंधनेऽपि वा।
देवपूजा गुरूपास्ति होमसेवा तु पंचमे ॥

भावार्थ—रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करने पर पतिसेवा और भोजनपान बनाने के योग्य हो जाता है। परन्तु देवपूजा, गुरूपासना और हवन सेवा योग्य पाँचवें दिन ही होती है।

अकालिक ऋतुदोष

ऋतुकाले व्यतीते तु यदि नारी रजस्वला।
तत्र स्नानेन शुद्धिः स्यादष्टादशदिनात्पुरा ॥

भावार्थ—ऋतुकाल के बीत जाने पर अठारह दिन के पहले यदि कोई स्त्री रजस्वला हो जाय तो वह स्नानमात्र से शुद्ध हो जाती है।

सूतक

जातक मृतक चेति सूतक द्विविध स्मृतम् ।
स्राव पात प्रसूतिश्च त्रिविध जातकस्य च ॥

भावार्थ—सूतक दो प्रकार का है—१ जातक, २ मृतक। इनमें जातक सूतक तीन प्रकार का होता है—१ स्राव, २ पात, ३ प्रसूति।

स्राव, पात और प्रसूति

मासत्रये चतुर्थे स गर्भस्य स्राव उच्यते ।
पात स्यात् पंचमे षष्ठे प्रसूति सप्तमादिषु ॥

भावार्थ—गर्भाधान के बाद तीन या चार महीने में जो गर्भ च्युत हो उसे स्राव कहते हैं। पाँचवें और छठवें मास में जो गर्भ च्युत हो उसे पात कहते हैं। और सातवें से नवम मासतक जो गर्भ च्युत हो उसे प्रसूति कहते हैं।

स्रावसूतक

मासंसख्या दिन मातु स्रावे सूतकमिष्यते ।
स्नानेनैव तु शुद्धयन्ति सगोत्रश्चैव वै पिता ॥

भावार्थ—जितने महीना का स्राव हो उतने दिन का सूतक माता को होता है। और सगोत्री बन्धु तथा पिता स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं।

गर्भपातसूतक

पाते मातुर्यथामास तावदेव दिन भवेत् ।
सूतक तु सपिण्डाना पितुश्चैकदिन भवेत् ॥

भावार्थ—जितने महीना का पात हो उतने ही दिन का सूतक माता को होता है, तथा सगोत्री भाई, बन्धु तथा पिता के लिए एक दिन मात्र का होता है।

प्रसूतिसूतकम्

प्रसूतौ चैव निर्दोषं दशाहं सूतकं भवेत्।
त्रिपक्षे शुद्ध्यते सूती प्रसूतिस्थानमासकम् ॥

भावार्थ—निर्दोष प्रसूति में बालकोत्पत्तिका सूतक दश दिन का होता है। प्रसूता स्त्री डेढ़ मास में शुद्ध होती है। और प्रसूति स्थान १ महीने में शुद्ध होता है।

अनिरीक्षण और अनधिकार सूतक

तदा पुत्रसवे मातुर्दशाहमनिरीक्षणम्।
अथ विंशतिरात्रं स्यादनधिकारलक्षणम् ॥
स्त्रीसूतौ तु त्रयं स्यादनिरीक्षणलक्षणम्।
पश्चादनधिकाराघं स्यात्त्रिंशद्दिवसं भवेत् ॥

भावार्थ—पुत्रजन्म में प्रसूता स्त्री को दश दिन का अनिरीक्षण सूतक होता है। पश्चात् २० दिन का अनधिकार सूतक होता है। और पुत्रीजन्म में माता को १० दिन का अनिरीक्षण सूतक होता है और ३० दिन का अनधिकार सूतक होता है।

जनने ऽप्येवमेवाघं मात्रादीनां तु सूतकम्।
आसन्ने दश रात्रिं स्याद् पञ्चाहं च चतुर्थके ॥
पञ्चमे पञ्च षट् त्र्यहं, सप्तमे च दिनत्रयम्।
अष्टमे च अहोरात्रिं, नवमे च प्रहरद्वयम् ॥
दशमे स्नानमात्रं स्यात् एतद् नासन्नसूतकम्।
आतुरतायास्समासन्ना अनासन्नास्ततः परे ॥

भावार्थ—जननाशौच में माता, पिता, भाई और आसन्न बन्धुओं को दश दिन का सूतक होता है। और अनासन्न बन्धुओं को अर्थात् चौथी पीढ़ी में ६ दिन, पाँचवीं पीढ़ी में ५ दिन, छठी पीढ़ी में ४ दिन। सातवीं पीढ़ी में २ दिन, आठवीं पीढ़ी में १ दिन रात्रि, नवमी पीढ़ी में दो प्रहर,

और स्वामी पीढ़ी में स्नान मात्र से शुद्धि होती है। तीन पीढ़ी तक आसन्न और चौथी पीढ़ी से १० पीढ़ी तक अनासन्न कहते हैं।

अश्वा च महिषी चेटी गौ प्रसूता गृहाङ्गणे।
सूतकं दिनमेकं स्यात् गृहबाह्ये न सूतकम् ॥

भावार्थ- घोड़ी, भैंस, दासी, गौ आदि जो अपने घर के भीतर जने तो एक दिन का सूतक होता है। बाहर नहीं।

महिष्याः पक्षकं क्षीरं गोक्षीरं च दशोदिनम्।
अष्टमे दिवसे अजायाः क्षीरं शुद्धं न चान्यथा ॥

भावार्थ—जनने के बाद महिषी का दुग्ध १५ दिन में, गाय का दश दिन में और बकरी का ८ दिन में शुद्ध होता है, अन्यथा नहीं।

मरणसूतक

नाभिच्छेदनतः पूर्वं जीवनजातो मृतो यदि।
मातुः पूर्णमशौचं स्यात् पितुश्च त्रिदिनं समम् ॥

भावार्थ—जाता उत्पन्न हुआ बालक नालच्छेदन के पूर्व ही मर जाय तो माता के लिये दश दिन का और पिता, भाई तथा आसन्न बन्धुओं को तीन दिन का सूतक होता है।

मृतस्य प्रसवे चैव नाभिच्छेदनतः परम्।
मातुः पितुश्च आसन्नजनानां पूर्णसूतकम् ॥

भावार्थ—मरा हुआ बालक उत्पन्न हो अथवा नालच्छेदन के पश्चात् मरण करे तो माता, पिता और आसन्न बन्धुओं को दश दिन का सूतक होता है।

अनतीतदशाहस्य बालस्य मरणं सति।
पितोर्दशाहमाशौचं तदूर्ध्वं पूर्णसूतकम् ॥

भावार्थ—यदि बालक १० दिन के भीतर ही मर जाय तो मरण का सूतक उसी जन्म के सूतक के दश दिन के भीतर ही समाप्त हो जाता है। यदि दश दिन के बाद मरण करे तो सूतक मानना पड़ेगा।

जातदन्तशिशोर्नाशे पित्रोर्मातुर्दशाहकम् ।
प्रत्यासन्नसगोत्राणामेकरात्रिमघं भवेत् ॥
अप्रत्यासन्नबन्धूनां स्नानमेव प्रचोदितम् ।
अजातदन्ते नैव मृते बाले दिनत्रयम् ॥

भावार्थ—दाँत उगे हुए बालक के मरण का सूतक माता पिता को दश दिन का होता है तथा आसन्न बन्धुओं का एक दिन का और अनासन्न बन्धुओं का स्नान मात्र तक का होता है।

कृतचौलस्य बालस्य पितुर्भ्रातुश्च पूर्ववत् ।
आसन्नेतरबन्धूनां पञ्चाहैकाहमिष्यते ॥
मरणे चोपनीतस्य पित्रादीनां तु पूर्वकम् ।
आसन्नबान्धवानां च तथैवाशौचमिष्यते ॥

भावार्थ—चौल संस्कार हुए बालक के मरण का सूतक माता, पिता, और भाइयों को दश दिन का, आसन्न बन्धुओं को ५ दिन का और अनासन्न बन्धुओं को १ दिन का होता है।

उपनीत (यज्ञोपवीत) संस्कार हुए बालक के मरण का सूतक माता, पिता, भाई और आसन्न बन्धुओं को १० दिन का माना है और अनासन्न बन्धुओं को पीढ़ी के प्रमाण से सूतक होता है।

आसन्न बन्धुओं को पीढ़ी प्रमाण सूतक

तृतीयपादे स्यात्पूर्णं चतुर्थपादे षड् भवेत् ।
पंचमे दिन पंचैव षष्ठे च त्र्यहात् शुचि ॥
सप्तमे च तृतीयं स्यादष्टे पुंस्यहोरात्रिकम् ।
नवमे च दिनार्धं स्याद्दशमे स्नानमात्रतः ॥

भावार्थ—मरण का सूतक तीसरी पीढ़ी तक दश दिन का होता है पश्चात् चौथी पीढ़ी में ६ दिन का, पांचवीं पीढ़ी में ५ दिन का, छठवीं पीढ़ी में ४ दिन का, सातवीं पीढ़ी में ३ दिन का, आठवीं पीढ़ी में १ दिन

रात्रि का, नवीं पीढ़ी में दो प्रहर का और दशवीं पीढ़ी में स्नान मात्र से शुद्ध हो जाता है।

मातामहो मातुलश्च, म्रियते चाऽथ तत्सय ।
दौहित्रो भागिनेयश्च पितृोव म्रियते स्वसा ॥
स्वगृहे गृहमाऽशौच गृहयाह्ये न सूतकम्।

भावार्थ—नाना, नानी, मामा, मामी, पुत्री का लड़का, भानजा, मौसी, बुआ ये यदि अपने घर पर मरें तो १ दिन का सूतक होता है। अपने घर से बाहर सूतक नहीं।

कन्याया मरणे चैव विवाहा प्राग्दिनत्रयम्।
ऊढाना मरणे भर्तु पूर्णं पक्षस्य चोदितम् ॥

भावार्थ—कन्या के मरण का सूतक ३ दिन का, और विवाही हुई कन्या अपने घर मरे तो माता, पिता, भाईयों को ३ दिन का और ससुराल-वालों को १० दिन का सूतक होता है।

श्वसुर्गृहे मृतो भ्राता भ्रातुर्वाथ गृहे स्वसा।
अशौच त्रिदिन तत्र सूतकं न परत्र तु ॥

भावार्थ—बहिन के घर भाई, या भाई के घर बहिन का मरण हो तो दोनों के लिये तीन दिन का सूतक होता है। और यदि इनका अन्यत्र मरण हो तो सूतक नहीं होता।

सताना सूतक हत्या पाप षण्मासक भवेत्।
अन्यासामास्म हत्याना प्रायश्चित्त विधानत ॥

भावार्थ—अपने को अग्नि में जला लेने ऐसा सती होने के पाप का सूतक छः मास का होता है। और अन्यान्य हत्याओं का सूतक प्रायश्चित्त-ग्रंथों से जानकर शुद्धि करे।

गर्भिण्या मरणे प्राप्ते नैमित्त्यादिकारणे।
सहैव दहन कुर्याद् गर्भच्छेद न कारयत् ॥

भावार्थ—यदि गर्भिणी स्त्री का मरण रोगादि किसी भी कारण से

प्रव्रजिते मृते काले दशान्तरे मृते रणे।
सन्यासे मरणे चैव दिनैक सूतक भवेत्॥

भावार्थ—जो गृहत्यागी दीक्षित हुआ हो, उत्कृष्ट क्षुल्लक पद ग्रहण किया हो, अथवा मुनि हुआ हो, अथवा देशान्तर में मरण हो, अथवा संग्राम में वा सन्यास में मरण हो तो एक दिन का सूतक होता है।

मते क्षणेन शुद्धि व्रतसहिते चेव सागारे।

भावार्थ—संग्राम, जल, अग्नि, परचक्र, बालसन्यास इनमें यदि व्रती श्रावक का मरण हो जाय तो तत्काल शुद्धि होती है।

व्रतीना दीक्षितानां च याज्ञिकब्रह्मचारिणाम्।
नैवाशौच भवेत्तेषा पितुश्च मरण विना॥

भावार्थ—व्रती, दीक्षित, याज्ञिक और ब्रह्मचारी इनका सिर्फ पिता माता के मरण के सिवाय और किसी का सूतक नहीं होता।

जिनाभिषेकपूजाभ्या पात्रदानेन शुद्ध्यति।

भावार्थ—सूतक निवृत्ति होने के बाद जिनेन्द्र अभिषेक, पूजन और पात्रदान कर शुद्धि होती है।

इति सूतकविधान

संक्षिप्त प्रायश्चित्त संग्रह

वर्तमान समय में जैन समाज में प्रचलित प्रायश्चित्त का एक निराला ही रूप हो गया है। प्रायश्चित्त शब्द से दुष्कृत पाप से शुद्ध होने के लिये होता है। परन्तु वर्तमान प्रायश्चित्त में न तो पाप का नाश होता है और न शुद्धि ही होती [illegible] और [illegible] पद्धतियों में विशेष प्रकार की माया [illegible] में [illegible] पापबन्ध ही होता है।

इसी हेतु से मैंने निम्न कुछ प्रायश्चित्तों का संग्रह किया है। आशा है कि जैन समाज आडम्बर प्रायश्चित्तों की प्रथा को छोड़कर इस जैन शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त विधि के अनुसार ही प्रायश्चित्त देने का प्रचार करेगी, जिससे दोनों और [illegible] उभय आत्माओं का हित हो।

प्रायश्चित्तं शुद्धिः मलहरणं पापनाशनं भवति।

—छेदपिण्ड

भावार्थ—शुद्ध का होना, मल का दूर होना, व पाप का नाश होना प्रायश्चित्त है।

प्रायश्चित्त का प्रमाण

यत् श्रमणानां भणितं प्रायश्चित्तं श्रावकाणामपि।
द्वयोः त्रयाणां षण्णां अर्धार्धक्रमेण दातव्यम्॥

—छेदपिण्ड

भावार्थ—जो मुनियों का प्रायश्चित्त कहा गया है उससे आधा उत्कृष्ट श्रावकों का, उससे आधा मध्यम श्रावकों का, और उससे आधा जघन्य श्रावकों का जानना चाहिए। यहाँ जो प्रायश्चित्त विधान [illegible] है [illegible] की अपेक्षा से है। [illegible] और [illegible] का यह निम्न प्रकार समझ लेना चाहिए।

व्रतों में दोष का प्रायश्चित्त

पञ्चमनुव्रतघाते गुणव्रतशिक्षाव्रतस्य तु उपवास ।
दर्शनाचारातिचारे जिनपूजा भवति निर्दिष्टा ॥

—छेदपिण्ड

भावार्थ—अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रत के घात होनेपर उपवास है। तथा दर्शनाचारादि में दोष लगने पर जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करना ही दृष्ट है।

पंच महापातकों के प्रायश्चित्त

षण्णां सच्छ्रावकाणां तु पंचपातकसन्निधौ।
महामहो जिनेन्द्राणां विशेषेण विशोधनम् ॥
आदावन्ते च षष्ठं स्यात् श्रमणान्येकविंशति ।
प्रमादाद्रोधने शुद्धि कर्तव्या शल्यवर्जितै ॥
द्विगुणं द्विगुणं तस्मात् स्त्रीबालपुरुषे हते।
सदृष्टिश्रावकघाते द्विगुणं द्विगुणं तत ॥

—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—छह प्रकार के जघन्य श्रावकों को पंचमहापातक दोष लगने पर गो, स्त्री, बालक, श्रावक, ऋषि, इनका वध हो जाने पर भी जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करना भी विशेष रूप से प्रायश्चित्त है। निःशल्य होकर प्रमाद और कषायपूर्वक यदि गाय का वध हो जाय तो श्रमणों (यतियों) को आदि अंत में षष्ठोपवास तथा मध्य में २१ उपवास करना चाहिये। इसी प्रकार गो वध से दूना स्त्री वध में अर्थात् स्त्री वध में ४२, बालक-वध में ८४, सामान्य मनुष्य वध में १६८, सम्यग्दृष्टि श्रावक के वध में ३३६ और ऋषि वध में ६७२ उपवास यतियों को करना चाहिये। यहाँ षष्ठोपवास का मतलब यह है कि धारणा और पारणा के दिन १ १ वक्त भोजन करने से दो वक्त भोजन त्याग हुआ, तथा बीच में २ बेला का ४ वक्त भोजन त्याग हुआ, इस प्रकार ६ वक्त भोजन त्याग को षष्ठोपवास कहते हैं।

तृणमासात्यततस्सर्पपरिसपजलौकसाम् ।
चतुर्दश नवायतक्षमणानि वधे छिदा ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—मृग, शशक, रोधप्रादि तृणचर जीवों के वध का १४ उपवास, सिंहादि मांसभक्षियों के वध का १३ उपवास, तित्तर मयूर, कुक्कुट, पारावतादि पक्षियों के वध का १२ उपवास, सर्पनकुलादि के वध का ११ उपवास, गोधादि दुरूलादि परिसर्प के वध का १० उपवास, और मत्स्य मत्स्यादि जलचर जीवों के वध का ६ उपवास का प्रायश्चित्त है।

गर्भस्य पातने पापे प्रोषधा द्वादश स्मृता ।
भावार्थ—गर्भपात के पतन करने में पाप का १२ उपवास प्रायश्चित्त है।

सुतामातृभगिन्यादिचाण्डालीरभिगम्य च ।
अश्नुवीतोपवासाना द्वात्रिंशत् मसमयम् ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—पुत्री, माता, बहिन, आदि तथा चाण्डाली इनके साथ गमन करनेवाले नर को ३२ उपवास करना चाहिये।

मद्य मांस मधु स्वप्ने मैथुन वा निषेवने।
उपवासद्वय कुर्यात् सहस्रैक जपोत्तमम् ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—यदि स्वप्न में मद्य, मांस, मधु इनका व मैथुन का सेवन किया हो तो दो उपवास और एक हजार जाप्य करे।

रेतोमूत्रपुरीषाणि मद्यमांसमधूनि च ।
अभक्ष्य भक्षयेत् षष्ठ दर्पतश्चेद्विषट् क्षमा ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—प्रमादवश यदि रेत, मूत्र, मल, मद्य, मांस, मधु, अभक्ष्य, रुधिर, अस्थि, चर्म, अजानपने खाने में आ गया हो तो छह उपवास का प्रायश्चित्त करे। और यदि उक्त पदार्थ अहंकारपूर्वक सेवन किये हों तो १२ उपवास का प्रायश्चित्त करे।

पंचोदुम्बरादीन् भक्षयति देशव्रती यदि प्रमाददर्पाभ्याम्।
तर्हि तस्य भवतिच्छेदं द्वौ उपवासौ निरानिद्विकम्॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—देशव्रती ने यदि अज्ञानपूर्वक पांच उदुम्बर फलों का सेवन कर लिया हो तो दो उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि अहंकार पूर्वक सेवन किया हो तो दो दिन और तीन रात्रि का उपवास कर प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

कारूकगृहान्नपानाद्भुनासु भुङ्क्ता सुपट् चतुर्थानि।
कारूकपात्रेषु पुनः भुङ्क्ते पंचैव उपवासः॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—कारुक, रजक, चमारादि के गृह में भोजन पान करने से छह उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि उनके पात्रों में भोजन किया हो तो पांच उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

चाण्डाल अन्नपान भुङ्क्ते षोडशा भवन्ति उपवासाः।
चाण्डालानां पात्रे भुङ्क्ते अष्टैव उपवासाः॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—चाण्डाल के अन्नपान का भोजन करने से सोलह उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि उसके पात्रों में भोजन किया हो तो ८ उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा विकलत्रयविघातने।
प्रोपधा द्वि त्रि चत्वारो जपमालस्तथैव च॥
—प्रायश्चित्त

भावार्थ—अज्ञान एवं प्रमाद से यदि दोइन्द्रिय तेइन्द्रिय, और चार इन्द्रिय जीवों का विघात हो जाय तो क्रमसे दो उपवास, तीन उपवास, और चार उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। तथा दो, तीन और चार जाप्य करे।

प्रायश्चित्त-समाप्ति के बाद श्रावक का कर्तव्य

त्रिसन्ध्य नियमस्यान्ते, कुर्यात्प्राणशतत्रयम् ।
रात्रौ च प्रतिमा तिष्ठेज्जितेन्द्रियसहति ॥

भावार्थ—तीनों समय सामायिक करे। तीन सौ उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे। और इन्द्रियों को वश में करता हुआ रात्रि में भी प्रतिमा रूप तिष्ठकर कायोत्सर्ग करे।

कृत्वा पूजा जिनेन्द्राणां, स्नपन ते न च स्वयम् ।
स्नात्वोपध्यमृगराघ च दान देय चतुर्विधम् ॥

भावार्थ—पश्चात् स्नानादि से पवित्र होकर श्री जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेक व पूजन करे। और मुनियों को धर्मोपकरण तथा श्रावकों को चार प्रकार का यथायोग्य दान देवे।

इत्येवमल्पशः प्रोक्त प्रायश्चित्तविधिस्फुटम् ।
अतो विस्तारतो ज्ञेय शास्त्रेष्वन्येषु भूरिषु ॥

भावार्थ—इस प्रकार यह थोड़ी सी प्रायश्चित्त विधि बताई गई है। यदि विस्तार से जानना हो तो प्रायश्चित्तशास्त्रों से जाने।

विशेष—जिस मनुष्य या स्त्री से अपराध हो जाय मात्र उन्हीं को ही प्रायश्चित्त लेना चाहिये। अन्य बन्धुवर्ग तथा कुटुम्ब के जन अपराधी नहीं होते।

इति प्रायश्चित्त विधि

कायोत्सर्ग विधि

प्रारम्भे समाप्ते च स्वाध्याय स्तवनादिषु।
सप्तविंशतिरुच्छ्वास कायोत्सर्ग मता इह॥

भावार्थ—प्रारम्भ के आदि में व अन्त में, तथा स्वाध्याय में, स्तवन में, २७ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे।

अष्टाविंशतिमूलेषु दिनस्य मलशुद्धय।
अष्टाग्रशतमुच्छ्वास निशायामपि तद्दलम्॥

भावार्थ—अट्ठाइस मूलगुणों में अथवा व्रतों में अतीचार लगने पर १०८ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे। यदि दिन में कोई दोष लग गया हो तो भी १०८ बार प्रमाण श्वासोच्छ्वास से कायोत्सर्ग करे। और रात्रि में कोई दोष लग जाय तो ५४ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे।

पाक्षिक त्रिशत ज्ञेय चतुर्मासिसमुद्भवे।
चतु शत शत पंच सांवत्सरे यथागमम्॥

भावार्थ—जहाँ १५ दिन में कोई दोष लग गया हो तो ३०० श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे। और यदि ४ मास में कोई दोष लग गया हो तो ४०० श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे।

पंचविंशतिरुच्छ्वास भोजने जिनवन्दनाम्।
गते मखे निषद्याणां पुरीषादिविसर्जनम्॥

भावार्थ—भोजन को जाते समय मार्ग में कोई दोष लग जाय या गुरुजनों की वन्दना को जाते समय कोई दोष लग जाय अथवा स्थान तजते समय, मल, मूत्र, नाक, श्लेष्म छोड़ते समय कोई दोष आ जाय तो २५ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे। (आचारसार से उद्धृत)।

इति कायोत्सर्ग विधि

सामायिक विधि

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम्॥

भावार्थ—समस्त संसारी जीवों में समता भाव करना, संयम के पालन करने की भावना करना, और आर्त रौद्रध्यान का त्याग करना ही सामायिक है।

सामायिक शब्द की निरुक्ति (भाव)

१—सम (एकरूप) आय (आगमन) अर्थात् परद्रव्यों से निवृत्त होकर आत्मा में उपयोग की प्रवृत्ति होना।

२—सम (रागद्वेषरहित) आय (उपयोग की प्रवृत्ति) अर्थात् राग द्वेष परिणति का अभाव होकर साम्य रूप परिणति का होना सो सामायिक है।

पवित्रवस्त्रः सुपवित्रदेशे, सामायिकं मौनयुतश्च कुर्यात्।

अर्थात्—पवित्र वस्त्र पहिनकर, पवित्र स्थान में बैठकर मौनपूर्वक सामायिक प्रारम्भ करे।

सामायिकोपयोगी आवश्यक नियम

सामायिक करने के पहले अष्टशुद्धियों पर ध्यान देना जरूरी है। क्योंकि बाह्य कारणों की यथायोग्यता पर विचार न किया जाय तो सामायिक का यथार्थ रूप प्राप्त होने में सन्देह रहता है।

अष्टशुद्धियाँ

१—द्रव्य (बाह्य) शुद्धि—पंचेन्द्रिय तथा मन को वशकर अन्तरंग कषायों को निकालकर और बाह्य पदार्थों का त्याग कर षट्काय के जीवों की

दिशा त्याग दी एम उत्तम पात्र तो सयमी साधु है और अभ्यासी सयमी श्रावक सामान्य पात्र है।

२—क्षेत्र (स्थान) शुद्धि—जहाँ कलकलादि शब्द सुनाई न पड़े तथा जहाँ डास, मच्छर आदि बाधक जन्तु न हो। चित्त मे क्षोभ उत्पन्न करनेवाले उपद्रव एव शीत उष्ण आदि की बाधा न हो, ऐसा एकान्त निर्जन स्थान सामायिक के योग्य है।

३—कालशुद्धि—प्रभात, मध्याह्न और सन्ध्या समय, उत्कृष्ट ६ घड़ी, मध्यम ४ घड़ी, और जघन्य २ घड़ी तक सामायिक करे।

४—आसनशुद्धि—काठ, शिला, भूमि, रेत, या शीतल पट्टी पर पूर्व दिशा या उत्तर की ओर मुख करके पद्मासन, खड्गासन या अर्धपद्मासन, होकर क्षेत्र तथा काल का प्रमाण करके मौन ग्रहणकर सामायिक पाठ प्रारम्भ करे।

५—विनयशुद्धि—आसन को कोमल वस्त्र या बुहारी से बुहारकर ईर्यापथ शुद्धिपूर्वक सामायिक प्रारम्भ करे।

६—मनशुद्धि—शुद्ध विचारो की तरफ उपयोग रखना।

७—वचन शुद्धि—धीरे धीरे साम्यभाव पूर्वक मधुर स्वर से पाठ उच्चारण करना।

८—कायशुद्धि—शौच आदिक शकाओंसे निवृत्त होकर यत्नाचारपूर्वक शरीर शुद्ध करके हलन चलन क्रिया रहित सामायिक प्रारम्भ करना।

सामायिक के पाँच अतीचार

१—२—३—मन, वचन, काय की अशुभ प्रवर्तना।

४—सामायिक करने मे अनादर करना।

५—सामायिक का समय व पाठ भूल जाना।

उक्त आठ शुद्धियों पर ध्यान देते हुए पाँच अतीचारों को बचाकर सामायिक प्रारम्भ करे।

मन्त्रोच्चारण

सामायिक करते समय णमोकार मन्त्र को ३ श्वासोच्छ्वासोंमें १ बार पढ़ना चाहिये। १०८ बार मन्त्र के जाप में ३२४ श्वासोच्छ्वास होंगे।

आसन पर खड़ा होकर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके 'अहं समस्त सावद्ययोगविरतोस्मि' ऐसा कहकर ६ बार अथवा ३ बार नमस्कार मन्त्र जपकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ३ आवर्त और एक शिरोनति करे।

(१) आवर्त—दोनो हाथ जोड़ बायें से दाहिने तरफ घुमाने को आवर्त कहते हैं।

(२) शिरोनति—तीन आवर्त करके एक बार शिर नवाकर नमस्कार करना।

नमस्कार करने का मन्त्र

प्राग्दिग्विदिगन्तरत केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवा।
ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वन्दे॥

यह मन्त्र पूर्व दिशा का है। बाकी दिशाओं के लिये उक्त मन्त्र आदि के 'प्राग्दिग्' के स्थान में 'दक्षिणदिग्' इसी तरह 'पश्चिमदिग्' और उत्तर में 'उत्तरदिग्' पाठ बदलकर बाकी दिशाओं में पढ़ता हुआ नमस्कार करे।

इस प्रकार चारों दिशाओं में ३६ बार मन्त्र १२ आवर्त, और ४ नमस्कार कर पद्मासनादि आसनमाड़ प्रथम सामायिक पाठ संस्कृत (भाषा) पढ़े। पश्चात् बारह भावना, वैराग्य भावना आदि बहुत धीमे धीमे उस पाठ का भाव समझते हुए पढ़े। फिर नमस्कार मन्त्र का १०८ बार जाप्य करे। जाप्य शुरू करने के पहले '*ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्रेभ्यो नमः।*' इसको पढ़ लेवे। और इसी प्रकार जाप्य के अंत में भी पढ़े।

जाप्य की विधियाँ तीन हैं

१—कमल जाप। २—हस्तांगुलिजाप्य। ३—माला जाप।

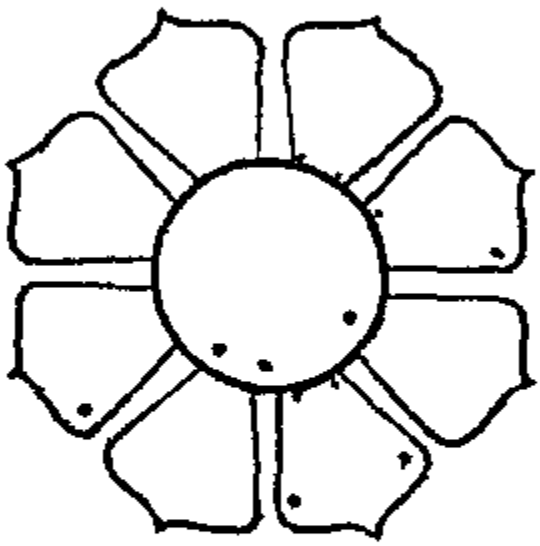

(१) *प्रथम कमल जाप्यविधि*—अपने हृदय में आठ पाखुरी के एक श्वेत कमल का विचार करे। उसकी हरेक पाखुड़ी पर पीतवर्ण के बारह बारह बिन्दुओं की कल्पना करे। तथा मध्य के गोल वृत्ति में १२ बिन्दुओं का विचार करे। इन १०८ बिन्दुओं में प्रत्येक बिन्दु पर एक एक मंत्र का जाप्य करता हुआ १०८ बिन्दुओं पर १०८ जाप्य जपे। कमल आकृति निम्न प्रकार है —

(२) *हस्तांगुलि जाप्य*—हाथ की प्रत्येक अंगुली में ३ पोरवे होते हैं। इस प्रकार एक हाथ की चारों अंगुलियों में १२ पोरवे कुल होते हैं। दाहिने हाथ के प्रत्येक पोरवे पर एक एक बार नमस्कार मंत्र जपे, इस प्रकार दाहिने हाथ की चारों अंगुलियों के १२ पोरवे पर १२ मंत्र हुए। १२ मन्त्र हो जाने पर बाएं हाथ के प्रथम अंगुली के प्रथम पोरवे पर अंगूठा रखे इस प्रकार ९ बार में १०८ बार मन्त्र जाप्य हो जायेगा।

(३) *माला जाप्य*—१०८ दाने की माला सूत की बनाकर उसके द्वारा जाप्य करे।

इस प्रकार किसी प्रकार से जाप्य पूर्ण करके कोई स्तुति पाठ वगैरह पढ़ने का अवकाश हो तो पढ़े। बाद पहले की तरह खड़ा होकर चारों दिशाओं में ९।९ बार नमस्कार मन्त्र जपे और तीन तीन आवर्त तथा पूर्ववत् मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं में ४ नमस्कार जाप्य पूर्ण करे।

ततः समुत्थाय जिनेन्द्रबिम्बं पश्येत्परं मंगलदानदक्षम्।
पापप्रणाशं परपुण्यहेतुं सुरासुरैः सेवितपादपद्मम्॥

भावार्थ—सामायिक से उठकर चैत्यालय में जाकर सब तरह के मंगल करनेवाले, पापों को क्षय करनेवाले, सातिशय पुण्य के कारण और सुर तथा असुरों द्वारा वन्दनीय ऐसे श्रीमज्जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन करे।

सामायिक से लाभ

सामायिक करने के समय क्षेत्र तथा काल का प्रमाण कर समस्त सावद्य योगों का (गृह व्यापारादि पापयोगों का) त्याग करने से सामायिक करनेवाले गृहस्थ के सब प्रकार के पापास्रव रुककर सातिशय पुण्य का बंध होता है, उस समय उपसर्ग में ओढ़े हुए कपड़ा युक्त होनेपर भी मुनि के समान होता है। विशेष क्या कहा जाय—अभव्य भी द्रव्य सामायिक के प्रभाव से नवग्रैवेयक पर्यन्त जाकर अहमिन्द्र हो सकता है। सामायिक को भावपूर्वक धारण करने से शान्ति सुख की प्राप्ति होती है, यह आत्म तत्त्व की प्राप्ति परमात्मा होने के लिये मूलकारण है। इसकी पूर्णता ही जीव को निष्कम अवस्था प्राप्त कराती है।

जाप्य में १०८ दाने होने का कारण

१ संरंभ, २ समारंभ, ३ आरंभ, इन तीनों को मन, वचन, काय, इन तीनों से गुणा किया तो ९ भेद हुए। इन ९ को कृत, कारित, अनुमोदना इन तीनों से गुणा किया तो २७ भेद हुए। इन २७ भेदों को क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चार कषायों से गुणा तो १०८ भेद हुए। १०८ भेद ही पापास्रव के कारण हैं, इनके द्वारा ही पापास्रव होता है अतः इनका नष्ट करने हेतु १०८ बार जाप्य किया जाता है।

इति सामायिक विधि

मेरी भावना

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो।
मिथ्यात्व राग विद्वेष का नित आत्म से संहार हो॥
न्यायमार्ग में जगत निर्भीकता से रक्त हो।
ज्ञान अरु चारित्र उन्नति में सदा आसक्त हो॥
वीर वाणी पर सभी संसार का विश्वास हो।
जिनधर्म के माहात्म्य से प्रत्येक का स्वविकास हो॥
रोग भय दुर्भिक्षका जग से सदा परिहार हो।
मोह मद मात्सर्य नश अति प्रेम का संचार हो॥
शांति अरु आनन्द का हर एक घर में वास हो।
मैत्री-प्रमोद माध्यस्थ करुणा नित्य इन सुविचार हो॥
रूढ़ियाँ जो व्याप्त हैं उनका सदा संहार हो।
अकलङ्क हों वीर 'वारे' जगत का उद्धार हो॥

इष्ट कामना

धर्मो जैनोऽपविघ्नो प्रभवतु भुवने सर्वदा शर्मदायी,
शान्तिं प्राप्नोतु लोको धरणिमवनिपा न्यायतः पालयन्तु।
हत्वा कर्मारिवर्गं यमनियमशरैः साधवो यान्तु सिद्धिं,
मिथ्यात्वध्वस्तशुद्धबोधा निजहितनिरता जन्तवः सन्तु सर्वे॥

भावार्थ—जगत् में निरन्तर सुख देनेवाला जिनधर्म विघ्नरहित हो लोगों में शान्ति रहे, राजा लोग न्याय से पृथ्वी का पालन करें, साधुजन यम नियम रूपी बाणों से कर्म शत्रुओं को नष्ट कर सिद्धि को प्राप्त हों, और समस्त प्राणी जन मिथ्याज्ञान का नाश कर अपने हित में तत्पर रहें।

यह ग्रन्थ चिरकालतक वर्तमान रहे

यावत्सागरवेष्टितो जलनिधिं श्लिष्यन्ति वीचीभुजैः
भर्तारं सुपयोधरा इन्दरवा मानवता चाङ्गना।
तावत्तिष्ठतु शास्त्रमेतदनघं संसेव्यते कोविदैः
सच्च शास्त्रविचारकैरनुदिनं व्याख्यायमानं मुदा॥

भावार्थ—जब तक यह स्वर कान्ता नदीरूपी स्त्रियाँ अपने लहर रूपी बाहों से समुद्र रूपी भर्तार को आलिङ्गन करती हैं, तब तक चारित्र शास्त्र (चरणानुयोग) के ज्ञाता विद्वानों द्वारा प्रसन्नता के साथ व्याख्यान होता हुआ यह व्रत विधान-संग्रह पृथ्वी पर स्थिर रहे।

क्षमा-याचना

यत्पुनरुक्तमयुक्तं दुरुक्तमिह तद्विशोधितं युक्तम्।
बद्धाञ्जलिनेति मयाऽभ्यर्थ्यन्ते सकलगीतार्था ॥

भावार्थ—इस ग्रन्थ में मैंने पुनरुक्त अयुक्त या दुरुक्त कहा हो तो उसको समस्त ज्ञानी पुरुष शुद्ध कर लें, ऐसी हाथ जोड़ प्रार्थना है।

अन्तिम मंगल-कामना

मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम्।
मंगलं साधवः सन्तु भूमौ भूपतिमंगलम् ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

बारह भावना

१ अनित्य भावना

संसार में सुत सुता सजनी सजन अरु सीमन्तिनी।
गो गेह गज तारुण्य तन, सम्पत्ति सकट शालिनी॥
सब चंचला चपला सदृश, अस्थिर यही निश्चय करो।
मोहित न होकर के इन्हामें स्वात्म हित साधन करो॥

२ अशरण भावना

सुर असुर सुरपति नृपति खगपति वैद्य निर्धन अरु धनी।
विद्वान् मूरख सुभग दुर्भग गुणी अथवा अगुणी॥
संसार में कोई मरण से है बचा सकता नहीं।
चाहे करें वे मन्त्र औषधि तन्त्र जितने ही सभी॥

३ संसार भावना

सुर नर नरक तिर्यंच गति में जाय दुस्सह दुख सहे।
कर पंच परिवर्तन तथा नित कर्म से पीड़ित रहे॥
नि सार यह संसार सबविध सार कुछ भी है नहीं।
भूले हुए हो व्यर्थ क्यों इसमें न सुख साता कहीं॥

४ एकत्व भावना

प्राणी शुभाशुभ कर्मफल सहता अकेला आप है।
साता असाता बाँट सकता नहीं कोई आप है॥
माता पिता सुत सुता सजनी सजन पति पत्नी सभी।
हैं स्वार्थ के साथी सभी नहिं दुःख के साथी कभी॥

५ अन्यत्व भावना

प्राणी तथा पुद्गल परस्पर में सदा से ह मिले।
पर ह पृथक् क पृथक् दोनों नीर पय ज्या हों मिले॥
अतएव जब ससार में तन भी तुम्हारा है नहीं।
तो धन तथा परिजन तुम्हारे कहो हो सकते कहीं॥

६ अशुचि भावना

जो पल रुधिर मल राध अथवा कीमशादिक से भरी।
ससार में जिससे सदा ही अशुचिता फैले खरी॥
जो सदा नव माग से नित मल बहाता हा रहे।
ऐसी अपावन दह को हे जीव तू क्या कर चहे॥

७ आस्रव भावना

मन वचन तन त्रय योग द्वारा कम जल नित आ रहा।
नर देह नौका से तुम्हें जग जलधि बीच डुबो रहा॥
जिससे तुम्हें या पार होना दूर उसमें हो रहे।
साचो जरा जग जलधि में नौका न जिससे एक रहे॥

८ सवर भावना

त्रय गुप्ति पच समिति परीषह और चारित से सभी।
रोक दो मन काय वच से छिद्र नौका के अभी॥
क्षोभित न हो करके तुम्हारी नाव तिरने के लिये।
जिससे समर्थ बने तुम्ह भवपार करने के लिये॥

९ निर्जरा भावना

पूर्व का सचित किया जो कर्मरूपी नीर है।
जिससे तुम्हारो नाव देखो डूबने में लीन है॥
लेकर विशाल कपाल कर में अब उलीचो वह सभी।
ससार सागर पार नौका यह तुम्हारी हो तभी॥

१० लोक भावना

नभ में चतुर्दश राजु परमित एक लोकाकाश है।
है स्वय सिद्ध अनादि से कर्त्ता न हर्त्ता खास है॥
धर त्याग नाना भाति इसमें जीव सहता त्रास है।
इसके उपरि अष्टम धरा हो सिद्ध सुख की राशि है॥

११ धर्म भावना

स्व-स्वभाव ही तो आतमा का श्रेष्ठ सुदर धर्म है।
औपाधि भावों को कराता आतमा से कर्म है॥
तज कर्म कारण जीव स्व स्वभाव में ही लीन हो।
तजकर समस्त विभाग निज सुख में सदा लवलीन हो॥

१२ बोध दुर्लभ

दुर्लभ्य नित्य निगोद से व्यवहार में है आवता।
दुर्लभ्य त्रस पर्याय से है कठिन नरतन पावता॥
दुर्लभ्य श्री जिनधर्म से भी बोध दुर्लभ पावना।
अतएव ! आतम हित करो भी नित्य बारह भावना॥

ग्रन्थकर्ताका परिचय

चौपाई

जम्बूद्वीप द्वीपन में सार, योजन लाख तना विस्तार।
ताकी दक्षिण दिशा अनूप, भरत क्षेत्र सोहे जिमि भूप॥
आर्यखण्ड है तामें सार, असि मसि आदिक छह आचार।
तामें खण्ड बुन्देल प्रधान, राज्य आरछा अति सुखदान॥
राजधानी टीकमगढ़ नाथ, 'वीरसिंह' भूपति वर होय।
पूरब दिशि चय मील प्रमाण, अतिशय क्षेत्र पपौरा जान॥
तहँ से द्वादश माल मनोग, अतिशय क्षेत्र अहार सुयोग।
ताके बीच मनोहर धाम, पुट्टा ग्राम शोभे अभिराम॥
धर्मवन्त श्रावक निवसत, त्रय जिन भवन महा विलसत।
गोलापूर्व जातिवर सार, पाण्डेलीय गोत्र अवतार॥
सिंघई बखत तसु पुत्र गुलाब, वैद्यक विद्या में निष्णात।
तिनके चार पुत्र सुखदाय, भगवानदास द्वितीय कहाय॥

वैद्यक ज्योतिष शास्त्र प्रवीण, वैद्यरत्न पदवी शुभ लीन।
तिनके सुत तीन वर लाल, तिनमें ज्येष्ठ सु बाबूलाल॥
ज्योतिष वैद्यक मन्त्र के तन्त्र, प्राणप्रतिष्ठा सिद्ध के यन्त्र।
गायन विद्या में सु प्रवीण, श्रावक धर्म लियें लवलीन॥
श्री स्याद्वाद दिगम्बर जैन, कियो औषधालय सुखदैन।
बहु देशान्तर रोगी आय, लहि आरोग्य सु निज घर जाहिं॥
उपभोगान्तराय वश थाय, सुपुत्राइ मिल्यो नियाय।
शीलवान धर्मिष्ठ सुजान, गृहकार्य में कुशल महान॥
सुताचार अरु आठ सुनन्द, डाक्टर श्री कपूरचन्द्र।
बाबूलाल' महेन्द्रकुमार', चौथे श्री 'धर्मेन्द्रकुमार॥
जयकुमार धर्मेन्द्रकुमार' श्री जैनेन्द्र 'सुरेन्द्रकुमार।
सुता शान्ति कस्तूरी' जान, चम्पा' कमला' चार मान॥
व्रत विधान आगम अनुसार, तिन निमित्त रचियो सुखकार।
जे भवि मन धर उर आचरें, ते नर मुक्ति कामिनी वरें॥
होय जगत उपकार महान, यही भावना धर सब भव।
मन्द बुद्धि वश त्रुटि जो होय, क्षमा करो सो पंडित जन॥

दोहा

संवत वीर चौबीस शत, अधिक बहत्तर जान। २४७२
दीपमालिका के दिवस पूरण ग्रन्थ बखान॥

इसके पूर्व के सभी सूचीपत्र रद्द किये गये

संस्थापित सन् १८५३

सूची-पत्र

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्यूनिसिपल बोर्ड, राजकीय व सार्वजनिक धर्मार्थ औषधालयों, डाक्टरों व वैद्यों के लिये एकमात्र विश्वस्त स्थान

श्री स्याद्वाद जैन औषधालय

पठा, शाखा—कटरा बाजार,

टीकमगढ़ (वि. प्र)

संचालक—

चिकित्सक चूड़ामणि राजवैद्य, ज्योतिषरत्न

प० बारेलाल कपूरचन्द्र जैन आयुर्वेदाचार्य

डी० आइ० एम० एस०

रजिस्टर्ड नं० २२०३ प क्लास (I. M. B.) U P

१ जनवरी १९५३

एजेन्सी-नियम

१—कोई भी व्यक्ति या वैद्य कमीशन काटकर कम से कम १०) (नेट) की औषधियाँ प्रथम बार लेगा, वही एजेन्ट स्वीकृत होगा।

२—एजेन्सी के लिये १०) रुपया रक्षाधन जमा करना आवश्यक होगा। जो एजेन्सी के बन्द हो जाने पर वापस कर दिया जायगा।

३—औषधियाँ नगद मूल्य से अथवा वी० पी० द्वारा ही भेजी जावेंगी।

४—मँगाई हुई औषधियाँ यदि तीन मास तक एजेन्ट से न बिक सकें तो ऐसी औषधियाँ कि जिनका पैकिंग यथाविधि ठीक हो उन्हें वापिस कर उनके स्थान में अन्य औषधियाँ मँगा सकते हैं।

एजेन्सी कमीशन और सुविधा

१—हमारे औषधालय की आविष्कृत औषधियों पर २५% प्रतिशत तथा हमारे औषधालय द्वारा केवल निर्मापित आयुर्वेदिक औषधियों पर १२॥% प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा।

२—एक साथ ३०) रुपया का माल मँगाने पर पैकिंग व खर्च तथा १००) रुपया का माल मँगाने पर मालगाड़ी का किराया फ्री रहेगा। पारसल गाड़ी से मँगाने पर आधा किराया तथा पोस्ट पारसल से माल मँगाने पर पूरा किराया ग्राहक को ही देना होगा।

३—एजेन्ट बन जाने पर कम से कम ५) रुपया के आडर पर भी उपर्युक्त हिसाब से बराबर कमीशन मिलता रहेगा।

४—औषधियाँ तौल तथा पैकिंग आदि पूर्ण रूप से देखकर भेजी जाती हैं। रास्ते की कमी व टूट फूट का जिम्मेवार औषधालय नहीं होगा।

५—प्रत्येक कानूनी कार्यवाही 'टीकमगढ़ न्यायालय' में ही होगी।

६—बिना किसी पूर्व सूचना के परस्थिति के अनुसार मूल्य में परिवर्तन करने का अधिकार औषधालय को होगा।

७—आडर भेजते समय अपना नाम व पूरा पता साफ साफ लिखें।

८—प्रत्येक आडर के साथ मूल्य का चौथाई पेशगी आने पर ही माल भेजा जा सकेगा।

चि० चूड़ामणि ज्योतिषाल राजवैद्य प० बारेलाल जैन
संचालक—[illegible] जैन औषधालय पटा
[illegible]—[illegible]नगर

आद्य निवेदन

आज हम अपने औषधालय का यह नया सूची-पत्र प्रकाशित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि हमारे इस औषधालय का कार्य दिन प्र दिन वृद्धि को प्राप्त होता जा रहा है। बिना किसी विशेष प्रचार किये भी ग्राहकों की संख्या की वृद्धि होना ही सफलता का विशेष प्रमाण है। जिस किसी भी रोगी ने एक बार भी हमारे साथ व्यवहार कर लिया कि वह हमारी सचाई तथा औषधियों की विशुद्धता को समझकर सदैव को ग्राहक बनकर ही रहता है। यहाँ ग्राहकों से यह निवेदन कर देना भी अनुचित नहीं समझता हूँ कि औषधियों की उत्तमता पर ही स्वस्थ जीवन अव लम्बित है। औषधियों में अधिक मूल्य एवं अल्प मूल्य के लोभ में अपने अमूल्य जीवन को नष्ट न कर देना ही बुद्धिमत्ता का काम है।

मेरे यहाँ पर यह कार्य कई पीढ़ियों से होने के कारण तथा मे भी ३१ वर्ष के निजी अनुभवों में आये हुए अनेकों बार के परीक्षित, अनुभूत एवं सद्यफलप्रद योगों का संग्रह होने स और अपनी ही पूर्ण देख रेख में शास्त्रोक्त विधिपूर्वक उत्तम वनस्पतियों द्वारा औषधियों का निर्माण कराने के कारण भारतवर्ष के कई प्रान्तों (यू० पी० सी० पी०, पंजाब, मारवाड़, म प्रदेश) आदि के असाध्य घोषित किये हुए सहस्रों मरणासन्न रोगी जन स्वास्थ्य लाभ करते आ रहे हैं। अतएव इन योगों की अधिक माँग होने के कारण इन उत्तमोत्तम योगों को सर्वसाधारण के लाभार्थ, निम्नाथ भी विशेष संग्रह कर रहा हूँ। आशा है कि जनता को अब और भी विशेष लाभ पहुँचाने में कारण बन सकूँगा।

पठा (ग्राम) में पहुँचने की असुविधा के कारण मैंने औषधालय की एक ब्रांच 'कटरा बाज़ार, टीकमगढ़' में भी स्थापित कर दी है जिससे जनता को शीघ्र सद्यफल देनेवाली औषधियाँ यहाँ से भी प्राप्त हो सकेंगी।

हमारे औषधालय के व्यवस्थित कार्य तथा चिकित्सानुभव को देखकर रोगीजन वर्ग, डाक्टरों तथा राज्य के प्रमुख अधिकारियों एवं मान्य विद्वानों ने अनेक शुभ सम्मतियाँ एवं सम्मानपत्र प्रदान कर बहुत प्रोत्सा हन दिया है अतः निवेदन है कि औषधियाँ खरीदते समय 'स्याद्वाद जैन औषधालय', यह नाम अवश्य देख लें।

—संचालक

हमारे यहाँ की सहस्रों वार की परीक्षित और शीघ्र गुण दिखानेवाली उत्तमोत्तम औषधियाँ

स्याद्वाद अमृतसिंधु—हैजा, जी मिचलाना, कै, दस्त, माथा घूमना, नेत्ररोग, दाह, अरुचि, ज्वर, बिच्छू का विष, शिरदर्द, कुकुरखाँसी, अजीर्ण, पेटदर्द, फोड़ा, फुन्सी, आदि पर रामबाण। **की० १) प्रति शीशी**

स्याद्वाद अर्क कपूर—हैजा तथा कै दस्त आदि की लोकोत्तम दवा। **कीमत ।।।) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद अर्क पुदीना—समस्त प्रकार के कै और दस्त में शर्तिया आराम। **कीमत ।।।) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद पाक—नपुंसकता, गया के बाद की निर्बलता नाशक एवं अत्यन्त धातु-पोषक। **कीमत ७) प्रति सेर।**

स्याद्वाद च्यवनप्राश—(अष्टवर्गयुक्त)—समस्त जीर्ण ज्वर एवं क्षय (टी० बी०) खाँसी, श्वास, स्वर भंग, निर्बलता, प्रमेहादि पर। **कीमत २।।) आधा पौण्ड।**

स्याद्वाद यकृत् सीहान्तक अर्क—जीर्णज्वर, यकृत् (लीवर), सीहावृद्धि पाण्डु, शोथ, मलावरोध आदि उदर रोगों पर। **कीमत ४।।।=) प्रति बोतल २।।=) प्रति अद्धा।**

स्याद्वाद ज्वरकेशरी—इकतरा, तिजारी, चौथिया, आदि फसली ज्वरों पर रामबाण। **कीमत १।=) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद नेत्रसुधाकर अर्क—दुखती हुई आँखें, पलकों की सूजन, नेत्रशूल आदि में तत्काल लाभदायक। **कीमत, बड़ी शीशी ।।) छोटी शीशी ।-)**

स्याद्वाद राहातर अर्क—आँखों के रोहे, पलकों की सूजन, नेत्रशूल आदि में लाभदायक। **कीमत ।।) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद शक्तिसंचय बटी—समस्त प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, धातु निर्बलता, शीघ्रपतन नाशक और अत्यन्त धातु पौष्टिक। **कीमत २।।) प्रति पैकिट।**

स्याद्वाद बालमित्र—बालशोष (सूखारोग),

र, आँव, खाँसी, ज्वर, मन्दाग्नि, आदि को दूर कर बालकों को अत्यन्त
पुष्ट और शक्ति सम्पन्न करता है। कीमत १) प्रति शीशी।

स्याद्वाद ठंडा सुरमा—नेत्रों की जलन, आँसू बहना, लालामी, आदि आँख सम्बन्धी रोगों पर लाभप्रद। कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद ममीरा का सुरमा—आँखों की धुंध, जाली, माड़ा, , नाखून का बढ़ना आदि में लाभप्रद। कीमत १) प्रति शीशी।

स्याद्वाद प्रदरान्तक अशोक अर्क—श्वेत रक्त काला पीला
त् कैसा ही भयंकर प्रदर क्यों न हो तथा और भी स्त्रियों के समस्त
में शर्तिया आराम। कीमत ८॥) प्रति बोतल।

स्याद्वाद सार्सापरिला—(उशबा का अर्क)—समस्त प्रकार
र विकार एवं सामान्य कुष्ठ, खाज, खुजली, फोड़ा, फुन्सी आदि रक्त
र में रामबाण। कीमत ३॥) प्रति बोतल।

तिजारी की लोकोत्तम दवा—तीसरे दिन तथा चौथे दिन
वाले बुखार पर रामबाण। कीमत ॥) प्रति शीशी।

महानारायण तैल—सब प्रकार के वात रोगों पर।
कीमत छोटी शीशी १।) बड़ी शीशी ८॥=)।

स्याद्वाद ज्वरारि तैल—सब प्रकार के ज्वर, क्षय (टी० बी०)
न, रक्त विकार आदि में लाभदायक।
कीमत छोटी शीशी १।) बड़ी शीशी १॥=)।

स्याद्वाद ब्राह्मी तैल—(स्पेशल) शिर के समस्त रोग एवं
र दर्द, माथा घूमना, शिर की जलन, स्मरण शक्ति का कम होना,
स्तिष्क की कमजोरी नाशक। कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद ब्राह्मी तैल—उपरोक्त गुणों से कुछ न्यून गुणवाला।
कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद आँवला तैल—(स्पेशल) मस्तिष्क की कमजोरी
की जलन नाशक और मनोहर सुगन्धि युक्त। कीमत ॥) प्र० शी०

स्याद्वाद आँवला तैल—उपरोक्त गुणों से कुछ न्यून।
कीमत ।) प्रति शीशा।

स्याद्वाद मौलश्री तैल—अत्यन्त सुगन्धयुक्त।
कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद गुलाब तैल „ „ ॥) „ „
स्याद्वाद चमेली तैल „ „ ॥) „ „
स्याद्वाद सतरा तैल „ „ ॥) „ „

स्याद्वाद बाम—कैसा ही भयङ्कर सिरदर्द क्यों न हो, मलते मलते आराम।
कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद खाजरिपु—खाज, खुजली, फोड़ा, फुन्सी आदि में लाभदायक।
कीमत ॥) प्रति १ औंस शीशी।

स्याद्वाद दद्रु प्रहार—कैसा ही [illegible] क्यों न हो शर्तिया आराम।
कीमत ।) प्रति १ औंस शीशी।

राजवटी—सब प्रकार की वात [illegible] की दवा।
कीमत १।) प्रति ६० गोली पैकिट।

नमक सुलेमानी—अत्यन्त स्वादिष्ट और पाचक।
कीमत ।-) प्रति १ औंस शीशी।

परनाल शत्रु—आँखों के परवाल (बाल गिरने) की अनुभूत दवा।
कीमत १) प्रति शी०

सुगंधित वैसलीन—[illegible] आनेवाली मनमोहक सुगन्धियुक्त।
कीमत ॥।) प्रति शी०

व्रणामृत तैल—व्रणपाक, [illegible] का जख्म, नहरुआ व्रणशूल आदि में लाभदायक।
कीमत ॥।) प्रति शी०

बाल कृमि केशरी—[illegible] उत्तम दवा।
कीमत १।) प्रति शी०

उदर कृमि केशरी—[illegible] की अचूक दवा।
कीमत १।) प्रति

स्याद्वाद टिचर—चार की दवा। कीमत ॥) प्रति शी०

विषम ज्वरातक अर्क—जीर्णज्वर तथा मलेरियादि ज्वर पर। कीमत ३॥) प्रति बोतल।

दर्दहर तैल—स्थानिक दर्दों की अचूक दवा। का० १।) प्र० शी०

सुगंधित दंत मंजन—दाँतों के समस्त रोगों को दूर कर दाँत मजबूत करनेवाली दवा। कीमत ॥) प्र० शी०

स्याद्वाद गृहणी रिपु—समस्त प्रकार के दस्तों को बंद करने में अचूक। कीमत प्रति पैकिट ४० गोली २॥)

दर्दहर पौडर—सभी प्रकार के शारीरिक दर्द पर। कीमत ॥) प्र० शी०

बिच्छू विषहर पौडर—बिच्छू विष दूर करने की अचूक दवा। कीमत ।।) प्र० शी०

शुद्ध शोधित हर्रें—अत्यन्त स्वादिष्ट पाचक। कीमत १०० गोली ।)

नकसीरांतक पौडर—किसी भी कारण से खून का बहाव क्यों न हो शर्तिया बन्द करनेवाली दवा। कीमत ।।) प्र० शी०

श्वास कासांतक बीड़ी—श्वास का रोग रोकने में अचूक। कीमत एक पैकिट १२ का ।।)

कामलांतक पौडर—पीलिया रोग की दवा। कीमत ॥) प्र० तोला

स्वदेशी चाय—यह चाय के समस्त दुर्गुणों से रहित होने पर भी जुकाम, खाँसी, स्थानिक दर्द, गले का दर्द हड़फूटन आदि में तत्काल लाभ देती है। कीमत प्रति पैकिट ॥)

शास्त्रोक्त औषधियाँ

अकीक भस्म (हृदय रोग, प्रमेह, प्रदर)	२॥) प्रति तोला
अकीक पिष्टी (हृदय रोग, प्रमेह, प्रदर)	३) ,,
अभ्रक भस्म नं० १ (क्षय, कास, श्वास, रसायन)	६।) प्र०तान मा०
अभ्रक भस्म नं० २ ,, ,, ,,	१०) प्र० तो०
अभ्रक भस्म नं० ३ ,, ,, ,,	४) ,,
अग्निकुमार रस (अजीर्ण, शूल, प्लीहा, अतीसार)	।॥) ,,
अश्वकंचुकी रस (घोड़ाचोला रस) रेचक	१) ,,
अर्शांतक वटी (बवासीर के लिए)	१) ,,
अर्शांतक लेप ,,	॥) ,,
अद्भुत जुलाब (इच्छानुसार रेचक)	१) ,,
आनंदभैरव रस नं० १ (ज्वरातिसार, विशेष काम)	॥) ,,
आंवला तैल नं० १ सरल (अत्यन्त सुगंधियुक्त)	।॥) प्र० शी०
आंवला तैल नं० २ ,,	॥) ,,
इच्छाभेदी रस (इच्छानुसार रेचक)	१) प्र० तो०
उदर सफा चूर्ण (रेचक)	।) ,,
एलादि गुटिका (उर क्षत, कास)	।॥) ,,
कफकुठार रस नं० १ (कास, श्वास, कफ)	२) ,,
कफकुठार रस नं० २ (कफ, श्वास, ज्वर)	।॥) ,,
कफकेतु रस (पीनस श्वास, कास)	६) ,,
कर्पूरादि वटी (खांसी ज्वर)	१।) ,,

कस्तूरी भैरव रस (घोर सन्निपात)	४) प्र०	तीन माशा
कर्पूर रस (अतीसार)	७)	प्रति तोला
कांत लोह भस्म (रक्तल्पता, शोथ नाशक)	१०)	,,
कांस्य भस्म (उदररोग कृमि दूर)	१)	,,
किशोर गुग्गुलु	॥)	,,
कुष्ठांतक लेप	१)	,,
कुमकुमादि वटी (खाँसी, ज्वर)	८)	,,
कृमिमुद्गर रस (उदरकृमि, मलकृमि नाशक)	६)	,,
कुमुल्वर रस (ज्वर, खाँस, श्वास, दमा)	५)	,,
गलित कुष्ठांतक रस	६)	,,
गण्डमालाकण्डन रस (गलगण्ड, कण्ठमाल)	०॥)	,,
गंधक वटी (स्वादिष्ट पाचक)	॥)	,,
गोमेद मणि भस्म (क्षय, पाण्डु, रक्त)	४॥=)	तीन माशा
गोदन्ती हरताल भस्म (कास, कफ, ज्वर)	॥)	प्रति तो०
ग्रहणीकपाट रस न० १ (ग्रहणी, अतीसार)	।)	,,
ग्रहणीकपाट रस न० २ (,, ,,)	२)	,,
ग्रहणी रिपु (सर्व ग्रहणी नाशक)	२॥)	पैकिट
चन्द्रप्रभाञ्जन (नेत्र धुंध, जाला)	१॥)	प्र० तोला
चन्द्रप्रभा गुटिका न० १ (सर्वप्रमेह व शक्तिवर्धक)	१॥)	,,
चन्द्रप्रभा गुटिका न० २ (,,)	१)	,,
चिंतामणि रस (सर्व ज्वरनाशक)	२॥)	,

च्यवनप्राश अवलेह (अष्ट वर्ग युक्त)	२॥) पै० २० तोला
जहरमोहरा भस्म	५) प्रति तोला
जहरमोहरा पिष्टी (तृषा, वमनघ्न)	६) प्र० तोला
जयमंगल रस (जीर्ण विषमज्वर)	४।) ,, तीन माशा
जातिफलादिगुटिका (रक्तशूल, अतीसार)	३) ,, तोला
ज्वरमुरारि रस (सब ज्वरनाशक)	१०) ,, ,,
ज्वरकेशरी वटी (ज्वरनाशक, रेचक)	१॥) ,, ,,
तालसिंदूर (रक्तशोधक, कृमिघ्न)	८) ,, ,,
ताम्रसिंदूर (श्वास, मूर्च्छा, सन्निपातमें उपयोगी)	९) ,, ,,
तृणकांतमणि भस्म (शिरःशूल, रक्तागम)	१२) ,, ,,
तृणकांतमणि पिष्टी (,, ,,)	१३) ,, ,,
ताम्रपर्पटी रस (श्वास, हिक्का)	९) ,, ,,
ताम्र भस्म (ताम्रेश्वर रस) श्वास, शूल, त्रिदोष	४) ,, ,,
त्रिभुवनकीर्ति रस (ज्वर, सन्निपातम)	१) ,, ,,
त्रिवंग भस्म (प्रमेह, प्रदर, कास, श्वास)	७) ,, ,,
दुग्धवटी (शोथ, मन्दाग्नि)	॥।) ,, ,,
नयनामृत अञ्जन	१॥) ,, ,,
नक्सीरांतक पौडर (नक्सीर की दवा)	॥।) ,, ,,
नवायस लोह (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पता)	२) ,, ,,
नागेश्वर (नागभस्म) वीर्यविकार, प्रदर,	३) ,, ,,
नाराच रस (रेचक, गुल्म, प्लीहा, उदररोग)	१) ,, ,,

नीलम भस्म (हृदय, मस्तिष्कविकार)	८।) प्रति तीन माशा
पंचामृतपर्पटी रस	४) प्रति तोला
पन्ना भस्म (सन्निपात)	७॥) ,, ,,
पारद भस्म (पौष्टिक, बलवर्धक)	१०) प्र० तोला
पुष्पराग भस्म (हृदय, मस्तिष्कदौर्बल्यनाशक)	२।) ,, ,,
पुनर्नवामण्डूर (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पतानाशक)	२) ,, ,,
प्रतापलङ्केश्वर रस (प्रसूतरोग, सन्निपात)	२) ,, ,,
प्रमृतवल्लभ रस (प्रसूतरोग, घोर सन्निपात)	५) ,, ,,
पूर्णचन्द्रोदय रस (बलदाय आयुवर्धक)	११।) ,, तीन माशा
प्रवाल भस्म नं० १ (कज्जलीयोग) कास श्वास	४) ,, तोला
प्रवाल भस्म नं० २ (दुग्धयोग) कास श्वास	३) ,, ,,
प्रवाल भस्म नं० ३ (वनस्पतियोग) ,, ,,	२) ,, ,,
प्रवाल पिष्टी (दाहनिम्नता)	३) ,, ,,
प्रवालपंचामृत रस (आनाह, प्लीहा, कास, प्रमेह)	१३) ,, ,,
वराटिका भस्म (दीपन, पाचन, व्रणस्राव,)	॥) ,, ,,
वंगेश्वर (वंगभस्म) प्रमेहनाशक, पौष्टिक	३) ,, ,,
विजयादि वटी (उदररोगोंपर तथा पौष्टिक)	॥) ,, ,,
वातविध्वंस रस (समस्त वात रोगोंपर लाभदायक	३॥) ,, ,,
वातगजकेशरी (सर्ववात पक्षघ्नी)	२॥) ,, ,,
वज्रक्षार चूर्ण (गुल्मशूल, शोथनाशक)	॥) ,, ,,
वासादि अवलेह (रक्तपित्त, कास, स्वरभंग)	२॥) प्रति पैकिट

ब्राह्मी तैल (लेबल) नं० १ [illegible]
ब्राह्मी तैल नं० २ [illegible]
मल्लसिंदूर (छो०, बड़ा, [illegible]) [illegible]
मल्ल भस्म ([illegible]) [illegible]
महाज्वरांकुश रस ([illegible]) [illegible]
महामृत्युंजय रस ([illegible]) [illegible]
मण्डूर भस्म ([illegible]) [illegible]
महालाक्षादि तैल [illegible] [illegible]
महालाक्षादि तैल [illegible] [illegible]
महाचन्दनादि तैल [illegible] [illegible]
महाचन्दनादि तैल [illegible] [illegible]
महाविषगर्भ तैल [illegible] [illegible]
महाविषगर्भ तैल [illegible]
महामाषादि तैल [illegible] [illegible]
माणिक्य भस्म [illegible] [illegible]
मदनानन्द [illegible] [illegible]
[illegible] रस ([illegible]) [illegible]
मधु[illegible] ([illegible]) [illegible]
मुक्ता भस्म ([illegible]) [illegible]
मुक्तादि ([illegible]) [illegible]
मुक्तापञ्चामृत ([illegible]) [illegible]
मुक्तापिष्टी ([illegible]) [illegible]

मृतसञ्जीवनी रस (घोर सन्निपात)	२॥) प्रति तोला
यवक्षार	॥।) " "
यशदभस्म (जीर्णज्वर, नेत्र, प्रमेह)	-) प्रति तोला
योगराज गुग्गल (घोर वात व्याधि)	१) " "
रससिंदूर नं० १ (प्रमेह धातुक्षीणता)	१०) " "
रससिंदूर नं० २ (" ")	८) " "
रसमाणिक्य नं० १ (श्वास, ज्वर, कास)	२०) " "
रसमाणिक्य नं० २	) " "
रसपर्पटी (संग्रहणी, आमवात)	४) " "
रससागर (सन्निपात, ज्वर, कास)	५) " "
रौप्य भस्म (बलवीर्यवर्धक)	१०) " "
रौप्यमाक्षिक भस्म (प्रमेह, शोथ कुष्ठ)	१॥) " "
रामबाण रस (मन्दाग्नि, संग्रहणी)	१) " "
महालक्ष्मीविलास रस (सन्निपातज्वर प्रसिद्ध)	७) " "
लवंगादि वटी (कास ज्वर)	॥।) " "
लोहपर्पटी	५) " "
लोहभस्म नं० १ (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पता)	४) " "
लोहभस्म नं० २ (" , ,)	२) " "
वसन्तकुसुमाकर रस (निर्बलता, प्रमेह)	७॥) प्र० तीन मा
वसन्तमालती (स्वर्णयुक्त) जीर्णज्वर, क्षय	।) " "
वसंतमालती लघु (जीर्णज्वर)	४) प्रति तो

वीरभद्र रस (सन्निपात, ज्वर, कास, कफ)	२॥)	प्रति तोला
विषमज्वरान्तक लोह (जीर्णज्वर, रक्ताल्पता)	४)	,, ,,
व्योषादिवटी (प्रतिश्याय, स्वरभंग, कास)	॥)	प्रति तोला
भीमसेनी कपूर नं० १	५)	,, ,,
शंखभस्म (उदर रोग)	१)	,, ,,
शंखवटी (सब अजीर्ण, विसूची, शूल)	॥।)	,, ,,
शुभ्रा भस्म	।)	,, ,,
शम्बूक भस्म (दीपन, पाचन, ग्राही, तापघ्न)	॥।)	,, ,,
शिलाजीत सत्व (जलनारनवक, रसायन)	४)	,, ,,
शिलाजीत नं० १ ,,	१)	,, ,,
शिलाजीत नं० २ ,,	॥)	,, ,,
शौक्तिक भस्म	॥।)	,, ,,
शूलगज केशरी (हर प्रकार के उदर शूल में)	२॥)	,, ,,
श्वास कुठार रस (कास, श्वास, कफ, हिक्का)	१)	,, ,,
श्वास चिन्तामणि रस (श्वास, कास, यक्ष्मा)	१०)	,, ,,
शृङ्गराज भस्म (कास, श्वास, कफ, सन्निपात)	॥।)	,, ,,
षड्बिंदु तैल (शिरोरोगों में लाभप्रद)	१।)	२ औंस शीशी
सिद्ध मकरध्वज	९)	प्र० तीन माशा
समीरगज केशरी (कम्प, वात, सन्निपात, लकवा)	३)	प्रति तोला
संजीवनी वटी (सन्निपात, अजीर्ण)	।=)	,, ,,
सागयस भस्म (हृदय रोग)	४)	,, ,,

सगजराहत भस्म	१) प्रति तोला
सगयहृद भस्म (प्रमेह, अश्मरी)	२॥) ,, ,,
सगयहृद पिष्टी (प्रमेह, अश्मरी)	३) ,, ,,
सौभाग्य भस्म	॥) ,, ,,
श्वेत कुष्ठहर लेप	१॥) ,, ,,
स्तम्भन वटी (पौष्टिक तथा बल वीर्यवर्धक)	४) ,, ,,
स्वर्णमाक्षिक भस्म (प्रमेह, कण्ठरोग)	२) ,, ,
स्वर्ण भस्म (शीतल, कांति व बलवर्धक)	८०) ,, तीन माशा
स्वर्ण पर्पटी रस (संग्रहणी, शोथ, ज्वर)	१०) , ,,
स्वर्णराज वंगेश्वर (सब प्रमेह नाशक)	) प्रति तोला
सूत शेखर रस (अम्लपित्त, त्रिशूल नाशक)	१२) ,, ,,
क्षय केशरी रस (यक्ष्मा, ज्वर, कास, कफ)	३॥) ,, तीन माशा

वनस्पतिक तैल

तारपिन तैल	४) पा०	कास्टर आयल	२॥=) पाउ
दालचीनी तैल	१।) औंस	यूकिलिप्टस तैल	१०॥) पाउ
लौंग तैल	२।) औंस	साफ तैल	॥=) औंस
अजवायन तैल	१।) ,,	चंदन तैल	२॥) ,,
इलायची तैल	१।) ,,	पिपरमिंट तैल	५॥) ,,

चिकित्सा-सम्बन्धी उपकरण

शरीर तापमापक (थर्मामीटर) बढ़िया क्वालिटी		४।।।)
शरीर तापमापक (थर्मामीटर) घटिया क्वालिटी		३।।)
दवाई मिलाने की छुरी बढ़िया (स्पेचुला)		१।।)
गर्म पानी की रबड़ की बोतल (होटवाटर बोतल)		५।।)
रकार्ड सिरिंज बढ़िया क्वालिटी २ सी सी		९)
,, ,, ५ सी सी		११)
,, ,, १० सी सी		१४)
नीडिल (सुई) बढ़िया क्वालिटी		।।।)
प्रोब (सलाका) मरहम पट्टी का		।।)
आँख में बूँद डालने की शीशी		१।।।)
कान तथा नाक के भीतर देखने का यन्त्र		४।।)
कान की पिचकारी	कांच की छोटी	१=)
,, ,,	,, बड़ा	२=)
कान की पिचकारी	पीतल की छोटी	८।।)
कान की पिचकारी	,, बड़ा	१०।।)
द्रव औषध मापक ग्लास	छोटा	१-)
,, ,,	बड़ा	-)
आँख में अर्क डालने की पिचकारी		१।।) [illegible]
,, ,, ,,	बढ़िया	३) ,,
कैंची (सीजर्स)	,,	२)
चाकू (स्कालपल)	बढ़िया	५।।)
बिस्टुरी	(फोड़ा फुन्सी चीरने को)	५।।)
बिस्टुरी नं० २	,,	२।।।)

विशेष सूचनायें

१—इनके अतिरिक्त सर्वसाधारण के लाभार्थ रस, भस्म, चूर्ण, गोलियाँ, अर्क, अवलेह, सुगन्धित तैल, मलहम आदि सब प्रकार की दवाइयाँ विक्रयार्थ हमेशा तैयार रहता है।

२—सब प्रकार के आयुर्वेदिक व अंग्रेजी इन्जैक्शन और दवाइयों के मिलने का भी प्रबन्ध है।

३—आँखों की परीक्षा कर उचित मूल्य पर चश्मा के मिलने का भी प्रबन्ध है।

४—बालशोष, सूतरोग, सर्प, बिच्छू तथा पागल स्याल, कुत्ता आदि के भयङ्कर प्राण हर विषों से औषधोपचार एवं मन्त्रतन्त्रोपचार द्वारा आरोग्य लाभ प्राप्त कराने का भी प्रबन्ध है।

५—ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों (महूर्त शोधन, वर्षफल, जन्मपत्री फल आदि) की भी व्यवस्था है।

६—प्रतिष्ठा सम्बन्धी समस्त कार्यों के कराने तथा धातु पर खुदे हुए सुन्दर यन्त्रों के मिलने का भी प्रबन्ध है।

७—जो रोगीजन यहाँ आने में असमर्थ हैं उनकी चिकित्सा डाक द्वारा करने का प्रबन्ध है।

—संचालक

मुद्रक–देवताप्रसाद गहमरी संसार प्रेस काशीपुरा बनारस।

-जैन-
व्रत-विधान संग्रह

पण्डित वारेलाल जैन राजवैद्य

"जैन व्रत विधान संग्रह"

पर

अभिमत

आपने यह संग्रह महान् परिश्रम से किया। एक ही पुस्तक से व्रत-विधान सरलता से मिल सकता है आपका परिश्रम प्रशंसनीय है।

पौष वदि नवमी
संवत् २००८

आ० शु० चि०
गणेश वर्णी